150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

यज्ञ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अंक-13 वर्ष-2020

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

झलकियाँ

2019-20

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
Indian Institute of Foreign Trade
Welcomes You

DAY
YOGA

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
हिंदी सप्ताह
पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह
25 सितम्बर 2019

विषय-सूची

अंक–13			वर्ष–2020
क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	निदेशक की कलम से		3
2	संदेश – निदेशक (रा.भा.) वाणिज्य मंत्रालय		4
3	संदेश – कुलसचिव		5
4	संदेश – प्रमुख, कोलकाता केंद्र		6
5	संपादकीय		7
6	संस्थान की गतिविधियाँ		9
7	आईआईएफटी का कोलकाता केंद्र		24
8	संस्थान की उपलब्धियाँ		30
9	आईआईएफटी संकाय की महत्वपूर्ण भागीदारी/उपलब्धियाँ		38
10	राष्ट्रीय कार्यक्रम		41
11	पूर्व छात्र (अल्युमनाई) गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ		47
12	छात्र गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ		53
13	संस्थान में राजभाषा हिंदी		60
14	''सतत् विपणन'' की आवश्यकता	डॉ. प्रतीक माहेश्वरी	63
15	लॉजिस्टिक्स 4.0 – स्वायत्त निर्णयों और अनुप्रयोगों का महत्वपूर्ण स्वरूप	यामिनी नायर चांदवानी	65
16	नौकरी पेशे में हुनर	डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा	67
17	भासो और बालो	संजीव कुमार	69
18	रोज नयी सी तुम लगती हो	अतुल कुमार	72
19	उत्तम स्वास्थ्य के अचूक नुस्खे	मोनिका सैनी	73
20	मेरी बैंकॉक यात्रा	आर.एस. पटवाल	74
21	ऐ जिन्दगी	मोनिका वर्मा	78
22	संस्थान में हिंदी सप्ताह		79
23	राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केंद्र एनआईसी – राजभाषा विभाग हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग		83
24	सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई		87
25	सरल हिंदी वाक्य एवं टिप्पणियां		88
26	भारतीय विदेश व्यापार संस्थान – विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्य		93

संपादकीय मंडल

संरक्षक
प्रो. मनोज पंत, निदेशक

संपादकीय मंडल
डॉ. नितिन सेठ
डॉ. प्रतीक माहेश्वरी
डॉ. आशीष गुप्ता
श्री राजेन्द्र प्रसाद

अनुवाद, टाइपिंग एवं प्रूफ शोधन
श्री आर.एस. पटवाल

सहयोग
समस्त आई.आई.एफ.टी. परिवार

प्रकाशक
हिंदी कक्ष
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली–110 016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। हिंदी कक्ष का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।"

– सुमित्रानंदन पंत

निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

ज्ञातव्य है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की दिशा में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष हिंदी गृह–पत्रिका "यज्ञ" का प्रकाशन किया जाता है। मुझे पत्रिका का 13वां वार्षिक अंक आपको समर्पित करते हुए अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह मेरा सौभाग्य है कि गत दो वर्षों से मुझे लगातार "यज्ञ" के अंकों का विमोचन करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

यह "यज्ञ" का 13वां वार्षिक अंक है। पत्रिका में संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा वर्ष के दौरान सम्पन्न किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं सफलतापूर्वक आयोजित की गई गतिविधियों का सचित्र ब्योरा दिया गया है। इसके साथ ही संस्थान की साहित्यिक प्रतिभाओं को आगे आने का एक मंच भी उपलब्ध करवाया गया है जिसके माध्यम से वे अपनी प्रतिभा को कविता, कहानी और संस्मरण आदि द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसके प्रकाशन द्वारा सरकार के एक अन्य आदेश, विभागीय तौर पर हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करना, का भी अनुपालन किया जा रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से, मैं आप सभी से यह भी साझा करना चाहूंगा कि संस्थान शासकीय कार्यों के साथ–साथ पठन–पाठन के माध्यम से भी हिंदी का प्रचार–प्रसार कर रहा है। आईआईएफटी एक ऐसा शैक्षिक संस्थान है जो वाणिज्य विभाग, भारत सरकार के लिए अंतरराष्ट्रीय बिजनेस से संबंधित अनुसंधान अध्ययन तथा नीति निर्धारण में सहयोग प्रदान करता है। संस्थान आयात–निर्यात के क्षेत्र में डिग्री, डिप्लोमा व प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम विभिन्न माड्यूल्स में संचालित करता है। इस क्षेत्र के विस्तार की श्रृंखला में संस्थान ने व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स केंद्र (सीटीएफएल) तथा मूल्यांकन एवं विकास केंद्र (एडीसी) की स्थापना की है। अतः जब हम अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बात करते हैं तो हमारे लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग एक बाध्यता हो जाती है। लेकिन संस्थान संवैधानिक नियमों का अनुपालन करते हुए अपने पठन–पाठन में सहभागियों की मांग पर हिंदी–अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा का उपयोग करता है।

"यज्ञ" पत्रिका के सतत् सफल प्रकाशन में सहयोग देने के लिए, मैं प्रतिभा संपन्न संस्थान के सदस्यों एवं छात्रों का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। विभिन्न रचनाओं एवं संस्थान की गतिविधियों को प्रकाशन के अंतिम चरण पर ला कर पत्रिका को सुन्दर स्वरूप प्रदान करने के लिए हिंदी कक्ष तथा संपादक मंडल विशेष बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि आगामी समय में इससे बेहतर एवं सफल सतत् प्रयास किए जाएंगे।

मैं सभी को "यज्ञ" के विमोचन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और इसकी सतत् श्रेष्ठता की कामना करता हूँ।

मनोज पंत

(प्रो. मनोज पंत)

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और संतोष की बात है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान द्वारा ''यज्ञ'' हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। एक दशक से भी अधिक समय से संस्थान द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना प्रशंसनीय और उत्साहजनक कार्य है।

किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका संस्थान में मौजूद प्रतिभाओं की सृजनात्मक और रचनात्मक दक्षता और क्षमता का प्रतिफल होने के साथ–साथ संस्थान की गतिविधियों का दर्पण भी होती है। इस दृष्टि से ''यज्ञ'' पत्रिका का यह अंक सुंदर, सुरुचिपूर्ण और सूचनात्मक सामग्री से युक्त होने के साथ–साथ कलेवर, सामग्री संयोजन और प्रस्तुति की दृष्टि से भी संग्रहणीय है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारा संवैधानिक और नैतिक दायित्व है। राजभाषा कार्यान्वयन को गति देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन और हिंदी पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति को गति प्रदान करने का सशक्त और सार्थक जरिया है।

मेरा विश्वास है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान द्वारा ''यज्ञ'' पत्रिका का प्रकाशन हमारे अन्य कार्यालयों के लिए इस दिशा में आगे बढ़ने तथा बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरक का कार्य करेगा। मैं पत्रिका के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा इसके प्रकाशन से संबंधित सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूँ।

(सुबोध कुमार)
निदेशक (रा.भा.)
वाणिज्य मंत्रालय

संदेश

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अपने शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य से इतर, केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। इन प्रयासों में प्रत्येक तिमाही में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति का आयोजन, प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए आयोजित बैठकों में भाग लेना आदि शामिल है। इसी क्रम में संस्थान की वेबसाइट पर समय–समय पर जारी कागजातों/सूचनाओं को द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराने का यथासंभव प्रयास किया जाता है। आईआईएफटी, राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन के संबंध में, हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रयासों की श्रृंखला में बीते एक दशक से भी अधिक समय से "यज्ञ" नामक हिंदी गृह–पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका का 13वां अंक है। पत्रिका प्रति वर्ष संस्थान के ''स्थापना दिवस'' अर्थात 2 मई को जारी की जाती है।

"यज्ञ" संस्थान की हिंदी लेखन प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करता है। इच्छुक लेखकों में आईआईएफटी परिवार के सदस्यों अर्थात अधिकारियों/कर्मचारियों या संकाय सदस्यों/छात्रों में से कोई भी हो सकता है। फिर चाहे वह अपनी भावनाओं को विभिन्न विधाओं जैसे – कविता, कहानी, स्वयं के साथ घटी किसी घटना, यात्रा वृतांत अथवा अन्य विधाओं में प्रस्तुत करे। यह स्वयं लेखक पर निर्भर करता है। पत्रिका के इस मंच पर संस्थान के सभी सदस्यों का स्वागत किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, "यज्ञ" में संस्थान की गत वर्ष की महत्वपूर्ण गतिविधियों को सुरूचिपूर्ण ढंग से सचित्र स्थान दिया जाता है। इन गतिविधियों में संस्थान की उपलब्धियाँ, विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रम, विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित कार्यक्रम, छात्र गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ, हिंदी अनुभाग द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नए आदेशों/सूचनाओं को इसमें शामिल किया जाता है। राजभाषा हिंदी संबंधी गतिविधियों का संपूर्ण ब्योरा भी प्रस्तुत किया गया है। यह हमें राजभाषा के क्षेत्र में और प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगा।

"यज्ञ" पत्रिका में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों/कर्मचारियों तथा छात्रों ने भी अपनी अमूल्य कृतियों का योगदान कर प्रकाशन हेतु भिजवाईं। यह उनका हिंदी के प्रति लगाव, रूचि तथा निष्ठा को दर्शाता है। साथ ही उनका अपने परिवेश से जुड़कर उसके संबंध में लेखन कार्य करना, उसके प्रति प्रेम, अपनत्व एवं लेखन प्रतिभा को उजागर करता है। मैं पत्रिका के लिए परिश्रमपूर्वक अपनी भावनाओं एवं विचारों को हम सब तक पहुंचाने के लिए, सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूँ एवं हृदय से उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

"यज्ञ" के सफल प्रकाशन, सुरूचिपूर्ण पठन सामग्री, सुंदर साज–सज्जा के लिए हिंदी कक्ष और पत्रिका की सामग्री के अंतिम चयन एवं मुद्रण में सहयोग हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी "यज्ञ" के अंकों के इसी प्रकार निरंतर प्रकाशन में सभी संबंधितों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन्यवाद।

प्रमोद गुप्ता

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

संदेश

संस्थान की गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के प्रकाशन की श्रृंखला में 13वें अंक का प्रकाशन एक सुखद अहसास है, जो अंक दर अंक एक अद्वितीय साज–सज्जा, समसामयिक विषयों व अद्यतन सूचनाओं को समेटे हुए है। यह पत्रिका, वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा आयोजित गतिविधियों को हिंदी भाषा के माध्यम से संस्थान के अंतिम सदस्य तक पहुंचाने का एक सशक्त मंच है, जिसका उपयोग हमारे छात्रों सहित संस्थान का प्रत्येक प्रतिभाशाली सदस्य खुले मन से करता है। इस प्रकार ''यज्ञ'' पत्रिका हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ संस्थान में एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति करती है।

राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार हमारा राष्ट्र धर्म भी है तथा देश के सर्वाधिक लोगों के संप्रेषण का साधन होने के कारण हमारे लोक व्यवहार को भी परिष्कृत करता है। हिंदी बहुत बड़े जनसमुदाय की भाषा होने के कारण, आज तकनीकी युग में कंप्यूटर के साथ तारतम्य स्थापित करते हुए अनेक क्षेत्रों में इसका चलन प्रवाहमान है। यही कारण है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों व सिनेमा जगत के लिए भी हिंदी की उपयोगिता बाध्यकारी है। बीते कुछ समय से शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम के रूप में भी हिंदी ने अपना स्थान बनाया है, यह भाषा की सहजता एवं सरलता के कारण ही संभव हो पाता है। कोई भाषा कभी नहीं मरती, मरती है तो व्यक्ति की उस भाषा को सीखने और काम में लाने की क्षमता।

गत वर्ष के दौरान, कोलकाता केंद्र में कार्यरत सभी सदस्यों ने वार्षिक कार्यक्रम में दर्शाए गए सभी बिंदुओं के कार्यान्वयन के प्रति सजगता का परिचय दिया है, जैसे शासकीय कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग, हिंदी सप्ताह का आयोजन, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, स्थानीय नराकास की प्रत्येक छमाही बैठक में सहभागिता, तिमाही हिंदी बैठकों में भाग लेना तथा द्विभाषी पत्राचार व टिप्पण के लिए निर्धारित लक्ष्यों को शतप्रतिशत पूरा करना आदि। इसके अतिरिक्त, केंद्र के छात्र–छात्राओं व सदस्यों की ओर से ''यज्ञ'' में लेख–आलेख के रूप में अपनी आहुति प्रदान की जाती है। इस प्रकार, कोलकाता केंद्र के सभी सदस्यों का राजभाषा हिंदी का कार्य प्रशंसनीय है तथा साधुवाद के पात्र हैं।

"यज्ञ" पत्रिका के अभी तक प्रकाशित अंक विभिन्न विषयों पर लेखों, कविताओं, कहानियों आदि सहित विविध विधाओं पर आकर्षक एवं सारगर्भित सामग्री के साथ प्रकाशित किए गए हैं। यह संस्थान के सदस्यों एवं छात्र–छात्राओं के महत्वपूर्ण योगदान और हिंदी कक्ष के भरसक प्रयासों व कठिन मेहनत का सुफल है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे सार्थक प्रयास होते रहेंगे जिसके फलस्वरूप संस्थान सफलता के नए शिखर पर विराजमान होगा। "यज्ञ" पत्रिका के लिए ढेर सारी बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

(डॉ. के. रंगराजन)
प्रमुख, कोलकाता परिसर

संपादकीय

दासवृत्ति को सभ्यता की पहचान मत बनाइए

सरकारी कामकाज की भाषा बदलने में दो तत्व कार्य करते हैं – दृढ़ इच्छाशक्ति और जनप्रतिनिधियों की मनोवृत्ति। दृढ़ इच्छाशक्ति का उदाहरण है तुर्की के शासक कमालपाशा की इच्छाशक्ति और जनप्रतिनिधियों के दबाव का उदाहरण है– इंग्लैण्ड में फ्रेंच को हटाकर अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाना। शासन संभालने के साथ ही कमालपाशा ने अपने अधिकारियों से पूछा–सरकारी कामकाज की भाषा तुर्की को बनाने में कितना समय लगेगा? ''कम से कम दस वर्ष''–उपस्थित अधिकारियों का मत था। ''समझ लो कल प्रातः दस वर्ष समाप्त हो गए'' कमालपाशा का दृढ़ स्वर गूँज उठा और 24 घण्टों के भीतर अंग्रेजी के स्थान पर तुर्की राजभाषा बन गई। भारत में ऐसा न हो सका। इस संदर्भ में इंग्लैण्ड में अंग्रेजी का उदाहरण विशेष रोचक एवं शिक्षाप्रद है, साथ ही आवश्यक भी, क्योंकि वह अंग्रेजी के पक्षधर वर्ग की आँखें खोल सकेगा।

ईसवी सन् के पहले से ईसा की प्रथम शती तक, इंग्लैण्ड के दक्षिणी भाग पर रोमन लोगों का अधिकार था और अभिजात्य एवं शिक्षित वर्ग की भाषा लैटिन हो गई थी। यह भी ध्यातव्य है कि अंग्रेजों की अपेक्षा रोमन उन दिनों कहीं अधिक सभ्य थे। इंग्लैण्डवासी कबीलों के रूप में रोमन लोगों से लड़ते रहते थे। प्रसिद्ध लैटिन लेखक टेसिटस ने एग्रिकोला नामक रोमन सेनापति पर एक पुस्तक लिखी है जिसमें बताया गया है कि उसने ईसा की प्रथम शती में किस प्रकार इंग्लैण्डवासी अंग्रेजों को वश में किया था और रोमनों की भाषा लैटिन ने उस कार्य में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। उससे स्पष्ट हो जाता है कि चतुर विजेता किस प्रकार पराधीन जाति को गुड़ में विष मिलाकर, उनमें अपनी भाषा और संस्कृति का प्रचार करके उन्हें अपना अनुवर्ती बना लेते हैं।

एग्रिकोला ने ब्रिटेन के लोगों को अपनी सभ्यता, परिधान, भोजनों का तरीका और भाषा सिखाकर मानसिक दासता उत्पन्न कर दी। अंग्रेजों ने अवसर मिलने पर ठीक यही पद्धति भारत में अपनाई, उनके चले जाने के बाद भी हम उनके मानसिक दास बने हुए हैं। अंग्रेजों की इस नीति का परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार सारे यूरोप के शिक्षित वर्ग की भाषा लैटिन हो गई थी, उसी प्रकार ब्रिटेन के उपनिवेशों में शिक्षित वर्ग की भाषा अंग्रेजी हो गई। रोमन साम्राज्य समाप्त होने के बाद भी कई सदियों तक लैटिन सम्पूर्ण यूरोप के ज्ञान का माध्यम बनी रही थी। सभी देशों के विद्वान अपनी पुस्तकें लैटिन में लिखते थे। सर आइज़क न्यूटन सदृश महान अंग्रेज विद्वान गणितज्ञ, विचारक और वैज्ञानिक ने अपनी पुस्तकें लैटिन में लिखी थीं। न्यूटन की मृत्यु सन् 1727 में हुई थी। उस समय तक, यूरोप में विद्या के क्षेत्र में लैटिन का बोलबाला था।

सन् 1088 में इंग्लैण्ड को फ्रांस के नार्मन लोगों ने जीत लिया। धीरे–धीरे सारा राजकाज फ्रेंच भाषा में होने लगा। नार्मनकाल में फ्रांस में भी कुछ समय तक लैटिन का प्रभाव रहा था। 13वीं शती के अंत तक फ्रांस में फ्रेंच में सब कामकाज होने लगा।

इंग्लैण्ड की जनता फ्रेंच नहीं जानती थी। उसकी लगातार मांग पर सन् 1362 में एक अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार वकीलों का आवेदन, जिरह आदि अंग्रेजी में करने की छूट थी। चूँकि वकीलों का विधि का शिक्षण फ्रेंच में हुआ था, इसलिए अधिनियम के बावजूद कई शताब्दियों तक न्यायालयों में फ्रेंच ही चलती रही। पाठक समझ रहे होंगे कि ठीक यदि यही स्थिति भारत में है, तो इसमें अस्वाभाविक एवं अनुचित कुछ भी नहीं है।

इंग्लैण्ड में इस बीच अंग्रेजी को न्यायालय की भाषा बनाने के लिए जनता की माँग इतनी उग्र हो गई कि सरकार ने सन् 1731 में न्यायालयों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग अनिवार्य कर दिया। साथ ही लैटिन और फ्रेंच भाषाओं का उपयोग वर्जित कर दिया। इस आदेश का उल्लंघन करने वालों पर 50 पौंड जुर्माना का भी प्रावधान कर दिया गया। तब कहीं जाकर तीन–चार सौ वर्षों बाद अंग्रेजी को उसका नैसर्गिक स्थान प्राप्त हुआ।

सन् 1731 तक अंग्रेजी भाषा का विकास नहीं हुआ था और अंग्रेजी में विधि की पुस्तकें उपलब्ध नहीं थीं, परंतु कानून की विवशता ने समस्त विवशताओं को दरकिनार कर दिया था। अंग्रेजी का पहला मान्य कोश डॉ. सैमुअल जॉनसन ने सन् 1755 में लिखा था। उन दिनों अंग्रेजी एक विपन्न एवं अविकसित भाषा थी। भगवान की कृपा से हिंदी की ऐसी दुर्दशा नहीं है। वह एक समर्थ एवं विकसित भाषा है।

इसी संदर्भ में रोजर नॉर्थ नाम के एक विधिवेत्ता ने कहा था कि इंग्लैण्ड के कानून अंग्रेजी में ठीक तरह से व्यक्त नहीं किए जा सकते और लैटिन तथा फ्रेंच के विधि साहित्य को पढ़े बिना कोई पैरोकार भले ही बन जाए, किन्तु वकील नहीं बन सकता। ठीक ऐसी ही बातें हमारे यहाँ भी कही जाती रही हैं, परन्तु इंग्लैण्ड के निवासी अपनी अस्मिता के प्रति हमारी तरह बेखबर नहीं थे। अंग्रेजी भाषा की इन समस्त कमियों और अंग्रेजी में विधि साहित्य के अभाव के बावजूद अंग्रेज जनता के देश–प्रेम एवं अपनी भाषा के प्रति निष्ठा ने समस्त कठिनाइयों को नकार दिया और न्यायालयों में अंग्रेजी भाषा चल निकली। शीघ्र ही विधि संबंधी पुस्तकें भी प्रस्तुत हो गईं और आज अंग्रेजी भाषा की सर्वतोन्मुखी सम्पन्नता सर्वविदित है।

अंग्रेजी भाषा की स्थापना का उक्त विवरण हमारे लिए सर्वथा शिक्षाप्रद होना चाहिए। हमारे सरकारी कर्मचारी एवं वकील यदि अंग्रेजी से चिपके हुए हैं, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारी जनता में अपेक्षित देश–प्रेम एवं भाषा–प्रेम का अभाव है और वह अपनी भाषा को उसका जन्मसिद्ध अधिकार दिलाने के प्रति जागरूक नहीं है।

हमें समझ लेना चाहिए कि बद्धमूल परम्पराओं को समाप्त करने में पर्याप्त समय लगता है। इसके लिए दृढ़ संकल्प एवं अनवरत् प्रयत्न अपेक्षित रहते हैं और अपेक्षित होती है मानसिक दासता से मुक्ति की भावना। हमारी युवा पीढ़ी का कर्तव्य है कि वह तथाकथित सभ्यता के आवरण को हटाकर वास्तविकता को जानने का प्रयत्न करे और अस्मिता की पहचान करने के लिए मानसिक दासता की ओर से विमुख हो जाए। जो स्वतंत्र रहना चाहते हैं उन्हें कोई भी शक्ति गुलाम नहीं बना सकती है।

संस्थान में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों के अनुपालनार्थ तथा सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के उद्देश्य से अपनी भाषा के प्रति 'हीनताबोध' और भाषाई दासता से मुक्ति के अभियान के अंतर्गत हर वर्ष हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' का निर्बाध रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की संवाहक हिंदी के इस ''यज्ञ'' में छात्रों सहित आईआईएफटी परिवार द्वारा दी गई एक–एक आहुति भाषाई दासवृत्ति से छुटकारा दिलाने में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

मैं हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' अंक–13 के सफल प्रकाशन में सहभागिता व योगदान के लिए आप सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

(राजेन्द्र प्रसाद)
हिंदी अधिकारी

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान के बारे में

भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से 2 मई 1963 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) की स्थापना की गई थी। संस्थान ने अपनी 57 वर्षों की यात्रा के दौरान शैक्षणिक गतिविधियों के आयाम को व्यापक रूप से विस्तृत किया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार का पूरा क्षेत्र शामिल है। आज, संस्थान अपने ज्ञान और संसाधन आधारित समृद्ध विरासत के साथ देश एवं विदेशों में अपने मजबूत पूर्व छात्र नेटवर्क के लिए जाना जाता है।

अपनी चहुँमुखी उपलब्धियों की पहचान के लिए, संस्थान को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा मई 2002 में 'मानित विश्वविद्यालय' का दर्जा दिया गया और इसे डिग्री देने व अपने स्वयं के डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए प्राधिकृत किया गया।

- राष्ट्रीय आकलन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) ने अपनी स्थायी समिति की 5वीं बैठक (3 मार्च 2015) में आईआईएफटी को 3.53 के समग्र सीजीपीए स्कोर के साथ उच्चतम ग्रेड 'ए' से प्रत्यायित किया है।
- एएसीएसबी अंतरराष्ट्रीयः आईआईएफटी वर्ष 2014 से एएसीएसबी का सदस्य है तथा प्रत्यायन प्राप्ति की प्रक्रिया के उच्च स्तर पर है। इस संबंध में एएसीएसबी द्वारा आईआईएफटी के आईएसईआर को स्वीकार कर लिया गया है।

वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के साथ संस्थान का निकट और स्थायी संबंध है तथा यह भारत व विदेशों दोनों स्तर पर प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक घरानों और शैक्षिक संस्थानों के साथ संबंध स्थापित कर रहा है। इन संबंधों ने संस्थान को प्रशिक्षण तथा अनुसंधान से संबंधित अपनी गतिविधियों का विस्तार और समग्र रूप से अंतरराष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने में मदद की है।

प्रबंधन बोर्ड, संस्थान का प्रमुख कार्यकारी निकाय है। प्रबंधन बोर्ड में 11 सदस्य हैं और इसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक करते हैं। सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, संस्थान के अध्यक्ष हैं। संस्थान के निदेशक संस्थान के प्रमुख कार्यकारी हैं और संस्थान के मामलों पर पर्यवेक्षण तथा नियंत्रण करते हैं।

परिकल्पना

अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम शैक्षिक केंद्र के रूप में स्थापित होना।

ध्येय

ज्ञानार्जन हेतु एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना और उसे पोषित करना जिससे कि शिक्षार्थी समाज के प्रति संवेदनशीलता के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में पथ प्रदर्शक बनने में सक्षम हो सकें।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शिक्षा, अनुसंधान एवं सहयोग को संवर्धित करने और उसमें वृद्धि के लिए आईआईएफटी में निम्नलिखित विभाग एवं केंद्र हैं:–

संस्थान के विभिन्न विभाग व केंद्र

प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी) विभाग

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग संस्थान के प्रमुख विभागों में से एक है जो उद्योग एवं सरकारी क्षेत्र के कार्यालयों तथा निर्यात संवर्धन निकायों के लिए विभिन्न दीर्घ एवं लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। संस्थान का यह विभाग सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र और कॉर्पोरेट से लेकर देश तथा विदेश के सभी स्तरों पर प्रबंधकों एवं अधिकारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक ज्ञान संसाधन विभाग के रूप में उभरा है। डॉ. राम सिंह, विभागाध्यक्ष के मार्गदर्शन में विभाग की सभी गतिविधियों का संचालन किया जाता है। मुख्य तौर पर, एमडीपी विभाग निम्नलिखित श्रेणियों में कार्यक्रम आयोजित करता है जैसेः–

1. खुले कार्यक्रमः खुले कार्यक्रमों के अंतर्गत एमडीपी विभाग द्वारा विभिन्न शीर्षों के तहत प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें उद्योग जगत एवं सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ में विभाग

द्वारा खुले कार्यक्रमों का कैलेंडर जारी किया जाता है जिसमें भाग लेने हेतु विभिन्न सगठनों के प्रतिनिधि अपना नामांकन भेजते हैं।

2. प्रायोजित कार्यक्रमः संस्थान के एमडीपी विभाग द्वारा विभिन्न संगठनों की पहल पर उनके अधिकारियों हेतु विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जो उनके कार्यक्षेत्र में सहायक सिद्ध होते हैं।

   क) कॉर्पोरेट/सार्वजनिक उपक्रमों के लिए

   ख) आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, आईआरएस, आईटीएस, आईईएस आदि सरकारी अधिकारियों के लिए

   ग) निजी कंपनियों के लिए

3. सहयोगात्मक कार्यक्रमः ऐसे कार्यक्रम संस्थान द्वारा किसी अन्य संगठन के साथ साझेदारी में किए जाते हैं।

2 हाइब्रिड प्रोग्राम

इस प्रकार विभाग द्वारा उद्योग के कार्यपालकों, सरकार में अधिकारियों और नीति निर्माताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों यथा अंतरराष्ट्रीय विपणन एवं व्यापार संचालन, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन, डॉलर/रूपया मूल्यांकन, अंतरराष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं वार्ता, डब्ल्यूटीओ तथा भारत और विदेश में व्यापार नीतियों के कार्यक्रमों का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम प्रदान किया जाता है। इन कार्यक्रमों को बदलते वैश्विक कारोबारी माहौल और अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए बनाया जाता है, जो प्रतिभागियों के कौशल तथा दक्षता को विकसित करने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, एमडीपी विभाग विभिन्न संगठनों के लिए नेतृत्व, संचार कौशल, ग्राहक संबंध प्रबंधन आदि जैसे विनम्र कौशल के क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

यह विभाग अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सरकार की अन्य सेवाओं यथा भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय वन सेवाएं, भारतीय विदेश सेवाएं, भारतीय पुलिस सेवाएं, भारतीय राजस्व सेवाएं, भारतीय आर्थिक सेवाएं और भारतीय सांख्यिकी सेवाएं आदि से संबंधित वरिष्ठ और मध्य स्तर के सरकारी अधिकारियों के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है।

भारतीय आर्थिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत व संकाय सदस्य। (6 जनवरी 2020)

एमडीपी विभाग भारतीय व्यापार सेवा प्रोबेशनर्स के लिए बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक नोडल संस्थान है। उनके प्रशिक्षण के सफल समापन के पश्चात, आईटीएस प्रोबेशनर्स को डीजीएफटी के विभिन्न कार्यालयों में सहायक डीजीएफटी के रूप में तैनात किया जाता है जो भारत की विदेश व्यापार नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय व्यापार सेवा एवं अन्य सेवाओं के परिवीक्षार्थियों और आईआईएफटी के संकाय सदस्यों/अधिकारियों को संबोधित करते हुए माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी। (16 सितम्बर 2018)

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार के डीजीएफटी की पहल पर, एमडीपी विभाग ने निर्यात बंधु योजना के तहत देश भर में उभरते निर्यातकों और उद्यमियों के लिए निर्यात–आयात व्यवसाय पर – निर्यात बंधु आपके डेस्कटाप पर ऑनलाइन प्रमाणपत्र कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की है जिसके अंतर्गत अब तक लगभग 1250 निर्यातकों और उद्यमियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। निर्यात बंधु प्रोजेक्ट के अगले चरण में विभाग द्वारा मूक फार्मेट (MOOC – मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स) पर कार्यक्रम किए जा रहे हैं जिसके अंतर्गत कोई भी प्रतिभागी कहीं से भी एवं किसी भी समय इन कार्यक्रमों में भाग ले सकता है। मूक प्लेटफार्म पर अब तक 17,000 से ज्यादा प्रतिभागी पंजीकृत हो चुके हैं।

इसी क्रम में, पुनर्वास महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की पहल पर एमडीपी विभाग पिछले 3 वर्षों से अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के क्षेत्रों में सशस्त्र बलों के कर्मियों के पुनर्वास के उद्देश्य से पेशेवर पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है। उपरोक्त कार्यक्रमों के संबंध में ई–मेल mdp@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय बिजनेस प्रबंधन में छह माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सशस्त्र बल के अधिकारियों व संस्थान के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (अगस्त 2019 से फरवरी 2020)

प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग ने अपने दिल्ली परिसर में सार्क विकास निधि, भूटान के अधिकारियों के लिए ईआरपी, संचार एवं कार्यालय पर तथा वित्तीय एवं सीमापार क्षेत्रीय परियोजना प्रबंधन पर प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया। ये कार्यक्रम क्रमशः 27–31 दिसम्बर 2019 तथा 30 दिसम्बर 2019 से 03 जनवरी 2020 के दौरान आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य, सार्क विकास निधि, भूटान के अधिकारियों को संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करना था, ताकि वे बदलते वैश्विक परिवेश के अनुरूप अपने कार्यों का सफलतापूर्वक निवर्हन कर सकें। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में संस्थान की बढ़ती हुई लोकप्रियता को दर्शाता है।

सार्क विकास निधि, भूटान के अधिकारियों के साथ संस्थान के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (27–31 दिसम्बर 2019)

अनुसंधान विभाग

अनुसंधान तथा प्रशिक्षण के बीच एक मजबूत और व्यापक इंटरफेस पर संस्थागत रूप से विशेष बल दिए जाने के कारण, आईआईएफटी की गतिविधियों के क्रम में अनुसंधान एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संस्थान अब तक 750 से अधिक शोध अध्ययन और सर्वेक्षण कर चुका है। इसके अतिरिक्त, विभाग ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार स्थितियों का विश्लेषण करने और उचित कॉर्पोरेट रणनीतियों के विकास में पर्याप्त परामर्श क्षमता विकसित की है। अनुसंधान गतिविधियों को अपने स्वयं के अनुसंधान कार्यक्रमों के रूप में तथा अपने ग्राहकों के आग्रह पर किया जाता है जिसमें केंद्र एवं राज्य सरकारें, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और विश्व बैंक, एफएओ, अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र, यूएनसीटीएडी, डब्ल्यूटीओ, यूएनआईडीओ, ईएससीएपी, जर्मन डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट आदि जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन शामिल हैं। शोध के वर्तमान पोर्टफोलियो में शामिल हैं: व्यापार नीति अनुसंधान, कार्यात्मक अनुसंधान, अधिमान्य और विदेश व्यापार समझौते, सर्वेक्षण अनुसंधान और डेटाबेस विकास। अनुसंधान कार्यक्रमों के संबंध में ई–मेल research@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

वर्ष 2019–20 के दौरान सम्पन्न अनुसंधान अध्ययन

1. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रायोजित निर्यात संवर्धन परिषदों का सुव्यवस्थीकरण।
2. कृषि मंत्रालय द्वारा प्रायोजित अगरबत्ती के लिए घरेलू आपूर्ति बनाम आयातित कच्चे बांस की छड़ का विश्लेषण।

पीएच.डी. कार्यक्रम

आईआईएफटी में पांच वर्षीय पीएच.डी. कार्यक्रम वर्ष 2004 में प्रारंभ किया गया था जो भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों में उपलब्ध सबसे पसंदीदा रिसर्च डिग्री कार्यक्रमों में से एक है। संस्थान का पीएचडी कार्यक्रम व्यवसाय से संबंधित क्षेत्रों में डॉक्टरेट अनुसंधान को कवर करता है, जिसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित क्षेत्रों में उच्च अध्ययन और उन्नत अनुसंधान के लिए सुविधाएं प्रदान करना, व्यापार के क्षेत्र में समकालीन मुद्दों पर अनुसंधान को प्रोत्साहित तथा सुविधाजनक बनाना है। इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान के तरीकों के साथ–साथ नए वैज्ञानिक ज्ञान को स्वतंत्र रूप से लागू करने की क्षमता शामिल है।

संस्थान जिन व्यापक क्षेत्रों में पीएच.डी. कराता है, वे हैं– सामान्य प्रबंधन और रणनीति, विपणन, वित्त, संचालन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, आईटी नवाचार तथा प्रौद्योगिकी प्रबंधन और अर्थशास्त्र आदि। अब तक, आईआईएफटी अपने 44 सफल रिसर्च स्कॉलर को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान कर चुका है, उनमें से कुछ अकादमिक तथा अनुसंधान संस्थानों, सरकारी विभागों और प्रमुख कॉर्पोरेट समूहों में उच्च पदों पर पदस्त हैं।

पीएच.डी. (प्रबंधन) 2019

पीएच.डी. कार्यक्रम (प्रबंधन) 2019 का शुभारंभ 2 अगस्त 2019 को हुआ। उनतालीस (39) छात्र (28 अंशकालिक और 11 पूर्णकालिक) कार्यक्रम में शामिल हुए हैं। कार्यक्रम निदेशक, डॉ. पूजा लखनपाल की देखरेख में सेमेस्टर–1 पाठ्यक्रमों का शिक्षण कार्य चल रहा है। इस कार्यक्रम से संबंधित जानकारी हेतु ई–मेल research@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

पीएच.डी. (प्रबंधन) 2019 कार्यक्रम के सहभागियों के साथ संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत व संकाय सदस्यगण। (2 अगस्त 2019)

पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) 2019

पीएच.डी. कार्यक्रम (अर्थशास्त्र) 2019–24 का उद्घाटन 22 जुलाई 2019 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 10 छात्रों (दिल्ली में 7 और कोलकाता में 3) ने पीएच. डी. (अर्थशास्त्र) में प्रवेश लिया। कार्यक्रम निदेशक, डॉ. जयदीप मुखर्जी की देखरेख में पाठ्यक्रम शिक्षण कार्य प्रगति पर है। अनुसंधान कार्यक्रमों के संबंध में ई–मेल phdeco@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) 2019 कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत व वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. विजया कट्टी व डॉ. आर.एम. जोशी। (22 जुलाई 2019)

एम.ए. (अर्थशास्त्र)

संस्थान में वर्ष 2018 के दौरान डॉ. बिश्वजीत नाग के नेतृत्व में एक नए विभाग 'एम.ए. (अर्थशास्त्र)' की स्थापना की गई। इस विभाग द्वारा 01 अगस्त 2018 को दिल्ली और कोलकाता दोनों परिसरों में कुल 30 छात्रों के प्रवेश के साथ व्यापार एवं वित्त में विशेषज्ञता के साथ अपना प्रथम एम.ए. (अर्थशास्त्र) कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय लेन–देन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल कॉर्पोरेट क्षेत्र में व्यापार मुद्दों पर उत्कृष्ट व्यापार नीति निर्माता और प्रमुख रणनीतिकार बनाने के लिए छात्रों को तैयार करना; छात्रों को दुनिया की वास्तविक समस्याओं को हल करने में सहायक उपकरणों के एक सेट के साथ छात्रों को लैस करना तथा छात्रों को अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और वित्त में विशेष ज्ञान के साथ पूर्णकालिक शिक्षाविद बनने के लिए तैयार करना है।

इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में पहले दो सेमेस्टर अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के समान होते हैं। इन सेमेस्टर के दौरान सूक्ष्मअर्थशास्त्र, मैक्रोइकॉनॉमिक्स, गणितीय अर्थशास्त्र और अर्थमिति में प्रमुख सैद्धांतिक मॉडल पढ़ाए जाते हैं। दूसरे सेमेस्टर में अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और कॉर्पोरेट वित्त पर दो पाठ्यक्रमों को व्यापार और वित्त विशेषज्ञता के प्रस्तावना के रूप में पेश किया जाता है। अंतिम दो सेमेस्टर पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र और वित्त पर केंद्रित हैं। सापेक्ष रूप से, सैद्धांतिक मॉडल निर्माण के साथ–साथ अनुभवजन्य विश्लेषण पर उन्नत विषय तृतीय और चतुर्थ सेमेस्टर में पाठ्यक्रमों का

अभिन्न हिस्सा हैं। छात्रों को भी कार्यक्रम से अर्जित अपने सैद्धांतिक और अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर एक समकालीन मुद्दे पर शोध निबंध लिखना अपेक्षित है। कार्यक्रम से संबंधित जानकारी हेतु ई–मेल maeco@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

एम.ए. (अर्थशास्त्र) 2019–21

एम.ए. (अर्थशास्त्र) 2019–21 कार्यक्रम में कुल 45 छात्रों (दिल्ली में 25 और कोलकाता केंद्र में 20) ने प्रवेश लिया, जिसके उद्घाटन समारोह का आयोजन संस्थान के प्रांगण में 22 जुलाई 2019 को किया गया। उद्घाटन समारोह के दौरान, आईआईएफटी इकोनॉमिक्स सोसाइटी (आईईएस) ने ''इकोलिब्रियम'' नामक पत्रिका का अपना पहला संस्करण लॉन्च किया। पत्रिका को आईआईएफटी की वेबसाइट के माध्यम से जारी किया गया है। यह पत्रिका आईआईएफटी में अर्थशास्त्र विभाग के छात्रों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। पत्रिका में वर्ल्ड टुडे – भारत और चीन की दो प्रमुख बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं पर ध्यान देने वाले लेख और रिपोर्टें शामिल हैं।

एम.ए. (अर्थशास्त्र) 2019–21 कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान ''इकोलिब्रियम'' नामक पत्रिका का विमोचन करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत, संकाय सदस्य व कार्यक्रम के छात्रगण। (22 जुलाई 2019)

प्रबंधन में स्नातक अध्ययन (जीएसएम) विभाग

प्रबंधन में स्नातक अध्ययन (जीएसएम) विभाग संस्थान के ऑन–कैंपस पूर्णकालिक प्रमुख कार्यक्रम एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस एवं सप्ताहांत एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस के संचालन हेतु एक नोडल विभाग है। एमबीए (आईबी) सप्ताहांत डिग्री कार्यक्रम विशुद्ध रूप से कार्यपालकों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। विभाग द्वारा उपर्युक्त मुख्य कार्यक्रमों के साथ–साथ सप्ताहांत 'आयात–निर्यात में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम' भी चलाया जाता है। यह विभाग प्रशासनिक और शैक्षिक सहयोग भी प्रदान करता है। जीएसएम स्पीयरहेड्स प्रोग्राम मैनेजमेंट, कोर्स शेड्यूलिंग, सेशन प्लानिंग, फैकल्टी एलोकेशन और सपोर्ट, परीक्षा, रिसर्च प्रोजेक्ट्स एवं स्टूडेंट्स रिव्यू का संचालन करता है। छात्र संबंधों और अनुशासन सहित सभी छात्रों के मामले जीएसएम विभाग के अंतर्गत आते हैं। इस विभाग का नेतृत्व संस्थान की डॉ. सुनीथा राजू द्वारा किया जा रहा है। विभाग द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के संबंध में ई–मेल gsm@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

दो वर्षीय पूर्णकालिक एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) 2019–21 कार्यक्रम

दो वर्षीय पूर्णकालिक एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) 2019–2021 कार्यक्रम (34वां बैच) 24 जून 2019 को प्रारंभ हुआ। एक सौ इकहत्तर छात्रों को दिल्ली कैंपस में और एक सौ पैंसठ छात्रों को कोलकाता कैंपस में प्रवेश दिया गया। अखिल भारतीय चयन प्रक्रिया में लिखित परीक्षा, समूह चर्चा, निबंध लेखन और साक्षात्कार शामिल हैं। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर फ्यूरस्ट डे लॉसन के कंट्री डायरेक्टर श्री मनु बजाज ने उद्घाटन भाषण दिया। उद्घाटन कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कोलकाता कैंपस के छात्रों और कर्मचारियों सहित आईआईएफटी के संकाय, छात्रों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

आईआईएफटी के प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2019–21 के उद्घाटन समारोह के दौरान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत व संकाय सदस्य।

ढाई साल का सप्ताहांत एमबीए (आईबी) 2019–22 कार्यक्रम

कार्यरत कार्यपालकों के लिए ढाई साल के सप्ताहांत एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) 2019–22 कार्यक्रम का 20वां बैच दिल्ली परिसर में 4 जुलाई 2019 को शुरू हुआ। निबंध लेखन, समूह चर्चा और साक्षात्कार के आधार पर चालीस छात्रों को कार्यक्रम

में प्रवेश दिया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में आईआईएफटी के संकाय और कर्मचारी उपस्थित थे।

निर्यात–आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम – सप्ताहांत

जीएसएम विभाग द्वारा चार माह की अवधि का निर्यात–आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम – सप्ताहांत चलाया जाता है। इन कार्यक्रमों की कड़ी में दिल्ली परिसर में निर्यात–आयात प्रबंधन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम – सप्ताहांत (दिसम्बर 2019 – मार्च 2020) चलाया जा रहा है, जिसका शुभारंभ 14 दिसम्बर 2019 को 47 छात्रों के प्रवेश के साथ किया गया। इस कार्यक्रम में प्रवेश व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर दिया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के संकाय सदस्य व संबंधित कर्मचारियों की उपस्थिति में दिया गया।

प्रवेश प्रकोष्ठ

संस्थान द्वारा प्रवेश प्रकोष्ठ की स्थापना दिल्ली व कोलकाता परिसर पर चलाए जा रहे अपने मुख्य कार्यक्रमों जैसे एमबीए (आईबी) नियमित व एम.ए. इकॉनोमिक्स आदि में प्रवेश प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए की गई। हाल ही में प्रवेश प्रकोष्ठ द्वारा संस्थान के प्रमुख कार्यक्रम एमबीए (आईबी) 2020–22 कार्यक्रम की 511 सीटों (दिल्ली परिसर 258 व कोलकाता सेंटर 253) के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे। इस कार्यक्रम के लिए संस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 41 शहरों में 86 केंद्रों पर ऑन–लाइन कॉमन परीक्षा आयोजित की गई थी। इन कार्यक्रमों में प्रवेश संबंधी जानकारी हेतु ई–मेलः admissions2019@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है।

कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम (ईएमपी) विभाग

संस्थान में कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम (ईएमपी) विभाग की कल्पना अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित मुद्दों और व्यापार नीति पर इसके निहितार्थ के बारे में व्यापक समझ विकसित करने के लिए की गई है। संस्थान की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. सतीन्द्र भाटिया की देखरेख में इस विभाग का संचालन किया जाता है। विभाग सरकारी अधिकारियों, राजनयिकों, उद्यमियों, निर्यातकों, कॉर्पोरेट क्षेत्र और सिविल सोसायटी के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, ईएमपीडी विभिन्न देशों विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए रुचि रखने वालों के लिए कई समकालीन व्यापार और आर्थिक मुद्दों पर विचार, राय, विश्लेषण उत्पन्न करने के लिए डिजाइन किए गए कार्यक्रमों की शुरुआत भी करता है। विभाग का प्रमुख कार्यक्रम ''इंटरनेशनल बिजनेस में एग्जिक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा'' कार्यक्रम है, जिसकी अवधि लगभग 15 माह है। विभाग द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में ई–मेल empd@iift.edu पर संपर्क किया जा सकता है। ईपीजीडीआईबी कार्यक्रम दो प्रारूपों में चलाया जाता हैः

- इंटरनेशनल बिजनेस में एग्जिक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (ईपीजीडीआईबी) –ऑन कैंपस
- इंटरनेशनल बिजनेस में एग्जिक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (ईपीजीडीआईबी) –हाइब्रिड

ईपीजीडीआईबी – ऑन कैंपस

ईपीजीडीआईबी 2018–19 का ऑन–कैंपस बैच 01 अगस्त 2018 को 106 प्रतिभागियों के साथ प्रारंभ किया गया था। प्रशिक्षण के दौरान, अध्ययन दौरा के रूप में सहभागियों को अंतरराष्ट्रीय पोर्ट–विजिट (स्विट्जरलैंड तथा बेल्जियम) कराया गया। कार्यक्रम के 4 सहभागी पदक (1 स्वर्ण, 2 रजत व 1 कांस्य) विजेता रहे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित सभी पहलुओं में व्यवस्थित समझ विकसित करते हुए वरिष्ठ एवं मध्यम स्तर के अधिकारियों की प्रबंधकीय क्षमता को बढ़ाना है।

ईपीजीडीआईबी कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह में संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत, विशेष अतिथि श्री एस.एस. दुबे, संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, एमओएचएंडयूए व विभाग अध्यक्षा प्रोफेसर डॉ. सतीन्द्र भाटिया। (26 दिसम्बर 2019)

संस्थान में 26 दिसम्बर 2019 को ईपीजीडीआईबी 2018–19 कार्यक्रम का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री एस.एस. दुबे, संयुक्त सचिव व वित्तीय सलाहकार, आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय (एमओएचएंडयूए) को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस दौरान विशेष अतिथि श्री एस. एस. दुबे व विभाग अध्यक्षा डॉ. सतीन्द्र भाटिया की उपस्थिति

में कार्यक्रम के 98 सफल सहभागियों को आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा डिप्लोमा प्रदान किए गए।

ईपीजीडीआईबी कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह में कार्यक्रम की स्वर्ण पदक विजेता सुश्री अंकिता लूथरा को डिप्लोमा प्रदान करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत व साथ में विशेष अतिथि श्री एस.एस. दुबे, संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, एमओएचएंडयूए। (26 दिसम्बर 2019)

ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड

ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड कार्यक्रम पूर्णतः एक ऑनलाइन कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भारत और विदेशों में कहीं भी सुलभ इंटरनेट डेस्कटॉप तकनीक का उपयोग करके एक इंटरैक्टिव ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म प्रदान किया जाता है। ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड 2018–19 बैच ह्यूजेस के सहयोग से 3 अप्रैल 2018 को 62 प्रतिभागियों के प्रवेश के साथ प्रारंभ किया गया।

ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड 2018–19 कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के सहभागियों का समूह फोटो। (26 जुलाई 2019)

आईआईएफटी परिसर में दिनांक 26 जुलाई 2019 को ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड 2018–19 बैच का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत सहित विभाग अध्यक्षा डॉ. सतीन्द्र भाटिया व डॉ. विजया कट्टी, डीन, प्रशासन (शैक्षिक) उपस्थित रहे। साथ ही, अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ, श्री अभिषेक कुंभट, आईआईएफटी के पूर्व छात्र (गोल्ड मेडलिस्ट) और ईपीजीडीआईबी (2018–19) के वर्तमान बैच के श्री अभिषेक कुमार पांडे और श्री गौरव पोपली नामक दो छात्रों को एक स्नातक छात्र के दृष्टिकोण से अपने विचारों को युवा साथियों के साथ साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया। दीक्षांत समारोह में आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत ने कार्यक्रम के सहभागियों को डिप्लोमा प्रदान किए।

ईपीजीडीआईबी – हाइब्रिड 2018–19 कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के सहभागियों को डिप्लोमा प्रदान करते हुए आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत। (26 जुलाई 2019)

ईपीजीडीआईबी (ऑन–कैंपस एवं हाइब्रिड) प्रोग्राम 2019–20

इंटरनेशनल बिजनेस में एग्जिक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम (ऑन–कैंपस) 7 अगस्त 2019 को 98 छात्रों के नए बैच के साथ आरंभ हुआ। इसके अतिरिक्त, 36 छात्रों के एक बैच के साथ इंटरनेशनल बिजनेस में एग्जिक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (हाइब्रिड) प्रोग्राम 7 अगस्त 2019 को प्रारंभ किया गया। हाल ही में, इस बैच के सहभागियों का अध्ययन दौरे के रूप में 3–7 फरवरी 2020 के दौरान अंतरराष्ट्रीय पोर्ट–विजिट (ब्रसेल्स तथा हमबर्ग) कराया गया।

एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस) कार्यक्रम – तंजानिया

भारत सरकार की भारत–अफ्रीका पहल के तहत, संस्थान के कार्यपालक प्रबंधन कार्यक्रम (ईएमपी) विभाग द्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंस मैनेजमेंट (आईएफएम) के सहयोग से वर्ष 2001 से दार–ए–सलाम (तंजानिया) में एमबीए (इंटरनेशनल बिजनेस)

कार्यक्रम चला रहा है। इसी श्रृंखला में 10 जुलाई 2017 को आईएफएम, तंजानिया में एमबीए (आईबी) 2017–19 बैच का उद्घाटन किया गया तथा 20 सितम्बर 2019 को इस बैच का दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। सभी सफल छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में ईएमपी विभाग की अध्यक्षा डॉ. सतीन्द्र भाटिया द्वारा समारोह की अध्यक्षता की गई।

तंजानिया में एमबीए (आईबी) 2017–19 बैच के दीक्षांत समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के सहभागियों का समूह फोटो। (20 सितम्बर 2019)

सीएलएमवी देशों के लिए 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार' में डिप्लोमा कार्यक्रम

सीएलएमवी देशों के प्रतिनिधियों के लिए इंटरनेशनल ट्रेड में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (पीजीडीआईटी) कार्यक्रमों की श्रृंखला में 20 जून 2018 को संस्थान के दिल्ली परिसर में म्यांमार और वियतनाम के 19 प्रतिनिधियों के साथ दूसरा बैच प्रारंभ किया गया। 11 माह के इस कार्यक्रम के सभी सफल प्रतिभागियों को 18 अप्रैल 2019 को आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत व विभाग अध्यक्षा डॉ. सतीन्द्र भाटिया व डॉ. विजया कट्टी, डीन, प्रशासन (शैक्षिक) की उपस्थिति में डिप्लोमा प्रदान किए गए।

पीजीडीआईटी कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के सहभागियों का समूह फोटो। (18 अप्रैल 2019)

अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग

आईआईएफटी का अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं क्षमता विकास (आईसीसीडी) विभाग देशज और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ शैक्षिक गठबंधन कायम करके संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे कि संयुक्त प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें। संस्थान, विख्यात देशज और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की सदस्यता प्राप्त करके शैक्षिक सहयोग को और मजबूत बनाता है। भागीदार संस्थानों के साथ सहयोग के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं:–

- छात्र विनिमय (नियमित एमबीए (आईबी) कार्यक्रम के छात्र)
- संकाय विकास कार्यक्रम
- प्रशिक्षण कार्यक्रम
- संयुक्त अनुसंधान

छात्र विनिमय

आईआईएफटी छात्र विनिमय कार्यक्रम, संस्थान के शैक्षणिक सहयोग का एक परिणाम है जो लगभग पांच दशकों की आईआईएफटी की विरासत को प्रदर्शित करने और साथ ही भागीदार संस्थानों की विशेषज्ञता से भी लाभ प्राप्त करने का प्रयास है। भागीदार संस्थानों के छात्र आईआईएफटी में विनिमय छात्र के रूप में एक छमाही/तिमाही के लिए आते हैं और अपने चुने हुए विषय पर विशेषज्ञता एवं तकनीकी जानकारी हासिल करते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में आर्थिक विकास के ड्राइवरों पर प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं और कृत्रिम शैक्षणिक वातावरण में सीखते हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2019–20 के दौरान संस्थान के 21 छात्र दूसरे देशों के विश्वविद्यालयों में गए तथा 10 विदेशी छात्रों ने संस्थान का दौरा किया।

आईआईएफटी छात्र विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत विदेशी विश्वविद्यालयों से आए छात्रों का समूह।

संकाय विकास कार्यक्रम

विभाग द्वारा संचालित संकाय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत गत वर्ष के दौरान संस्थान के 17 संकाय सदस्यों ने विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया, जिसका उद्देश्य

संस्थान के संकाय सदस्यों के बीच अकादमिक क्षेत्र में विकसित नए मॉड्यूल, शैक्षिक पद्धतियों व विषयों की जानकारी विकसित करना है। इन कार्यक्रमों में 5 राष्ट्रीय, 10 अंतरराष्ट्रीय तथा 2 ऑनलाइन कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

संस्थान अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ अपना अकादमिक सहयोग स्थापित करता है, जिसका उद्देश्य छात्र/संकाय विनिमय तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ जैसे संयुक्त अनुसंधान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संयुक्त सम्मेलन आदि का आयोजन करना है। आईआईएफटी ने विश्व भर के 30 से अधिक विश्वविद्यालयों/बी–स्कूलों के साथ सहयोग स्थापित किया है।

वर्ष 2019 के दौरान शामिल संस्थान/विश्वविद्यालय :–

साउथ कोरिया	SOLBRIDGE INTERNATIONAL SCHOOL OF BUSINESS	सॉलब्रिज इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस, वूसोंग यूनिवर्सिटी, साउथ कोरिया
यूएसए	KENT STATE UNIVERSITY	केंट स्टेट यूनिवर्सिटी, ओहियो, यूएसए
ऑस्ट्रेलिया	DEAKIN UNIVERSITY	डीकिन यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया

एसोसिएशन ऑफ एडवांस कॉलेजिएट स्कूल ऑफ बिजनेस (एएसीएसबी)

आईआईएफटी वर्ष 2014 से एएसीएसबी का सदस्य है तथा इसकी मान्यता प्राप्ति के उच्चतम स्तर पर है। अगस्त 2019 के दौरान प्रारंभिक प्रत्यायन समिति (आईएसी) ने संस्थान की तृतीय आईएसईआर स्वीकृत की थी तथा संस्थान का प्रारंभिक प्रत्यायन आवेदन आमंत्रित किया था, जिसे 15 अक्तूबर 2019 को प्रस्तुत कर दिया गया था। इस संदर्भ में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत व आईसीसीडी अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. रवि शंकर ने अक्तूबर 2019 के दौरान एम्स्टर्डम, नेदरलैंड में आयोजित एएसीएसबी के इंगेजमेंट, इनोवेशन एंड इम्पेक्ट पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं वार्षिक बैठक में अपनी उपस्थिति दर्ज की। इसमें विश्व के 60 देशों से आए 1400 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य एएसीएसबी की मान्यता के संबंध में निर्धारित मानदण्डों को समग्र रूप से समझना था।

एएसीएसबी के इंगेजमेंट, इनोवेशन एंड इम्पेक्ट पर नेदरलैंड में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के सहभागियों के साथ संस्थान के आईसीसीडी अध्यक्ष डॉ. रवि शंकर (4 अक्तूबर 2019)

एएसीएसबी ने पीयर–रिव्यू टीम (पीआरटी) की नियुक्ति की है जो आईआईएफटी का दौरा करेगी। पीआरटी के अध्यक्ष प्रारंभिक समीक्षा के लिए भविष्य में आईआईएफटी का दौरा करेंगे।

व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स (सीटीएफएल) केंद्र

वाणिज्य मंत्रालय के लॉजिस्टिक्स विभाग के सहयोग से 30 जुलाई 2018 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) में व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स केंद्र (सीटीएफएल) की स्थापना की गई थी। यह केंद्र भारत की व्यापार तथा लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञता में मदद करता है और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा हासिल करने के लिए घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय मोर्चों पर विभिन्न संबंधित पक्षों के साथ सहयोग के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। इसके साथ ही, सीटीएफएल का कार्य एक लॉजिस्टिक्स डाटा रिपॉजिटरी विकसित करना और नियमित रूप से डाटा एकत्र, विश्लेषण तथा निगरानी करना एवं विभिन्न संबंधित पक्षों (नीति निकायों, उद्योग, नियामकों, सेवा प्रदाताओं और संघों आदि) को नीति संबंधी इनपुट भी प्रदान करना है। संस्थान के निदेशक प्रो. मनोज पंत की देखरेख में केंद्र का संचालन किया जाता है।

लॉजिस्टिक कॉन्क्लेव और सम्मेलन

लॉजिस्टिक्स डिवीजन, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के सहयोग से भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) के व्यापार सरलीकरण एवं लॉजिस्टिक्स केंद्र (सीटीएफएल) ने संयुक्त रूप से 19–20 नवंबर 2019 को नई दिल्ली परिसर में लॉजिस्टिक कॉन्क्लेव और सम्मेलन का आयोजन किया। दो दिवसीय सम्मेलन में नीति–निर्माताओं, चिकित्सकों, लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञों, निर्यातकों, शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों ने भाग लिया।

श्री एन. शिवसैलम, विशेष सचिव (लॉजिस्टिक्स), श्री अनंत स्वरूप, संयुक्त सचिव (लॉजिस्टिक्स) तथा विशिष्ट क्षेत्रों और मंत्रालयों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस आयोजन के लिए मुख्य रूप से आमंत्रित थे।

लॉजिस्टिक कॉन्क्लेव और सम्मेलन के कार्यक्रम की प्रोसिडिंग बुकलेट का विमोचन करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत व मुख्य रूप से आमंत्रित अधिकारीगण। (19–20 नवंबर 2019)

यह सम्मेलन ऐसे समय में आयोजित किया गया जब एक कुशल लॉजिस्टिक सिस्टम अत्यधिक विकसित व्यापारिक परिदृश्य में व्यापार की सुविधा और वृद्धि के लिए अनिवार्य सिद्ध हो रहा है। हाल के दिनों में, प्रभावी लॉजिस्टिक्स को लागत में कमी और बढ़ी हुई जवाबदेही के अवसर के रूप में देखा जा रहा है। भारत सरकार देश में लॉजिस्टिक्स की लागत को वर्तमान 14 प्रतिशत से 2022 तक सकल घरेलू उत्पाद के 9 प्रतिशत तक कम करने के लिए काम कर रही है। इस कॉन्क्लेव का उद्देश्य निजी तथा सरकारी खिलाड़ियों के साथ–साथ हितधारकों को एक साथ लाने के लिए एक साझा मंच प्रदान करना था, जिन्होंने लॉजिस्टिक्स के मुद्दों एवं चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। यह प्रमुख रूप से इंजीनियरिंग के सामान, रत्न एवं आभूषण, समुद्री उत्पाद, परिधान, चमड़ा, रसायन, कृषि और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित आठ विशिष्ट क्षेत्रों में लॉजिस्टिक्स के अवसरों तथा चुनौतियों पर केंद्रित था।

कान्क्लेव के दौरान कुल 10 पैनल सत्रों और प्रस्तुतियों को सरकार के प्रतिनिधियों के साथ शामिल किया गया था, जिन्होंने लॉजिस्टिक्स प्रतिस्पर्धा हासिल करने की दिशा में सरकारी समर्थन पर मूल्यवान जानकारी प्रदान की। शिक्षाविदों एवं अनुसंधान विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों यथा नवाचार एवं औद्योगिक लॉजिस्टिक्स, क्लाउड, बिग डेटा और लॉजिस्टिक्स में आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस (एआई), उद्योग 4.0, लॉजिस्टिक्स एवं आपूर्ति श्रृंखला 4.0, आपूर्ति श्रृंखला जोखिम और सुरक्षा इत्यादि पर 40 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अनुसंधान प्रस्तुतियों ने भारत में लॉजिस्टिक्स बढ़त प्राप्त करने के लिए नई अंतर्दृष्टि और समाधान प्रदान किए।

व्यापार और निवेश कानून केंद्र (सीटीआईएल)

व्यापार और निवेश कानून केंद्र (सीटीआईएल) की स्थापना वर्ष 2016 में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) में की गई थी। केंद्र का प्राथमिक उद्देश्य भारत सरकार व अन्य एजेंसियों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश कानून से संबंधित कानूनी मुद्दों का ठोस तथा गहन विश्लेषण प्रदान करना है। केंद्र कानूनी विशेषज्ञों का एक समर्पित पूल बनाने का लक्ष्य बना रहा है, जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं निवेश वार्ता और विवाद निपटान में भारत की भागीदारी बढ़ाने के लिए तकनीकी इनपुट प्रदान कर सके। केंद्र का कार्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के विभिन्न क्षेत्रों जैसे डब्ल्यूटीओ कानून, निवेश कानून एवं आर्थिक एकीकरण से संबंधित कानूनी मुद्दों में एक अग्रणी की भूमिका का निर्वहन करना है। सीटीआईएल का मिशन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून के व्यापक पहलुओं पर अंतरराष्ट्रीय बातचीत को प्रभावित करने हेतु रचनात्मक विचारों, विश्लेषण और दृष्टिकोणों की पहचान प्रदान करना है।

यह केंद्रीय तथा राज्य सरकारों, विचार मंडलों, शोध केंद्रों, राष्ट्रीय विधि विद्यालयों व अंतरराष्ट्रीय आर्थिक कानून, स्वतंत्र कानूनी पेशेवरों, उद्योग संगठनों और निजी क्षेत्र में कानून की शिक्षा प्रदान करने वाले अन्य संस्थानों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़ता है। केंद्र को व्यापार और निवेश से संबंधित जानकारी के तैयार भंडार के रूप में भी माना जाता है जिसमें चालू व्यापार वार्ता और विवादों पर अद्यतन जानकारी शामिल है। केंद्र प्रमुख डॉ. जेम्स जे. नेदुम्परा की देखरेख में समग्र गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

वित्त वर्ष 2019–20 में सीटीआईएल द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए:–

1. सीटीआईएल की द्वितीय वर्षगांठ का आयोजन और सीटीआईएल की नई वेबसाइट का शुभारंभ

सीटीआईएल ने 12 जून 2019 को अपनी दूसरी वर्षगांठ मनाई। इस अवसर पर, भारत सरकार के वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया और

प्रोफेसर पीटर वान डेन बॉसचे, अपीलीय निकाय के पूर्व अध्यक्ष, विश्व व्यापार संगठन और अध्ययन निदेशक, विश्व व्यापार संस्थान, बर्न, स्विट्जरलैंड ने मुख्य भाषण दिया। श्री सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा डॉ. विजया कट्टी, डीन प्रशासन (शैक्षिक), आईआईएफटी, नई दिल्ली ने भी अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सीटीआईएल की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अनूप वधावन, वाणिज्य सचिव, भारत सरकार, प्रोफेसर पीटर वान डेन बॉसचे, अपीलीय निकाय के पूर्व अध्यक्ष, श्री सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा डॉ. विजया कट्टी, डीन प्रशासन (शैक्षिक), आईआईएफटी, नई दिल्ली। (12 जून 2019)

2. सीटीआईएल द्वारा आयोजित ''अंतरराष्ट्रीय संधि वार्ता'' पर कार्यशाला

दिनांक 14 जून 2019 को आयोजित कार्यशाला ने सेवाओं में व्यापार पर बातचीत करते हुए संधि वार्ता के विभिन्न पहलुओं की ओर संकेत किया और विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय व्यापार समझौतों पर बातचीत के पहलुओं पर भी बल दिया।

''अंतरराष्ट्रीय संधि वार्ता'' पर कार्यशाला में सहभागियों के साथ दाएं से श्री सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, डॉ. जेम्स जे. नेदुम्परा, प्रमुख, सीटीआईएल, अन्य गणमान्य व्यक्ति एवं प्रतिभागी। (14 जून 2019)

3. ग्लोबल ट्रेड एंड कस्टम्स जर्नल के भारत विशेषांक का शुभारंभ और सीटीआईएल द्वारा ''अंतरराष्ट्रीय आर्थिक क्रम में भारतः मुद्दे और परिप्रेक्ष्य'' पर पैनल चर्चा का आयोजन

वाणिज्य विभाग के अपर सचिव श्री सुधांशु पांडे ने नई दिल्ली के इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में 15 नवम्बर 2019 को ''ग्लोबल ट्रेड एंड कस्टम्स जर्नल के भारत विशेषांक'' का शुभारंभ किया। विशेषांक को सीटीआईएल के प्रमुख डॉ. जेम्स जे. नेदुम्परा द्वारा संपादित किया गया और वोल्टर्स क्लूवर, नीदरलैंड्स द्वारा प्रकाशित किया गया। जर्नल विशेष रूप से सामयिक मुद्दों यथा क्षेत्रीय व्यापार समझौतों के साथ भारत का जुड़ाव, इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स पर भारत की स्थिति और विकासशील देशों के लिए लचीलापन की आवश्यकता पर केंद्रित है।

जर्नल लॉन्च के बाद ''अंतरराष्ट्रीय आर्थिक क्रम में भारतः मुद्दे और परिप्रेक्ष्य'' विषयवस्तु के अंतर्गत आने वाले विषयों पर पैनल चर्चा हुई।

''ग्लोबल ट्रेड एंड कस्टम्स जर्नल के भारत विशेषांक'' को इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में लॉच किए जाने के अवसर पर वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अपर सचिव श्री सुधांशु पांडे, डॉ. जेम्स जे. नेदुम्परा, प्रमुख, सीटीआईएल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति। (15 नवम्बर 2019)

4. सीटीआईएल और एमसीआईए द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय निवेश पंचाट पर सम्मेलन

दिनांक 18 जनवरी 2020 को आयोजित सम्मेलन का समापन सीटीआईएल द्वारा आयोजित एक अनुभवजन्य अध्ययन के निष्कर्षों के विमोचन से हुआ, जिसका शीर्षक था ''भारत की निवेश संधियों के लिए निवेशक धारणाओं पर अध्ययन''।

अंतरराष्ट्रीय निवेश पंचाट पर आयोजित सम्मेलन में बाएं से दाएं श्री सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, माननीय न्यायाधीश सुश्री इंदु मल्होत्रा, न्यायाधीश ए.के. सीकरी एवं न्यायाधीश के. राजारमन। (18 जनवरी 2020)

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र की स्थापना वर्ष 1999 में की गई थी जिसका उद्देश्य विश्व व्यापार संगठन वार्ता–संबंधी ज्ञान और प्रलेखन का एक स्थायी भंडार के रूप में कार्य करने के साथ–साथ सामान्यतः व्यापार में और विशेष रूप से डब्ल्यूटीओ के मामले में एक अनुसंधान इकाई के तौर पर कार्य करना है। इसकी स्थापना डब्ल्यूटीओ व अन्य मंचों यथा मुक्त तथा प्राथमिकतापूर्ण व्यापार करार (एफटीए/पीटीए) और विस्तृत आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए), विभिन्न व्यापार वार्ताओं में अपनी स्थिति विकसित करने के उद्देश्य से की गई थी। इन वर्षों में, केंद्र ने विश्व व्यापार संगठन में सभी क्षेत्रों में शोधपत्रों की एक श्रृंखला के साथ एक मजबूत शोध कार्यक्रम चलाया है। यह वर्तमान में मजबूत प्रकाशन कार्यक्रम के साथ अपने शोध की मदद करने की कवायद में संलग्न है। केंद्र ने अपने व्यापार संसाधन केंद्र में विशेष रूप से भारत से संबंधित महत्वपूर्ण डब्ल्यूटीओ दस्तावेजों का एक विशेष ई–भंडार भी बनाया है।

इसे भारत सरकार द्वारा नियमित रूप से अनुसंधान करने और स्वतंत्र विश्लेषणात्मक इनपुट प्रदान करने के लिए कहा गया है ताकि इसे विभिन्न व्यापार वार्ताओं में मुक्त एवं अधिमान्य व्यापार समझौतों और व्यापक आर्थिक सहयोग समझौतों यथा डब्ल्यूटीओ तथा अन्य मंचों दोनों पर स्थितियों को विकसित करने में मदद मिल सके। इसके अतिरिक्त, केंद्र सक्रिय रूप से उद्योग और सरकारी इकाइयों के साथ–साथ अन्य हितधारकों के साथ अपने आउटरीच और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से संगोष्ठी, कार्यशालाओं, विषय विशिष्ट बैठकों आदि का आयोजन कर रहा है। श्री अभिजीत दास, केंद्र प्रमुख की देखरेख में सभी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अतः केंद्र नीति निर्माताओं और हितधारकों के बीच सहमति निर्माण के लिए एक मंच के रूप में भी कार्य करता है।

क्षमता निर्माण

केंद्र ने 112 से अधिक क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का आयोजन किया है, जिसमें भारत में चुनिंदा स्थानों पर सेमिनार, कार्यशालाएं और व्यापार वार्ता में प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। केंद्र ने डब्ल्यूटीओ; यूनेसकैप, बैंकॉक; आईसीटीएसडी; थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क; सेनटाड आदि के सहयोग से कई राष्ट्रीय कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया है।

केंद्र ने भारत के कुछ शीर्ष व्यापारिक घरानों में विश्व व्यापार संगठन प्रकोष्ठों की स्थापना के लिए इनमें प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया है ताकि वे भारत सरकार की नीति निर्माण प्रक्रिया में प्रभावी रूप से भाग ले सकें और इसमें योगदान कर सकें। केंद्र कुछ व्यावसायिक घरानों के साथ उनके शीर्ष अधिकारियों के लिए अनुकूलित क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए काम कर रहा है।

हितधारकों के परामर्श

सरकार द्वारा अन्य बातों के साथ, व्यापारिक भागीदार क्षेत्राधिकार में संवर्धित मानकों के प्रभाव, उन देशों और क्षेत्रों के घरेलू नियमों को समझना जहां भारत का सकारात्मक व्यापार हित है, आदि सहित विभिन्न मुद्दों पर हितधारकों के परामर्श के आयोजन में अनुसंधान और लॉजिस्टिकल सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र से आह्वान किया गया है। केंद्र ने उद्योग की मांगों पर भी प्रतिक्रिया दी है ताकि व्यापार मुद्दों पर उनकी पूछताछ और प्रश्नों पर उन्हें शोध इनपुट प्रदान किया जा सके।

अन्य संस्थानों व एजेंसियों के साथ नेटवर्क

केंद्र ने यूनिसकेप, बैंकॉक; यूएनडीपी, आरसीसी, बैंकॉक; राष्ट्रमंडल सचिवालय, लंदन; आईसीटीएसडी; थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क आदि जैसे अनुसंधान और बहुपक्षीय संस्थानों के साथ नेटवर्क स्थापित किया है। इसी क्रम में श्रीलंकन इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिसी स्टडीज (आईपीएस), साउथ एशिया वॉच ऑन ट्रेड, इकोनॉमिक्स एंड एनवायरनमेंट (एसएडब्ल्यूटीईई), नेपाल एंड साउथ एशियन नेटवर्क ऑन इकोनॉमिक मॉडलिंग (सानेम) और बांग्लादेश के साथ संस्थागत टाई–अप सहित दक्षिण एशियाई क्षेत्र में कुछ पहलें की हैं।

वर्ष 2019–20 के दौरान डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:–

1) श्रीलंका के अधिकारियों के लिए व्यापार उपचार उपायों पर फोकस के साथ डब्ल्यूटीओ समझौतों पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

वाणिज्य महानिदेशक, श्रीलंका के अनुरोध पर आईआईएफटी ने इंटरनेशनल ट्रेड सेंटर, जिनेवा के साथ साझेदारी में ''श्रीलंका के अधिकारियों के लिए व्यापार उपचार उपायों पर फोकस के साथ डब्ल्यूटीओ समझौतों पर क्षमता निर्माण'' पर एक पांच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र (सीडब्ल्यूएस) नेफेड हाउस, सिद्धार्थ इन्क्लेव, आश्रम चौक, नई दिल्ली में 27–31 मई 2019 के दौरान आयोजित किया गया।

''श्रीलंका के अधिकारियों के लिए व्यापार उपचार उपायों पर फोकस के साथ डब्ल्यूटीओ समझौतों पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम'' के उद्घाटन के अवसर पर श्री अभिजीत दास व अन्य गणमान्य व्यक्ति। (27–31 मई 2019)

2) जिम्बाब्वे सरकार की ट्रेड रेमेडी यूनिट के लिए डब्ल्यूटीओ व्यापार उपचार उपायों पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

आईआईएफटी ने जिम्बाब्वे सरकार की ट्रेड रेमेडी यूनिट के लिए ''डब्ल्यूटीओ व्यापार उपचार उपायों पर क्षमता निर्माण'' पर एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम आईआईएफटी के डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र और अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान केंद्र द्वारा 2–6 सितंबर 2019 के दौरान नेफेड हाउस, सिद्धार्थ इन्क्लेव, आश्रम चौक, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिम्बाब्वे के 10 अधिकारियों ने भाग लिया।

''जिम्बाब्वे सरकार की ट्रेड रेमेडी यूनिट के लिए डब्ल्यूटीओ व्यापार उपचार उपायों पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम'' के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्ति एवं प्रतिभागी। (2–6 सितम्बर 2019)

3) मानक विनियमों और डब्ल्यूटीओ एसपीएस एवं टीबीटी उपायों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, आईआईएफटी ने ''मानक, विनियमों और डब्ल्यूटीओ एसपीएस एवं टीबीटी उपायों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम'' भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी), विदेश मंत्रालय और वाणिज्य विभाग, भारत सरकार के साथ मिलकर आयोजित किया। डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, आईआईएफटी को इस कार्यक्रम की मेजबानी के लिए भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) से जुड़े होने पर गर्व है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नेफेड हाउस, सिद्धार्थ इन्क्लेव, आश्रम चौक, नई दिल्ली में 18–27 नवंबर 2019 के दौरान किया गया।

जिम्बाब्वे के अधिकारियों के लिए ''मानक, विनियमों और डब्ल्यूटीओ एसपीएस एवं टीबीटी उपायों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम'' के उद्घाटन के अवसर पर वाणिज्य सचिव सुश्री रीता तेवतिया, श्री अभिजीत दास, श्री मुकेश भटनागर एवं डॉ. जेम्स जे. नेदुम्पारा। (18–27 नवंबर 2019)

क्षेत्रीय व्यापार केंद्र (सीआरटी)

क्षेत्रीय व्यापार केंद्र (सीआरटी), एक स्वायत्त थिंक–टैंक है, जिसे वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। क्षेत्रीयता की दृष्टि के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को देखते हुए सीआरटी द्वारा नीति उन्मुख शोध पर ध्यान केंद्रित करना अनिवार्य है। अनुसंधान, क्षमता निर्माण एवं आउटरीच कार्यक्रमों के व्यापक क्षेत्रों में माल में व्यापार, सेवाओं में व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और विकास संबंधी मुद्दों को शामिल किया गया है। सीआरटी का उद्देश्य साक्ष्य–आधारित नीति अनुसंधान पर केंद्रित उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को सामने लाना है जो सिद्धांत, अनुभववाद और नीति को जोड़ते हैं।

इसके अलावा, सीआरटी का उद्देश्य एक व्यापार–विकास पटकथा का निर्माण करना है जो नीति निर्माण प्रक्रियाओं एवं अन्य क्षेत्रों यथा निजी क्षेत्र, अकादमिया तथा क्षेत्रों और दुनिया भर में मीडिया जैसे अन्य हितधारकों के लिए प्रासंगिक है। केंद्र प्रमुख के रूप में डॉ. राम उपेन्द्र दास द्वारा सभी गतिविधियों का संचालन किया जाता है।

कंप्यूटर केंद्र के बारे में

शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को पहचानते हुए, आईआईएफटी के कंप्यूटर केंद्र ने शिक्षा और अनुसंधान के अपने मूल क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करने के लिए नवीनतम अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी की बुनियादी सुविधाओं को लागू किया है। कंप्यूटर केंद्र का लक्ष्य 99 प्रतिशत सक्रिय अवधि प्रदान करना है, जिसमें सर्वर सक्रिय अवधि सुनिश्चित करना, डेटा रिकवरी और बैकअप, स्टोरेज मैनेजमेंट की सुविधा, हार्डवेयर, नेटवर्क संचालन, संचालन को सुव्यवस्थित करना और अंतिम उपयोगकर्ता सहायता को सरल बनाना शामिल है।

दिल्ली परिसर का कंप्यूटर केंद्र

आईआईएफटी अपनी इंटरनेट आवश्यकताओं के लिए, भार संतुलन पर दो अलग–अलग आईएसपी से 150 एमबीपीएस लीज्ड लाइन का उपयोग करता है। छात्रों के लिए कंप्यूटर लैब पर्याप्त संख्या में डेस्कटॉप कंप्यूटर के साथ प्रतिदिन चौबीस घंटे खुला रहता है। ये एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर यथा एसपीएसएस, ईव्यूज, एसएएस आदि से पूरी तरह समर्थित हैं। संस्थान के नेटवर्क पर सीएमआईई से इंडिया ट्रेड एंड प्रोवेस डेटाबेस भी उपलब्ध हैं। कार्यात्मक डेटा विश्लेषण और उच्च–आयामी आंकड़ों में हाल की प्रगति को समझते हुए, कंप्यूटर लैब के अतिरिक्त, आईआईएफटी का डेटा एनालिटिक्स और सिमुलेशन पाठ्यक्रम के लिए एसपीएसएस, हाडूप, एसएएस आदि जैसे सॉफ्टवेयर के साथ 40 कंप्यूटरों का एक अनन्य डेटा विश्लेषिकी और सिमुलेशन लैब (डीएएसएल) है।

इसके अतिरिक्त, आईआईएफटी दिल्ली और कोलकाता को आंतरिक बैठकों आदि के लिए जोड़ने के अलावा, प्रशिक्षण, अनुसंधान गतिविधियों के लिए आईआईएफटी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा का भी उपयोग करता है। आईआईएफटी का हाल ही में ऑनलाइन शिक्षा मंच में प्रवेश अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी ढांचा सहायता से संभव हुआ है, जो ऑनलाइन कार्यक्रमों के संचालन के लिए प्रदान किया जा रहा है। इसने आईआईएफटी को ब्रॉडबैंड सुविधा का वास्तविक समय के आधार पर उपयोग करके ऑनलाइन सत्र आयोजित करने में सक्षम बनाया है।

आईआईएफटी के पास (कैंपस360) (http://campus360.iift.ac.in) नामक एक पूरी तरह से एकीकृत इन–हाउस विकसित प्लेटफॉर्म है, जो छात्रों और कार्यक्रम कार्यालय के साथ संकाय को मिलाने की सुविधा प्रदान करता है। कैंपस 360 ऑनलाइन उपस्थिति, कोर्सवेयर साझा करने, परिणाम पर कार्रवाई, ऑनलाइन क्विज, जनमत सर्वेक्षण, असाइनमेंट जमा करना, शोध प्रबंध/शोध परियोजना जमा करना, ऐच्छिक चयन, पोर्ट भ्रमण विकल्प, भाषा चयन और कई अन्य संबंधित गतिविधियाँ करने में सक्षम बनाता है।

संस्थान का दिल्ली परिसर स्थित कंप्यूटर केंद्र

संस्थान का पुस्तकालय

पूरी तरह से स्वचालित विदेश व्यापार पुस्तकालय 1,04,574 संसाधनों के एक प्रभावशाली संग्रह के साथ एक विशाल ज्ञान बैंक है, जिसमें लगभग 77,459 पुस्तक/सीडी–वॉल्यूम, 17,731 सजिल्द आवधिक और 235 सिद्धांत जैसे सांख्यिकीय

सिद्धांत, बैंकिंग, उद्योग शामिल हैं। प्रबंधन, विपणन, अर्थशास्त्र, लॉजिस्टिक्स, उपभोक्तावाद, भूराजनीतिक आर्थिक प्रणाली आदि पुस्तकालय के रूप में अच्छी तरह से ब्लूमबर्ग डेटाबेस तक पहुँच है।

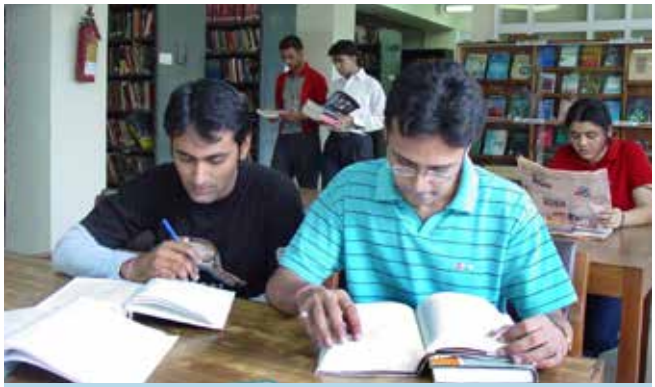

संस्थान दिल्ली परिसर स्थित विदेश व्यापार पुस्तकालय

ई–संसाधन

संस्थान के दोनों परिसरों दिल्ली व कोलकाता पर पाठकों को हर समय ऑनलाइन सूचना प्राप्त कराने के लिए, पुस्तकालय ने 27 ऑनलाइन व ऑफलाइन डेटाबेस जैसे ब्लूमबर्ग, कैपटालाइन प्लस, सीएमआईई डेटाबेसेस (प्रोवेस, भारतीय व्यापार एवं उद्योग विश्लेषण सेवा), कॉमोडिटी प्राइस बुलेटिन, डीजीसीआईएस स्टेटिसटिक्स, एफॉरमेल, आईएफएस, इंडिया स्टेट.कॉम, इनसाइड ट्रेड.कॉम, प्रोक्वेस्ट, सन्स मैगजीन, ट्रेड मैप, वर्ल्ड बैंक ऑनलाइन डेटाबेसेस, वर्ल्ड ट्रेड एटलस, विट्स; 4 ई–जर्नल पैकेज अर्थात ब्लैकवेल सिनर्जी (21 ई–जर्नल्स), ईबीएससीओ और एमराल्ड मैनेजमेंट अतिरिक्त 175 पत्रिकाएं और कई भिन्न–भिन्न पत्रिकाओं की भी सदस्यता ली हुई है।

गृह–प्रकाशन

नई पुस्तकों व रिपोर्टों (टीकाकृत) की "परिवर्धित मासिक सूची" आंतरिक प्रसार के लिए नियमित रूप से तैयार की जाती है।

डब्ल्यूटीओ संसाधन केंद्र

पुस्तकालय में स्थापित डब्ल्यूटीओ संसाधन केंद्र एक अच्छी तरह से मान्यताप्राप्त केंद्र है जो विशेषकर डब्ल्यूटीओ और संबंधित मुद्दों पर विशेषज्ञता के क्षेत्र में कार्यरत है। केंद्र डब्ल्यूटीओ संबंधी मुद्दों व भारत के लिए इसके निहितार्थ पर अनुसंधानकर्ताओं, नीति निर्माताओं व शिक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। केंद्र में डब्ल्यूटीओ एवं संबंधित मुद्दों पर पुस्तकों, रिपोर्टों, जर्नलों, वीडियो कैसेट्स, सीडी–रोम्स और समाचार मदों/लेखों का समृद्ध संग्रह उपलब्ध है। वर्तमान में केंद्र में लेखों एवं 4301 पुस्तकों का संग्रह है।

देश–विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से शोधकर्ता अपने डॉक्टरेट व डॉक्टरेट के बाद शोध कार्य के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

> **दिन में एक बार अपने आप से बात करें, अन्यथा आप इस दुनिया में एक उत्कृष्ट व्यक्ति से मिलने से चूक सकते हैं।**
>
> **स्वामी विवेकानंद**

आईआईएफटी का कोलकाता केंद्र

कोलकाता केंद्र के बारे में

कोलकाता में रूबी जनरल अस्पताल के पीछे हरे–भरे मदुरदाहा क्षेत्र में स्थित भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, देश के पूर्वी भाग में स्थित बेहतरीन केंद्रों में से एक माना जाता है। यह केंद्र 7 एकड़ के भूभाग में फैला हुआ है, जिसमें एक शैक्षणिक ब्लॉक तथा एक प्रशासनिक ब्लॉक है। इसके अतिरिक्त, छात्रों व अतिथि संकाय के लिए दो आवासीय ब्लॉक हैं। चाहे यह वास्तुशिल्प डिजाइन की रहस्यमयी सुंदरता हो या सर्दियों में पूरी तरह खिले परिसर का वैभव, इससे आगंतुक प्रभावित हुए बिना नहीं रहते हैं। यह परिसर अपने आप में कलात्मक रूप से निर्मित इमारतों, हरे–भरे सुंदर उद्यानों और सुव्यवस्थित जलाशयों के साथ एक बहुत ही सुंदर परिसर है। यहाँ उपलब्ध सुविधाओं में छात्रों के लिए उत्कृष्ट आवासीय सुविधाओं के अतिरिक्त, आधुनिक ऑडियो–विजुअल साधनों के साथ पूर्णतया वातानुकूलित व्याख्यान हॉल, राउंड–टेबल कॉन्फ्रेंस हॉल, 500 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभागार, एमडीपी सेंटर, कंप्यूटर सेंटर, इनडोर गेम्स तथा स्पोर्ट्स ग्राउंड है।

कोलकाता परिसर

उद्देश्य एवं गतिविधियाँ

- अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रासंगिक आधुनिक प्रबंधन तकनीकों में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना।
- प्रतिभागियों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विविध और जटिल कार्यों के बीच अंतर–संबंध समझने के लिए सक्षम बनाना।
- विभिन्न व्यापार और आर्थिक मुद्दों की बेहतर समझ के लिए व्यावसायिक अधिकारियों की क्षमता विकसित करना।
- उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान आयोजित करना जो देशज के साथ–साथ विश्व व्यापार और व्यापार मुद्दों का समाधान करता हो। संस्थान के दीर्घावधि कार्यक्रमों का पोर्टफोलियो विविध है, जो आकांक्षी अंतरराष्ट्रीय व्यापार कार्यपालकों और मध्य कैरियर पेशेवरों की एक समान रूप से जरूरतों को पूरा करता है। ये हैं:
  - दिल्ली और कोलकाता में पीएच.डी. कार्यक्रम।
  - नई दिल्ली और कोलकाता में एमबीए (अंतरराष्ट्रीय व्यापार)।
  - नई दिल्ली और कोलकाता में एमबीए (अंतरराष्ट्रीय व्यापार) सप्ताहांत कार्यक्रम।
  - दार–ए–सलाम (तंजानिया) में एमबीए (अंतरराष्ट्रीय व्यापार)।
  - नई दिल्ली और कोलकाता में अंतरराष्ट्रीय व्यापार में परास्नातक डिप्लोमा।
  - भारत के 91 शहरों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कार्यकारी परास्नातक डिप्लोमा (वीएसएटी के माध्यम से)।
  - अंतरराष्ट्रीय व्यापार रणनीति में कार्यकारी परास्नातक डिप्लोमा कार्यक्रम (एनआईआईटी इम्पीरिया प्लेटफार्म के माध्यम से)।
  - व्यापार प्रबंधन में परास्नातक प्रमाण–पत्र कार्यक्रम (टेलेंटेज के माध्यम से)।
  - निर्यात प्रबंधन में प्रमाणपत्र कार्यक्रमः परिसर में (नई दिल्ली और कोलकाता)।
  - निर्यात–आयात प्रबंधन में हाइब्रिड प्रमाणपत्र कार्यक्रम (सीपीईआईएम)।
  - पूंजी और वित्तीय बाजारों में प्रमाणपत्र कार्यक्रमः परिसर में (नई दिल्ली) और हाइब्रिड।
  - नई दिल्ली में वैश्विक व्यापार लॉजिस्टिक्स एवं संचालन में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम।

वर्ष 2019–20 के दौरान आयोजित मुख्य गतिविधियाँ

1. उद्यमियों के लिए निर्यात पर उन्नत स्तर का हैंडहोल्डिंग कार्यक्रम

''पश्चिम बंगाल के उद्यमियों के लिए 26–29 नवंबर 2019 के दौरान ''निर्यात पर उन्नत स्तर के हैंडहोल्डिंग कार्यक्रम'' शीर्षक वाले इस चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन पश्चिम बंगाल सरकार के एमएसएमई एंड टी विभाग के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य से, व्यापार से संबंधित व्यावहारिक मुद्दों के साथ उद्यमियों को सहयोग देना था, जिसमें बाजारों की पहचान तकनीक, ब्रांडिंग, व्यापार डेटाबेस के साथ हैंड–ऑन अभ्यास आदि शामिल थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों के 25 उद्यमियों ने भाग लिया। डॉ. जयंत कुमार सील, कार्यक्रम निदेशक की देखरेख में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

''निर्यात पर उन्नत स्तर के हैंडहोल्डिंग कार्यक्रम'' के सहभागियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (26–29 नवम्बर 2019)

2. डेटा साइंस और गवर्नेंस में इसका अनुप्रयोग

कोलकाता केंद्र के प्रबंधन विकास कार्यक्रम विभाग द्वारा 4 से 8 नवंबर 2019 के दौरान डॉ. पी.के. दास के निर्देशन में पश्चिम बंगाल सरकार के श्रम विभाग के अधिकारियों के लिए ''डेटा साइंस एंड गवर्नेंस इन एप्लीकेशन'' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागियों को सिखाया गया कि विभिन्न स्रोतों में उत्पन्न होने वाले बड़ी मात्रा में डेटा को कैसे संभाला जाए। कार्यक्रम का डिजाइन आईआईएफटी तथा श्रम विभाग का एक सहयोगात्मक प्रयास था। इस आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के श्रम विभाग के कुल 25 अधिकारियों ने भाग लिया।

''डेटा साइंस एंड गवर्नेंस इन एप्लीकेशन'' कार्यक्रम के सहभागियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (4–8 नवम्बर 2019)

3. भारतीय चाय का निर्यात बढ़ानाः बाजार और बाधाएं

आईआईएफटी, कोलकाता केंद्र के एमडीपी विभाग ने टी बोर्ड इंडिया के अधिकारियों के लिए एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. देबाशीष चक्रवर्ती के निर्देशन में 28–29 सितम्बर 2019 को एक गैर–आवासीय कार्यक्रम ''भारतीय चाय का निर्यात बढ़ानाः बाजार और बाधाएं'' का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य अधिकारियों को व्यापार की बारीकियों के बारे में ज्ञान देना था, जिसमें निर्यात उत्पादों की पहचान तकनीक, विदेशी बाजार की पहचान प्रक्रिया, व्यापार डेटाबेस के साथ व्यावहारिक अभ्यास, विदेशी बाजारों के साथ संभावित उत्पादों का मिलान और निर्यात बाधाओं एवं अवसरों के प्रभावी हैंडलिंग के बारे में जागरूकता पैदा करना, व्यापार समझौतों के बारे में सीखना आदि शामिल था। इस कार्यक्रम में टी बोर्ड इंडिया व विभिन्न हितधारकों से 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

''भारतीय चाय का निर्यात बढ़ानाः बाजार और बाधाएं'' कार्यक्रम के सहभागियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (28–29 सितम्बर 2019)

4. सेवा–उन्मुख नेतृत्व और व्यक्तित्व विकास

''सेवा उन्मुख नेतृत्व और व्यक्तित्व विकास'' पर पश्चिम बंगाल सरकार के श्रम विभाग के लिए प्रथम बैच 16 से 20 सितम्बर 2019 तक और द्वितीय बैच 23 से 27 सितम्बर 2019 तक डॉ. आर.पी. शर्मा के निर्देशन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को उनकी नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने, संघर्ष समाधान और आम सहमति निर्माण, संचार कौशल वृद्धि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, टीम नेतृत्व, नैतिक मूल्यों को शामिल करना, आत्मविश्वास विकसित करना आदि था। कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के श्रम विभाग के फैक्ट्री निदेशालय और बॉयलर निदेशालय के प्रथम और द्वितीय बैच में कुल क्रमशः 27 और 30 अधिकारियों ने भाग लिया।

''सेवा उन्मुख नेतृत्व और व्यक्तित्व विकास'' कार्यक्रम के सहभागियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (16–20 सितम्बर 2019)

5. निर्यात जागरूकता और प्रशिक्षण पर कार्यशाला

फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के सहयोग से भारतीय विदेश व्यापार संस्थान कोलकाता केंद्र द्वारा प्रोफेसर डॉ. गौतम दत्ता के निर्देशन में 19 सितंबर 2019 को पश्चिम बंगाल राज्य में एमएसएमई एंड टी क्षेत्र के बीच निर्यात के दायरे को शिक्षित करने व उसका पता लगाने के उद्देश्य से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में बने रहने के लिए, एमएसएमई को घरेलू बाजार में भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा हेतु स्वयं को तैयार करने संबंधी बिंदुओं की जानकारी दी गई।

''निर्यात जागरूकता और प्रशिक्षण पर कार्यशाला'' के सहभागियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (19 सितम्बर 2019)

6. समूह 'ए' सिविक अधिकारियों के लिए एमडीपी

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान कोलकाता केंद्र के एमडीपी विभाग द्वारा केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड, भारत सरकार के समूह 'ए' अधिकारियों के लिए डॉ. भरत चिलकुरी के निर्देशन में 29–30 अगस्त 2019 को दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सीबीआईसी अधिकारियों को विभिन्न उपकरणों के कार्यान्वयन की प्रक्रिया से परिचित कराना शामिल था ताकि उन वित्तीय और विश्लेषणात्मक उपकरणों के उचित उपयोग से उन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिल सके, जहां सीमा शुल्क और जीएसटी से संबंधित डेटा का विश्लेषण आवश्यक है।

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड के समूह 'ए' अधिकारियों व आईआईएफटी के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (29–30 अगस्त 2019)

अनुसंधान विभाग की पहल

प्रमाणीकरण

1. **आईएसओ / आईईएस 27001: 2013** – अंतरराष्ट्रीय व्यापार रणनीति, डेटा एनालिटिक्स, आपूर्ति श्रृंखला और लॉजिस्टिक्स, वित्तीय प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, परियोजना प्रबंधन, विपणन और संचालन प्रबंधन, सामरिक विदेशी व्यापार ढांचे की सुविधा, अनुसंधान, अन्वेषण, प्रशिक्षण, शिक्षण और पाठ्यक्रम सामग्री का विकास से संबंधित लाहकार और परामर्श सेवाओं के लिए प्रमाण–पत्र प्राप्त किया गया, जिसकी वैधता अवधि – 01.06.2019 से 31.05.2022 तक है।

2. **आईएसओ 9001: 2015** – अनुसंधान अध्ययन,

अंतरराष्ट्रीय व्यापार रणनीति से संबंधित सलाहकार और परामर्श सेवाएं, आपूर्ति श्रृंखला और लॉजिस्टिक्स, वित्तीय प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, परियोजना प्रबंधन, विपणन और संचालन प्रबंधन, सामरिक विदेश व्यापार ढांचे की सुविधा, प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम सामग्री का विकास से संबंधित सलाहकार और परामर्श सेवाओं के लिए प्रमाण–पत्र प्राप्त किया गया, जिसकी वैधता अवधि – 26.06.2019 से 25.06.2022 तक है।

प्रबंधन डॉक्टरल वार्तालाप

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, कोलकाता केंद्र के अनुसंधान विभाग (प्रबंधन) ने 6 दिसंबर 2019 को एक्जिम बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रायोजित अपना प्रथम प्रबंधन डॉक्टरल वार्तालाप (एमडीसी) का आयोजन किया। इस कार्यक्रम को नवोदित विद्वानों, सेशन चेयर के हमारे सम्मानित समूह, प्रतिष्ठित वक्ताओं और अन्य विद्वानों से मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करने एवं परस्पर संवाद हेतु मंच प्रदान करने के लिए तैयार किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन, कोलकाता के केंद्र प्रमुख – डॉ. के. रंगराजन द्वारा, मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता डॉ. प्रबीना राजब, डीन, वीजीएसओएम, आईआईटी खड़गपुर, प्रतिष्ठित प्रोफेसर – डॉ. सुगाता मरजीत, प्रमुख – अनुसंधान (प्रबंधन) – डॉ. दीपांकर सिन्हा और संयोजक (एमडीसी 2019) – डॉ. कविता वाधवा की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

प्रबंधन डॉक्टरल वार्तालाप (एमडीसी) कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान कोलकाता केंद्र प्रमुख, डॉ. के. रंगराजन व अन्य गणमान्य सदस्य। (6 दिसम्बर 2019)

समझौता ज्ञापन

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा विभाग (एमएसएमई एंड टी), पश्चिम बंगाल सरकार के साथ समझौता ज्ञापन

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), नई दिल्ली और कोलकाता केंद्र ने 12 दिसंबर 2019 को बिजनेस कॉन्क्लेव का आयोजन किया। इस दौरान दीघा में राज्य से निर्यात को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्श एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों तथा उद्यमिता के क्षेत्र में परामर्श और आउटरीच के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा (एमएसएमई एंड टी) विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। इस कार्यक्रम में श्री राजेश पांडे, सचिव, एमएसएमई विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, डॉ. के. रंगराजन, केंद्र प्रमुख, आईआईएफटी कोलकाता और डॉ. दीपांकर सिन्हा, प्रमुख, अनुसंधान विभाग, कोलकाता ने भाग लिया।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा विभाग (एमएसएमई एंड टी), पश्चिम बंगाल सरकार व कोलकाता केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन कार्यक्रम के दौरान सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता केंद्र, प्रमुख, डॉ. के. रंगराजन व अन्य गणमान्य सदस्य। (12 दिसम्बर 2019)

विदेशी प्रतिनिधियों का दौरा

कोलकाता केंद्र के अनुसंधान विभाग (प्रबंधन) द्वारा 2 जनवरी 2020 को प्रथम संकाय वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित किया गया। फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी– सेंटर फॉर इंटरनेशनल बिजनेस एंड रिसर्च द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय के साथ वार्तालाप के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका से आए संकाय प्रतिनिधिमंडल की एक टीम ने आईआईएफटी कोलकाता परिसर का दौरा किया।

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी – सेंटर फॉर इंटरनेशनल बिजनेस एंड रिसर्च के प्रतिनिधिमंडल व संस्थान के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (2 जनवरी 2020)

कंप्यूटर केंद्र

दिल्ली और कोलकाता परिसरों के बीच 20 एमबीपीएस एनएलडी के अतिरिक्त, कोलकाता परिसर के पास अपनी इंटरनेट आवश्यकताओं के लिए 100 एमबीपीएस है। परिसर में छात्रों को वाईफाई सेवाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं। आईआईएफटी कोलकाता में लिबसिस, प्रोवेस, इंडिया ट्रेडस की सेवाओं को स्थानीय रूप से आईआईएफटी कोलकाता की डिजिटल लैब से सुविधा दी गई है, जो छात्र पहुंच के लिए 30 नवीनतम मॉडल कंप्यूटरों से सुसज्जित है। कोलकाता परिसर में ऑनलाइन प्रमाण–पत्र और कार्यकारी कार्यक्रमों का संचालन करने के लिए एक ऑनलाइन कक्षा स्टूडियो भी है।

कोलकाता परिसर पर कंप्यूटर केंद्र।

कोलकाता केंद्र का पुस्तकालय

कोलकाता केंद्र पर पुस्तकालय परंपरागत संसाधनों के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक तथा वास्तविक जानकारी सहित धीरे–धीरे विकसित हो रहा है। पुस्तकालय में प्रबंधन एवं इससे संबंधित मुद्दों पर 4000 से अधिक पुस्तकें एवं सीडी तथा 89 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्रित जर्नल्स उपलब्ध हैं। अधिकांशतः सभी व्यावसायिक दैनिक समाचार पत्र भी इसके आवधिक खंड में उपलब्ध हैं। यहाँ प्रबंधन, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, गणित, विपणन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, मनोविज्ञान, अनुसंधान परिचालन, कारोबारी संचार, विज्ञापन तथा सामान्य पठनीय आदि दस्तावेजों को संग्रह किया गया है। यह मुख्यतः संस्थान के संकाय, छात्रों, शोध छात्रों, संस्थान सदस्यों, सलाहकारों के लिए है। पुस्तकालय में मुख्य रूप से संसाधन अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं जैसे – बंगाली, हिंदी, स्पेनिश, जर्मन, इटेलियन, फ्रेंच में उपलब्ध हैं।

संग्रह ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस सूची (ओपीएसी) तथा प्रसारण बार कोडिड प्रणाली की सुविधा के साथ पूरी तरह से स्वचालित है। पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं को सरकारी छुट्टियों को छोड़कर वर्ष भर सेवाएं प्रदान करता है।

कोलकाता परिसर पर पुस्तकालय।

ई–ब्रेरी

पुस्तकालय अपने **ई–ब्रेरी** नामक वर्चुअल रिसोर्सेज से सुसज्जित है, जो हर समय उपलब्ध रहता है। **ई–ब्रेरी** के माध्यम से भारत सहित विश्व के शेष देशों से संबंधित एक बड़ी संख्या में पूर्ण पाठ **जर्नल आर्टिकल**, उद्योग प्रोफाइल, कंट्री रिपोर्ट, किताब, व्यापार प्रकाशन, समाचार–पत्र, विश्लेषणात्मक टिप्पणी, वार्षिक रिपोर्ट, उद्योग आँकड़े एवं सूचकांक, नियम, वित्तीय आँकड़े, समाचार विश्लेषण, कार्यालयी राजपत्र, प्रेस विज्ञप्ति, रैंकिंग और प्रशासनिक ढांचा, कृषि, बैंक एवं वित्तीय संस्थान, सिविल आपूर्ति तथा उपभोक्ता मामले, कंपनी, सहकारिता, अपराध एवं कानून, जनसांख्यिकी, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, मतदाता आँकड़े, पर्यावरण एवं प्रदूषण, विदेश व्यापार, वन और वन्य जीवन, भौगोलिक आँकड़े, स्वास्थ्य, आवासन, उद्योग, बीमा, श्रम एवं कार्यबल, बाजार पूर्वानुमान, मीडिया, मौसम के आँकड़े, खान और खनिज, पेट्रोलियम, विद्युत, सामाजिक एवं कल्याण योजनाएं, खेल, राज्य एवं संघ शासित प्रदेश, दूरसंचार, पर्यटन, परिवहन, शहरी

क्षेत्रों, भारत एवं विश्व के शेष देशों के गाँवों के लिए **सांख्यिकी आँकड़े ई–ब्रेरी** के माध्यम से उपलब्ध हैं।

ये सूचनाएं लाईसेंसधारी डेटाबेस जैसे **इबस्को, प्राक्युस्ट, इमराल्ड, ब्लैकवैल, सीएमआईई, जेस्टोर, आईएसआई इमर्जिंग मार्केट्स, इंडियास्टेट, वर्ड ट्रेड ऑनलाइन, आईएमएफ डेटाबेसिस, ओईसीडी ऑनलाइन, वर्ल्ड ट्रेड एटलस, साईंस डाइरेक्ट** और अन्य जो इस सूची में नहीं हैं, के माध्यम से उपलब्ध होती हैं।

इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय निकट भविष्य में आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने तथा अपने प्रयोगकर्ताओं से अनुसंधान आधारित और अधिक सूचनाएं प्राप्त करने की योजना बना रहा है।

पुस्तक प्रदर्शनी

पुस्तकालय द्वारा 11 दिसंबर 2019 को कोलकाता परिसर में अपनी 5वीं पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन केंद्र प्रमुख डॉ. के. रंगराजन द्वारा किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए शीर्षकों के साथ पुस्तकालय के संग्रह को मजबूत करना था। प्रदर्शनी में 5000 से अधिक पुस्तकों के साथ 20 बुक स्टॉल लगाए गए, जो ज्यादातर प्रबंधन और संबद्ध विषयों पर केंद्रित थे। फिक्शन, नॉन–फिक्शन किताबें भी प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई। संकाय सदस्यों, स्टाफ और छात्रों के लिए पुस्तकालय हेतु पुस्तकों की सिफारिश करने के लिए प्रावधान था। इस दौरान प्रदर्शनी में 16 से अधिक प्रकाशकों और विक्रेताओं ने भाग लेकर प्रदर्शनी को सफल बनाया।

आईआईएफटी, कोलकाता केंद्र पर वाणिज्य सचिव का दौरा

भारत सरकार के वाणिज्य सचिव श्री अनूप वधावन के साथ श्री भूपिंदर एस. भल्ला, अपर सचिव ने 14 अगस्त 2019 को आईआईएफटी, कोलकाता केंद्र का दौरा किया। इस दौरान माननीय सदस्यों के साथ छात्रों और सदस्यों के बीच बातचीत के दौर का आयोजन किया गया। पर्यावरण को बचाने के उद्देश्य से वाणिज्य सचिव की उपस्थिति को चिह्नित करते हुए वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

केंद्र प्रमुख डॉ. के. रंगराजन के साथ वाणिज्य सचिव श्री अनूप वधावन कोलकाता परिसर में वृक्षारोपण करते हुए। (14 अगस्त 2019)

यदि मैं अपने अनंत दोषों के बावजूद खुद से प्यार करता हूँ, तो मैं कुछ दोषों की झलक से कैसे किसी से नफरत कर सकता हूँ।

स्वामी विवेकानंद

संस्थान की उपलब्धियाँ

विभिन्न सर्वेक्षणों में आईआईएफटी की रैंकिंग

स्थापना दिवस

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान द्वारा गत वर्ष की भांति अपना 56वां स्थापना दिवस समारोह 02 मई 2019 को बड़े उत्साह एवं जोश के साथ मनाया गया। स्थापना दिवस समारोह संस्थान के सभागार में पूर्वाह्न 11 बजे आयोजित किया गया। इस दिन संस्थान अपने इतिहास को दोहराता है, जिसने जमीनी स्तर से अपनी शुरूआत कर भारत के प्रमुख बी–स्कूलों में अपना स्थान बनाया है। यह संस्थान सदस्यों के लिए बड़े सम्मान और गर्व का विषय है। इस अवसर पर संस्थान के सेवानिवृत्त व कार्यरत सदस्यों के योगदान को स्मरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, डीन प्रोफेसर डॉ. विजया कट्टी तथा कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी द्वारा की गई।

प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी संस्थान के 56वें स्थापना दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए तथा मंच पर डॉ. विजया कट्टी एवं कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता। (2 मई 2019)

पुस्तक का विमोचन

स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा एक पुस्तक ''ए बेसिक गाइड फोर इंटरनेशनल बिजनेस'' का विमोचन किया गया। पुस्तक के संबंध में डॉ. विजया कट्टी ने जानकारी देते हुए बताया कि यह पुस्तक विदेश व्यापार करने वालों के लिए बहुत ही उपयोगी है। इस प्रकार का प्रकाशन अभी तक केवल संस्थान द्वारा ही किया गया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विभिन्न पहलुओं पर आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

''ए बेसिक गाइड फोर इंटरनेशनल बिजनेस'' के विमोचन के अवसर पर निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत एवं संस्थान के गणमान्य सदस्य। (2 मई 2019)

गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के 12वें अंक का विमोचन

हर वर्ष की भांति स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए किए गए प्रयासों के तहत प्रकाशित हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के 12वें अंक का विमोचन किया गया। संस्थान के हिंदी कक्ष द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए विगत 11 वर्षों से लगातार गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' का हिंदी में प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में संस्थान के सदस्यों एवं छात्रों की मौलिक रचनाओं को स्थान दिया जाता है। पत्रिका हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती के अवसर पर संस्थान सदस्यों से गाँधीजी की विचारधारा एवं दर्शन की प्रासंगिकता के संबंध में उन्हें समर्पित लेख प्राप्त हुए, जिन्हें पत्रिका में विशेष परिशिष्ट के रूप में मुद्रित किया गया।

संस्थान के 56वें स्थापना दिवस के अवसर पर हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' के 12वें अंक का विमोचन करते हुए संस्थान के गणमान्य सदस्य। (2 मई 2019)

महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 को महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था, जिसका अनुपालन करते हुए स्थापना दिवस के अवसर पर ''महात्मा गाँधी के नैतिक नेतृत्व और शासन में इसकी प्रासंगिकता'' विषय पर विशेष व्याख्यान देने के लिए प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक श्रीमती शोभना राधाकृष्णा, मुख्य कार्याधिकारी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने गाँधीजी के नैतिक नेतृत्व को उल्लेखित करते हुए शासन में इसकी प्रासंगिकता पर विस्तृत जानकारी दी और उनके आदर्शों से परिचित कराया। इसी कड़ी में, सुश्री सरस्वती ने गाँधीजी के पसंदीदा भजनों को अपनी मधुर आवाज से प्रस्तुति दी जिसे हॉल में उपस्थित दर्शकों सहित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े कोलकाता केंद्र के सभी सदस्यों ने बड़े मनोयोग से सुना और आनंद लिया।

स्थापना दिवस के अवसर पर गाँधीजी के पसंदीदा भजनों को अपनी मधुर आवाज देती हुई सुश्री सरस्वती व आईआईएफटी परिवार के सदस्यगण। (2 मई 2019)

मूल्यांकन एवं विकास केंद्र का उद्घाटन

उक्त समारोह के पश्चात, निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा प्रशासन भवन के बेसमेंट बी–1 में स्थित आईआईएफटी, नई दिल्ली के **मूल्यांकन एवं विकास केंद्र (साइकोमेट्रिक प्रयोगशाला)** का उद्घाटन औपचारिक रूप से किया गया। उल्लेखनीय है कि केंद्र का विजन मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एवं विकास सेवाओं के माध्यम से मानव संसाधन की पहचान करने तथा विकसित करने के लिए संगठन की प्रभावशीलता एवं कर्मचारियों की भागीदारी को अधिकतम करने में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना है। संभावित क्षेत्र जहाँ एडीसी अपनी सेवाएं दे सकते हैं, वे हैं – कॅरियर काउंसलिंग, पर्सनैलिटी प्रोफाइलिंग, एंटरप्रेन्योरियल ट्रिट आइडेंटिटी, लीडरशिप डेवलपमेंट आदि। एडीसी के पास अनुभवी संकाय है और मानव संसाधन प्रबंधन, व्यवहार विज्ञान, विपणन, वित्त, संचालन, व्यापार और व्यवसाय के क्षेत्र में समान रूप से विशेषज्ञता और दक्षता है।

संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर मूल्यांकन एवं विकास केंद्र (साइकोमेट्रिक प्रयोगशाला) का औपचारिक उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत। (2 मई 2019)

संस्थान का 53वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) का 53वाँ दीक्षांत समारोह 8 अगस्त 2019 को संस्थान के नई दिल्ली परिसर में आयोजित किया गया। संस्थान के इस महत्वपूर्ण समारोह में, मुख्य अतिथि, श्री हरदीप सिंह पुरी, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आवासन एवं शहरी कार्य तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय और राज्य मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय को आमंत्रित किया गया। उन्होंने आईआईएफटी जैसे विशेष संस्थानों के बढ़ते महत्व पर जोर दिया और आईआईएफटी के अनुसंधान आधारित परामर्श तथा कॉर्पोरेट बैठकों के मजबूत योगदान की सराहना की। इस अवसर पर पीएचडी, पूर्णकालिक एमबीए, सप्ताहांत एमबीए कार्यक्रम के छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। समारोह के दौरान आईआईएफटी के प्रबंधन बोर्ड के गणमान्य सदस्य, संकाय सदस्य तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

53वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि, श्री हरदीप सिंह पुरी, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आवासन एवं शहरी कार्य तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय और राज्य मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा मंच पर उपस्थित संस्थान के गणमान्य सदस्य। (8 अगस्त 2019)

इस अवसर पर उपस्थित डॉ. अनूप वधावन, वाणिज्य सचिव और अध्यक्ष, आईआईएफटी ने माननीय मंत्री महोदय द्वारा संस्थान की प्रशंसा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए आईआईएफटी के प्लेसमेंट को पूरक बताया और पूर्व छात्रों द्वारा संस्थान को वैश्विक ऊंचाइयों पर ले जाने की बात कही तथा इसका श्रेय संस्थान की शिक्षण पद्धति व विदेशी भाषाओं सहित अद्वितीय पाठ्यक्रम को दिया। इसके साथ ही उन्होंने सेंटर फॉर ट्रेड फैसिलिटेशन एंड लॉजिस्टिक्स (सीटीएफएल) के साथ–साथ डब्ल्यूटीओ स्टडीज, सेंटर फॉर रिसर्च इन ट्रेड (सीआरटी), सेंटर फॉर ट्रेड एंड इनवेस्टमेंट लॉ (सीटीआईएल) तथा सेंटर फॉर एनई स्टडीज (सी–नेस्ट) कोलकाता के लिए नीति निर्माण में विस्तारित आईआईएफटी की मजबूत भूमिका को स्वीकार किया। उन्होंने मैदान गढ़ी में आगामी परिसर के लिए संस्थान को सरकारी समर्थन जारी रखने का भी वादा किया।

एमबीए–2018 की छात्रा को डिग्री प्रदान करते हुए श्री हरदीप सिंह पुरी, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आवासन एवं शहरी कार्य तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय और राज्य मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, डॉ. अनूप वधावन, वाणिज्य सचिव और अध्यक्ष, आईआईएफटी, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत व डॉ. विजया कट्टी, डीन प्रशासन (शैक्षिक)। (8 अगस्त 2019)

समारोह के अंत में, प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी ने वार्षिक रिपोर्ट पेश करते हुए विदेशी व्यापार में विस्तार, विस्तार और बेंचमार्किंग के माध्यम से आईआईएफटी की यात्रा का वर्णन किया। उन्होंने कहा, आईआईएफटी एक ऐतिहासिक संस्था है जो न केवल भारत में एक अग्रणी बी–स्कूल है, बल्कि देश का एक प्रमुख थिंक टैंक, मानव संसाधन विकास के लिए एक व्यापक मान्यताप्राप्त केंद्र भी है।

आईआईएफटी परिसर में रिकॉर्ड संख्या में भर्तीकर्ताओं द्वारा सबसे बड़े बैच का अंतिम प्लेसमेंट

आईआईएफटी, परिसर में 125 से अधिक रिकॉर्ड कंपनियों की मेजबानी के साथ, अपने अब तक के सबसे बड़े बैच के अंतिम नियोजन की गवाह बनी। प्रति वर्ष 75 लाख की चौंका देने वाली उच्चतम पेशकश के साथ, औसत पैकेज बढ़कर 20.48 लाख प्रति वर्ष हो गया और औसत 18.2 लाख प्रति वर्ष तक बढ़ गया। इस वर्ष बैच आकार में 14 प्रतिशत की वृद्धि के बावजूद, औसत पैकेज में वृद्धि देखी गई। समर इंटर्नशिप के पश्चात, बैच के बड़े 28 प्रतिशत उम्मीदवारों को नए और पुराने शानदार भर्तीकर्ताओं से प्रतिष्ठित प्री–प्लेसमेंट पेशकश मिली।

इस वर्ष आईआईएफटी के साथ 41 नई जुड़ी कंपनियों में कुछ सबसे बड़े संगठन शामिल थे। बीएफएसआई क्षेत्र में, पहली बार एचडीएफसी बैंक और फेडरल बैंक ने भर्ती की। मार्की रिक्रूटर्स जैसे गोल्डमैन सॅक्स, जेपी मॉर्गन एंड चेस, डी.ई. शॉ, यस बैंक, सिटी बैंक आदि ने आईआईएफटी की प्रतिभाओं में अपना विश्वास व्यक्त करना जारी रखा। बिक्री और विपणन के क्षेत्र में, हमारी विरासत के भर्तीकर्ताओं में डॉबर, आईटीसी, हीरो मोटोकॉर्प, एचटी मीडिया, एलएंडटी, रेमण्ड, टाटा स्काई, टाटा कंसल्टेंसी सर्विस, टीवीएस और राम ग्रुप आदि शामिल हैं। रणनीति और परामर्श में शीर्ष भर्तीकर्ताओं में मैकिन्से एंड कंपनी, रोलैंड बर्जर, बैन एंड कंपनी, कॉग्निजेंट बिजनेस कंसल्टिंग, माइकल पेज और इंफोसिस मैनेजमेंट कंसल्टिंग शामिल थे।

आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत ने पुराने और नए भर्तीकर्ताओं का आईआईएफटी तथा उसके छात्रों में उनके निरंतर समर्थन और विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया। आईआईएफटी, पूरे नियोजन चक्र के दौरान पूर्व छात्रों के दृढ़ समर्थन के लिए अपने पूर्व छात्रों का आभार व्यक्त करता है और आगामी अभियानों में भी उसे जारी रखने की आशा करता है।

समझौता ज्ञापन

उत्तर–पूर्वी परिषद, शिलांग के साथ समझौता ज्ञापन

उत्तर–पूर्वी परिषद (एनईसी), शिलांग और भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), नई दिल्ली के बीच 22 मई 2019 को उत्तर–पूर्वी परिषद सचिवालय, शिलांग में एनईसी को 'अत्याधुनिक' संसाधन केंद्र के तौर पर विकसित करने की पहल के एक भाग के रूप में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

एनईसी और आईआईएफटी कोलकाता के अधिकारियों की उपस्थिति में आईआईएफटी की ओर से डॉ. के. रंगराजन, केंद्र प्रमुख, आईआईएफटी–कोलकाता और श्री राम म्यूइवा, सचिव, एनईसी ने हस्ताक्षर किए।

उत्तर–पूर्वी परिषद (एनईसी), शिलांग और भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) के बीच समझौता ज्ञापन के अवसर पर डॉ. के. रंगराजन, केंद्र प्रमुख, आईआईएफटी–कोलकाता और श्री राम म्यूइवा, सचिव, एनईसी व अन्य गणमान्य सदस्य। (22 मई 2019)

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा विभाग (एमएसएमई एंड टी), पश्चिम बंगाल सरकार के साथ समझौता ज्ञापन

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), नई दिल्ली और कोलकाता केंद्र ने 12 दिसंबर, 2019 को बिजनेस कॉन्क्लेव का आयोजन किया। इस दौरान दीघा में राज्य से निर्यात को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्श एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों तथा उद्यमिता के क्षेत्र में परामर्श और आउटरीच के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा (एमएसएमई एंड टी) विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के

साथ एक समझौता ज्ञापन पर सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। इस कार्यक्रम में श्री राजेश पांडे, सचिव, एमएसएमई विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, डॉ. के. रंगराजन, केंद्र प्रमुख, आईआईएफटी कोलकाता और डॉ. दीपांकर सिन्हा, प्रमुख अनुसंधान विभाग, कोलकाता ने भाग लिया।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं कपड़ा (एमएसएमई एंड टी) विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार व आईआईएफटी के बीच समझौता ज्ञापन के अवसर पर सुश्री ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार व डॉ. के. रंगराजन, केंद्र प्रमुख, आईआईएफटी कोलकाता व अन्य गणमान्य सदस्य। (12 दिसम्बर 2019)

सोलब्रिज इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस के साथ समझौता ज्ञापन

संस्थान ने 26 अगस्त 2019 को सोलब्रिज इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस, वूसॉन्ग यूनिवर्सिटी, साउथ कोरिया के साथ पांच साल की अवधि के लिए छात्र/संकाय विनिमय और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

नई अनुसंधान परियोजनाएं

- संगठित डेयरी क्षेत्र के लिए डेयरी उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए "रोडमैप और रणनीतियों पर अध्ययन

  संस्थान उपरोक्त विषय पर राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) द्वारा प्रायोजित अनुसंधान अध्ययन कर रहा है। देश में डेयरी उद्योग, विशेष रूप से संगठित डेयरी क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ–साथ घरेलू स्तर पर भी कई चुनौतियों का सामना करना है। इस अध्ययन का उद्देश्य डेयरी उत्पादों के लिए निर्यात प्रोत्साहन रणनीतियों का सुझाव देना और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता, मूल्य निर्धारण रणनीतियों और विपणन योग्य अधिशेष की उपलब्धता में सुधार व उत्पादों की गुणवत्ता आदि के संदर्भ में डेयरी उद्योग के लिए एक रोडमैप तैयार करना है।

- 2020–2025 की अवधि के लिए नई वित्तीय सहायता योजना के गठन पर अध्ययन

  यह अनुसंधान अध्ययन 20.00 लाख रुपए की लागत के साथ एपीडा द्वारा प्रायोजित है। इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य एपीडा के लिए निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं की एक व्यापक रूपरेखा तैयार करना है। इसमें मौजूदा प्रोत्साहनों को चरणबद्ध करने और डब्ल्यूटीओ की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्यात प्रोत्साहन के लिए समकालीन, नए प्रोत्साहन को पेश करने के लिए एक पूर्ण रूपरेखा भी शामिल होगी।

- वर्ष 2018–19 के लिए सीएसआर परियोजनाओं के मूल्यांकन का अध्ययन

  उपरोक्त विषय पर जारी अनुसंधान अध्ययन 4.72 लाख रुपए की लागत के साथ सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) द्वारा प्रायोजित है। इस अध्ययन का उद्देश्य वर्ष 2018–19 में प्रायोजित संस्था द्वारा की गई कॉर्पोरेट सामाजित दायित्व पहलों का उनकी मौजूदा स्थिति में मूल्यांकन करना और यह सत्यापित करना है कि डीपीई द्वारा बनाई गई नीति के अनुरूप हैं और परियोजना की प्रभावशीलता का आकलन करना एवं इसके परिणाम और विभिन्न हितधारकों पर प्रभाव को बताना है।

उत्कृष्ट उपलब्धि

आईआईएफटी के प्रकाशन अनुभाग द्वारा तिमाही पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। वर्ष 2019 के दौरान पत्रिकाओं के प्रकाशन की श्रृंखला में संस्थान की तिमाही पत्रिका फोकसडब्ल्यूटीओ. आईबी (FOCUSWTO.IB) के लिए जर्मनी से प्राप्त अपने प्रथम अंतरराष्ट्रीय अंशदान के तौर पर एक उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल की है।

विदेशी प्रतिनिधियों का दौरा

कोलकाता केंद्र के अनुसंधान विभाग (प्रबंधन) द्वारा 2 जनवरी 2020 को प्रथम संकाय वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित किया

गया। फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी– सेंटर फॉर इंटरनेशनल बिजनेस एंड रिसर्च द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय के साथ वार्तालाप के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका से आए संकाय प्रतिनिधिमंडल की एक टीम ने आईआईएफटी कोलकाता परिसर का दौरा किया।

कोलकाता केंद्र पर फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी– सेंटर फॉर इंटरनेशनल के संकाय प्रतिनिधिमंडल के साथ संस्थान के संकाय सदस्यों का समूह फोटो। (2 जनवरी 2020)

डॉ. टॉम रॉबिन्सन, अध्यक्ष एवं सीईओ, एएसीएसबी इंटरनेशनल

एएसीएसबी इंटरनेशनल के प्रेसिडेंट एवं सीईओ, डॉ. टॉम रॉबिन्सन एएसीएसबी इंटरनेशनल ने "ग्लोबल ट्रेंड्स इन बिजनेस एजुकेशन और एएसीएसबी एक्रेडिटेशन के बेनिफिट्स" पर भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में संबोधित करते हुए कहा कि बी–स्कूलों को बिजनेस कम्युनिटी के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की जरूरत है ताकि कल के कारोबारी दुनिया के स्नातकों के पाठ्यक्रम में अभिनव कार्यक्रम सम्मिलित करते हुए उन्हें रोजगारपरक बनाया जा सके।

एएसीएसबी इंटरनेशनल के प्रेसिडेंट एवं सीईओ, डॉ. टॉम रॉबिन्सन एएसीएसबी इंटरनेशनल के साथ संस्थान के निदेशक प्रो. मनोज पंत व अन्य संकाय सदस्य/अधिकारीगण।

एएसीएसबी के मान्यता मानक काफी कठोर हैं और एक स्कूल को इन मानकों के अनुरूप होने और प्रारंभिक मान्यता प्राप्त करने में पाँच से सात साल लग सकते हैं। वर्तमान में, एएसीएसबी के पास 100 से अधिक देशों में लगभग 1,700 सदस्य हैं और लगभग 850 ने एएसीएसबी मान्यता अर्जित की है। इसी तरह, लगभग 188 संस्थानों ने अपने लेखांकन कार्यक्रमों के लिए अतिरिक्त, विशेष एएसीएसबी मान्यता अर्जित की है।

भारत में, 57 बी–स्कूल एएसीएसबी के सदस्य हैं और अब तक केवल 10 ने एएसीएसबी की मान्यता प्राप्त की है और लगभग 20 पाइपलाइन में हैं, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), नई दिल्ली और कोलकाता उनमें से एक है।

डॉ. सैयद मुनीर, चेयरमैन, इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिसी, एडवोकेसी एंड गवर्नेंस (आईपीएजी), बांग्लादेश

उन्होंने 'विदेशी व्यापार और निवेश पर आपसी सहयोग कैसे स्थापित करें' विषय पर एक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, डॉ. विजया कट्टी, डीन, प्रशासन (शैक्षिक), डॉ. जे. सिम्स तथा अन्य आईआईएफटी संकाय व छात्र उपस्थित रहे।

प्रोफेसर जोशुआ ऐजमैन, अर्थशास्त्र और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में डॉकसन चेयर, यूएससी एंड एनबीईआर व सह–संपादक, जर्नल ऑफ इंटरनेशनल मनी एंड फाइनेंस

उन्होंने एमबीए 2018–20 बैच के छात्रों के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्त के विभिन्न विषयों पर 22–26 जुलाई 2019 तक एक गहन पाठ्यक्रम लिया। उन्होंने आईआईएफटी में अपने शिक्षण कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित विषयों की जानकारी दी जैसे–

(i) वैश्विक/वित्तीय संकट का विश्लेषणः प्रभाव और पुनर्प्राप्ति।

(ii) वित्तीय संकट और उभरती अर्थव्यवस्थाएँ।

(iii) विनिमय दर व्यवस्था और व्यापार।

(iv) विकासशील देशों के संदर्भ में पूंजी नियंत्रण नीतियों के मैक्रो और व्यापार प्रभाव।

आईआईएफटी ने चतुर्थ सर्वाधिक प्रतिस्पर्धी बी–स्कूल–2019 का खिताब जीता

किसी शहर के निर्माण के लिए एक टीम होती है! सीएनबीसी टीवी 18 द्वारा आयोजित डेयर2 कंपीट अवार्ड प्रतियोगिता में संस्थान के छात्रों की टीम ने भाग लिया। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के सभी बिजनेस लीडर्स की टीम ने चतुर्थ सर्वाधिक प्रतिस्पर्धी बी–स्कूल–2019 का खिताब दिलाया।

चर्चाएं

प्रथम दौर

"विनियामक बाधाओं और सेवाओं में व्यापार – एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य

संस्थान वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त शासी संस्थान है, यह वाणिज्य मंत्रालय द्वारा अधिकृत 'सेवा व्यापार प्रतिबंध सूचकांक' विकसित करने पर एक अध्ययन कर रहा है। अध्ययन का उद्देश्य ओईसीडी के सूचकांक के लिए एक विकल्प विकसित करना है, जो सैद्धांतिक और अनुभवजन्य रूप से उन्नत हो।

इस पहल के एक हिस्से के रूप में प्रथम दौर की चर्चा का आयोजन 21 अगस्त 2019 को नई दिल्ली कैंपस में 'रेगुलेटरी बैरियर्स एंड ट्रेड इन सर्विसेस – ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव' पर किया गया। इस चर्चा का उद्देश्य कई नीति क्षेत्रों की प्रकृति और महत्व का बारीकी से जांच करना था जैसे कि विदेशी प्रवेश पर प्रतिबंध, लोगों का आंदोलन, नियामक पारदर्शिता, प्रतिस्पर्धा में बाधाएं और अन्य भेदभाव के साथ–साथ तीन पेशेवर सेवाओं के निर्यात और आयात को प्रभावित करने वाले गैर–भेदभावपूर्ण व्यवहार अर्थात कानूनी, लेखा/लेखा परीक्षा और वास्तुकला सेवाएं।

द्वितीय एवं तृतीय दौर

उपरोक्त विषय पर द्वितीय एवं तृतीय दौर की चर्चा का आयोजन क्रमशः 16 अक्टूबर 2019 और 8 नवंबर 2019 को आईआईएफटी, नई दिल्ली परिसर में किया गया। पुनः 'सेवा व्यापार प्रतिबंध सूचकांक' – एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य' पर चर्चा हुई। इस दौरान भी उद्देश्य कई नीति क्षेत्रों की प्रकृति और महत्व का बारीकी से जांच करना था। यह आशा की जाती है कि मंत्रालय और आईआईएफटी द्वारा अध्ययन उस समय नए विचारों को निरस्त कर देगा जब सेवा व्यापार उदारीकरण को विभिन्न बहुपक्षों और बहुपक्षीय मंचों पर आगे ले जाया जाता है।

'रेगुलेटरी बैरियर्स एंड ट्रेड इन सर्विसेस – ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव' पर चर्चा के दौरान सहभागियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत। (8 नवंबर 2019)

संगोष्ठी श्रृंखला

ब्रेक्सिट की तैयारी – भारत के लिए बिजनेस और आर्थिक प्रभाव

संस्थान में 23 दिसम्बर 2019 को 'ब्रेक्सिट की तैयारी – भारत के लिए बिजनेस और आर्थिक प्रभाव' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अतुल मिश्रा, प्लायमाउथ बिजनेस स्कूल, यूके को आमंत्रित किया गया। डॉ. मिश्रा डेवलपमेंट स्टडीज एसोसिएशन, इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ स्मॉल बिजनेस और इंडियन काउंसिल ऑफ लेबर इकोनॉमीज जैसे कई संघों के सदस्य हैं। उनकी शिक्षण रुचि अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय से लेकर कॉर्पोरेट वित्त तक है। डॉ. मिश्रा ने 'ब्रेक्सिट – इट्स बिजनेस एंड इकोनॉमिक इम्प्लिमेंट्स फॉर इंडिया' पर एक व्याख्यान दिया और 'ब्रेक्सिट' के बारे में अंतर्दृष्टि साझा की कि कैसे 'ब्रेक्सिट' भारतीय कंपनियों के लिए एक अवसर के रूप में कार्य करेगा।

'ब्रेक्सिट की तैयारी – भारत के लिए बिजनेस और आर्थिक प्रभाव' पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान आमंत्रित अतिथि वक्ता डॉ. अतुल मिश्रा, प्लायमाउथ बिजनेस स्कूल, यूके व कार्यक्रम से संबंधित सदस्यों का समूह फोटो। (23 दिसम्बर 2019)

आईसीटी के लघु प्रभाव और कारणों का अध्ययनः विकासशील देशों में शहरी एमएसएमईज की व्यवस्थित समीक्षा

यह संगोष्ठी एक व्यवस्थित समीक्षा पर आधारित रही, जो 26 अप्रैल 2019 को आयोजित की गई। मुख्य वक्ता के रूप में पी. विग्नेश्वराइलवरसन (पीएचडी – आईआईटी कानपुर), एसोसिएट प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली को आमंत्रित किया गया।

इस दौरान यह जांचा गया कि नेटवर्क–युक्त उपकरणों के माध्यम से व्यावसायिक–प्रासंगिक जानकारी कम और मध्यम आय वाले देशों में शहरी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमईज) की आंतरिक दक्षता, व्यावसायिक विकास को बढ़ाती है या नहीं। समीक्षा में पाया गया कि मोबाइल फोन के अधिक उपयोग से व्यावसायिक कॉल की संख्या बढ़ जाती है; आईसीटी के उपयोग से श्रम उत्पादकता का अनुमान होता है; नेटवर्क डिवाइस परिचालन समर्थन, रणनीतिक विकास, प्रक्रिया और परिचालन निष्पादन में सुधार करते हैं। साथ ही, मोबाइल फोन खरीदने के बाद ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है। उच्च आईसीटी व्यय के परिणामस्वरूप टर्न ओवर में बढ़ोतरी होती है। मोबाइल मनी के इस्तेमाल से लाभांश बढ़ता है।

> **ब्रह्मांड में पहले से ही सभी शक्तियां हमारी हैं। यह हम ही हैं, जिन्होंने अपनी आंखों पर हाथ रखे हैं और रो रहे हैं कि अंधेरा है।**
>
> **स्वामी विवेकानंद**

आईआईएफटी संकाय की महत्वपूर्ण भागीदारी/उपलब्धियाँ

डॉ. सतिंदर भाटिया, प्रोफेसर एवं प्रमुख ईएमपी विभाग

- आईआईएफटी की प्रोफेसर डॉ. सतिंदर भाटिया को 8 जून 2019 को नई दिल्ली में इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा आयोजित ''इंडियन इकोनॉमिक आउटलुक 2019: द स्ट्रैटेजी'' में एक पैनलिस्ट/विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

डॉ. शीबा कपिल, प्रोफेसर

- डॉ. शीबा कपिल, प्रोफेसर, आईआईएफटी ने इंडियन बिजनेस रिसर्च जर्नल में प्रकाशित ''बोर्ड कैरेक्टेरिस्टिक्स एंड फर्म वैल्यू फॉर इंडियन कंपनीज'' शीर्षक के उच्च सराहना प्राप्त पेपर के लिए एमरल्ड लिटरिरी अवार्ड्स, 2019 प्राप्त किया।

डॉ. के. रंगराजन, प्रोफेसर एवं प्रमुख, कोलकाता सेंटर

- डॉ. के. रंगराजन, प्रमुख कोलकाता सेंटर को भारतीय निर्यात संगठनों का संघ (फीयो) उत्कृष्टता पुरस्कार 2017 और 2018 के जूरी सदस्य के रूप में नामित किया गया है।

डॉ. पी.के. दास, प्रोफेसर

- जे.डी. बिरला संस्थान (प्रबंधन विभाग) (जादवपुर विश्वविद्यालय के तहत) द्वारा 10 मई 2019 को आयोजित ''डिजिटल मार्केटिंग'' शीर्षक से एमडीपी में ''बिग डेटा एनालिटिक्स'' पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया।
- भारतीय विद्या भवन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंस, कोलकाता में 22 मई 2019 को इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स द्वारा आयोजित ''सामरिक व्यापार निर्णय और निष्पादन प्रबंधन के लिए डेटा विज्ञान का अनुप्रयोग'' शीर्षक से पैनल चर्चा में प्रख्यात पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।

डॉ. बिबेक राय चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर

- भारत से मसालों के निर्यात और मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात के लिए निर्यात रणनीति परियोजना के एक सदस्य के रूप में रहे। (प्रायोजक: मसाला बोर्ड)
- भारत–ब्रिटेन व्यापार और निवेश की संभावनाएं: अवसरों और चुनौतियों का एक आकलन परियोजना के एक सदस्य के रूप में रहे। (प्रायोजक: यूकेएआईडी)

डॉ. बसंता के साहू, एसोसिएट प्रोफेसर

- साईनोड कालेज, शिलांग, पी.ए. संगमा फाउंडेशन और मेघालय बेसिन विकास प्राधिकरण, शिलांग, मेघालय द्वारा 6–7 जून 2019 को आयोजित, जल संकट को समझना: आगे का मार्ग पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ''जल और विकास'' पर एक सत्र (पांचवां तकनीकी सत्र) की अध्यक्षता की।
- आईएचडी, दिल्ली, नीति आयोग और आईसीएसएसआर, नई दिल्ली द्वारा 13–15 जून 2019 को आयोजित "भारत में वृद्धि और क्षेत्रीय विकास: हाल के अनुभव और उभरते परिप्रेक्ष्य" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- नीति अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नीति संवाद ''भारत की 21वीं सदी के परिवर्तन'', भारत में नौकरियों की चुनौती: मजदूरी, उत्पादकता और अनौपचारिकता की धारणाएं में भाग लिया।

डॉ. सैकत बनर्जी, प्रोफेसर

- डॉ. सैकत बनर्जी, प्रोफेसर को तकनीकी सत्र के लिए चौथे सीआईआई त्रिपुरा पाइनएप्पल फेस्टिवल 2019 के लिए 'रिसोर्स पर्सन' के रूप में आमंत्रित किया गया। 'ब्रैंड वैल्यू बढ़ाने के लिए रानी पाइनएप्पल के जीआई टैगिंग का महत्व' विषय पर उपरोक्त कार्यक्रम प्रज्ञा भवन, अगरतला, त्रिपुरा में 28 जून 2019 को आयोजित किया गया।

डॉ. एम. वेंकटेशन, प्रोफेसर

- डॉ. एम. वेंकटेशन, प्रोफेसर ने मॉस्को में आयोजित 'इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन साइकोलॉजी: द फ्यूचर टुगेदर' में भाग लिया, रूस के यूरोपीय फेडरेशन ऑफ साइकोलॉजिस्ट एसोसिएशनों द्वारा आयोजित रूसी साइकोलॉजिकल सोसायटी और यूरोपियन कांग्रेस ऑफ साइकोलॉजी पर यह कार्यक्रम 2–5 जुलाई 2019 के दौरान आयोजित किया गया।

डॉ. सास्वती त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर

- डॉ. सास्वती त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर ने बिजनेस एंड रिटेल मैनेजमेंट (एबीआरएम) द्वारा 8–9 जुलाई, 2019 के दौरान लंदन में आयोजित 'ग्लोबल इकोनॉमी रीस्ट्रक्चरिंग' (आरओजीई) के 9वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. हिमानी गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर

- डॉ. हिमानी गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर ने 'प्रबंधन शिक्षा 4.0: वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए रणनीतियाँ' कार्यक्रम में भाग लिया। यह कार्यक्रम विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज द्वारा 29–31 अगस्त 2019 के दौरान दिल्ली के पीतमपुरा में आयोजित गया।

डॉ. अरुणिमा राणा, असिस्टेंट प्रोफेसर

- डॉ. अरुणिमा राणा, असिस्टेंट प्रोफेसर ने संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित '2019 अमेरिकन मार्केटिंग एसोसिएशन (एएमए) समर अकादमिक' सम्मेलन में भाग लिया। यह कार्यक्रम 9–11 अगस्त 2019 के दौरान अमेरिकन मार्केटिंग एसोसिएशन द्वारा आयोजित किया गया।

डॉ. प्रतीक माहेश्वरी व डॉ. आशीष गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर

- डॉ. प्रतीक माहेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफेसर और डॉ. आशीष गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, यूके में आयोजित 'एस्टन सर्टिफिकेट प्रोग्राम' में शामिल हुए। यह कार्यक्रम एस्टन बिजनेस स्कूल, एस्टन यूनिवर्सिटी, यूके, एलेक्सा में अगस्त 2019 के दौरान आयोजित किया गया।

डॉ. पापिया घोष, असिस्टेंट प्रोफेसर

- डॉ. पापिया घोष, असिस्टेंट प्रोफेसर ने 29–31 मार्च 2019 के दौरान अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित 'आर्थिक सिद्धांत और नीति' सम्मेलन में "नेटवर्क गठन और सूचना अधिग्रहण का एक मॉडल" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

डॉ. रवि शंकर, प्रोफेसर एवं चेयरपर्सन, आईसीसीडी

- डॉ. रवि शंकर, प्रोफेसर एवं चेयरपर्सन, आईसीसीडी ने 4 अक्टूबर 2019 को एएसीएसबी द्वारा 'एंग्गेजमेंट, इनोवेशन एंड ईपेक्ट' विषय पर आयोजित एक दिवसीय सेमिनार में भाग लिया।

डॉ. एस. बैनर्जी, प्रोफेसर

- डॉ. एस. बैनर्जी, प्रोफेसर, (सह–लेखकः कपूर, एस.) ने प्रबंधन डॉक्टोरल बोलुकियम (एमडीसी), आईआईएफटी कोलकाता में 6 दिसंबर 2019 को आयोजित कार्यक्रम के दौरान 'रोल ऑफ रिटेलर्स इन ट्रांसफोर्मिंग कंज्यूमर ब्रांड रिलेशनशिप ड्यूरिंग ब्रांड स्कैंडल' विषय पर एक पेपर प्रस्तुत किया।

- इंटरनेशनल कल्चरल रिसर्च एंड ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा 19–20 दिसंबर 2019 के दौरान 'रिसोर्स पर्सन' के रूप में आमंत्रित किया गया। इस दौरान शिक्षण पद्धयति व अनुसंधान इकोसिस्टम पर संकाय सदस्यों व रिसर्च स्कॉलर्स के साथ बातचीत की।

डॉ. गिन्नी चावला, असिस्टेंट प्रोफेसर

- डॉ. गिन्नी चावला, असिस्टेंट प्रोफेसर द्वारा 5–6 दिसंबर, 2019 के दौरान बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक), ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन – इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन मैनेजमेंट केसिज (आईसीएमसी) में "द मैरिट पे डाइलिमा एट नियरबाई.कॉम" विषय पर एक केस अध्ययन प्रस्तुत किया।

डॉ. अंकित केशरवानी, असिस्टेंट प्रोफेसर

- डॉ. अंकित केशरवानी, असिस्टेंट प्रोफेसर को 'क्रीडे बंगाल स्टेटकॉन 2019' कार्यक्रम के दौरान 'स्ट्रेदन योवर ब्रांड थ्रू इंटेग्रेटिड मार्केट' सत्र के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन सीबीआरई के सहयोग से क्रीडे द्वारा कोलकाता में आयोजित कराया गया।

आईआईएफटी संकाय द्वारा प्रस्तुतियाँ

डॉ. के. रंगराजन, प्रोफेसर एवं प्रमुख, आईआईएफटी कोलकाता

प्रस्तुति के लिए स्वीकार किए गए कागजात

- झा, एम., चतुर्वेदी, टी. और रंगराजन, के. (2019), पेपर ''सस्टेनेबिलिटी परफारमेंस ऑफ इंडियन कार्पोरेट्सः एन एसडीजी–बेस्ड अप्रोच'' को अकादमी ऑफ ग्लोबल बिजनेस एडवांसमेंट (एजीबीए) सम्मेलन, 2019, आईआईटी दिल्ली में प्रस्तुति के लिए स्वीकार किया गया।

- त्रिपाठी, एस., रंगराजन, के. और तालुकदार, बी. (2019), पेपर ''इम्पैक्ट ऑफ सप्लाई चेन परफारमेंस ऑन प्रोफिटेबिलिटी इन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री'' 8–9 जुलाई 2019 के दौरान ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, ब्रिटेन में आयोजित वैश्विक अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन पर 9वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुति के लिए स्वीकार किया गया।

प्रोफेसर अभिजीत दास, प्रमुख, डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र

- 6 जून 2019 को ''इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स एंड डेवलेपमेंट्स एट द डब्ल्यूटीओ'' पर संस्थान के नालंदा हॉल में प्रस्तुति।

डॉ. बसंता के साहू, एसोसिएट प्रोफेसर

- ''वाटर इंटरवेन्सन्स एंड जेंडर इन ड्रॉट एफेक्टिड एरियाजः ए स्टडी ऑफ पानी–पंचायत इन ओडिशा, इंडिया'' शीर्षक से 6–7 जून 2019 के दौरान 'जल संकट को समझनाः आगे बढ़ने का रास्ता' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित संसाधन व्यक्ति के रूप में एक पेपर प्रस्तुत किया, जिसे शिनोद कॉलेज, शिलांग, पी.ए. संगमा फाउंडेशन और मेघालय बेसिन विकास प्राधिकरण, शिलांग, मेघालय द्वारा आयोजित किया गया।
- अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आईसीबीएएसएस–2019, क्योटो, जापान में 26–28 मार्च 2019 के दौरान ''हाउसहोल्ड ड्रॉट कोपिंग, फूड इनस्युक्यूरिटी एंड जेंडर रिलेशन्स इन टू विलेजिज इन इंडिया'' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

डॉ. दिव्या टुटेजा, असिस्टेंट प्रोफेसर

- भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई), दिल्ली द्वारा आयोजित आर्थिक वृद्धि और विकास पर 14वें वार्षिक सम्मेलन में ''इंटर–लिंकेजिज बिटवीन ब्रिक्स एंड यूएस'' शीर्षक से एक पत्र प्रस्तुत किया।

इसके अलावा, जनवरी 2019 में एक ब्लॉग पर एक पेपर प्रस्तुत किया गया, जिसका विवरण इस प्रकार हैः

- ब्लॉगः विकास कार्यक्रम, सुरक्षा और हिंसा में कमीः भारत में उग्रवाद से साक्ष्य (एच. कैला और एस. सिंघल के साथ), युनाइटेड नेशन्स यूनिवर्सिटी वर्ल्ड इंस्टीट्यूट फॉर डेवलेपमेंट इकोनॉमिक्स रिसर्च (यूएनयूडब्ल्यूआईडीईआर) वेबसाइट, https: //www–wider. unu.edu/publication/development-programmes-security-and-violence-reduction] जनवरी 2019।

डॉ. गिन्नी चावला, असिस्टेंट प्रोफेसर

- ईयूआरएएम द्वारा आईएससीटीई–आईयूएल विश्वविद्यालय, लिस्बन, पुर्तगाल में 25–28 जून 2019 के दौरान आयोजित ''यूरोपियन एकेडमी ऑफ मैनेजमेंट (ईयूआरएएम) सम्मेलन में'' सेल्फ परसीव्ड एम्पलायबिलिटी एंड एकेडेमिक एंगेजमेंट इन हायर एजुकेशन शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में देवनागरी को भारत की राजभाषा हिंदी की आधिकारिक लिपि स्वीकार किया गया है। देवनागरी मात्र हिंदी की ही लिपि नहीं है संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल संस्कृत, मराठी, डोगरी, बोडो, नेपाली, मैथिली आदि भाषाओं की आधिकारिक लिपि भी है। संथाली, कोंकणी तथा सिंधी के अतिरिक्त अपभ्रंश और प्राकृत भी नागरी में ही लिखी जाती हैं। भारत के संविधान निर्माता इतने नासमझ नहीं थे कि वे बिना सोचे–समझे नागरी लिपि को राज भाषा हिंदी की अधिकृत लिपि स्वीकार करते। जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्रीय कार्यक्रम

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में एक स्वायत्त संस्था तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत मानित विश्वविद्यालय है। संस्थान अपने शिक्षण–प्रशिक्षण व अनुसंधान कार्यों के साथ–साथ राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एक अनुष्ठान के रूप में आयोजित करते हुए राष्ट्र धर्म का निर्वहन करता है। वर्ष 2019–20 के दौरान कोलकाता केंद्र सहित दिल्ली परिसर में इस श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार है:–

आतंकवाद–विरोधी दिवस

संस्थान में 21 मई 2019 को ''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' मनाया गया। इसका उद्देश्य देश के सभी वर्गों के लोगों के बीच आतंकवाद और हिंसा के भारी नुकसान और लोगों, समाज व पूरे राष्ट्र पर इसके दुष्प्रभाव के प्रति जागरूकता पैदा करना था। इसके साथ ही, हिंसा के कारण आम लोगों की पीड़ा को दर्शाते हुए देश के लोगों को इससे दूर रखना है। इसके अतिरिक्त, यह भी बताना है कि आतंकवाद लोगों के लिए कितना दुःखदाई तथा राष्ट्रहित में कितना घातक है, अतः देश के नौजवानों को उग्रवाद और हिंसा से दूर रखना होगा। इस अवसर पर, संस्थान के दिल्ली परिसर के प्रांगण में प्रातः 11 बजे एकत्रित संस्थान सदस्यों को आईआईएफटी निदेशक, प्रो. मनोज पंत, द्वारा पहले हिंदी में और उसके बाद अंग्रेजी में शपथ दिलाई गई।

''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' के अवसर पर संस्थान के प्रांगण में संस्थान के सदस्यों को शपथ दिलाते प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी।

इसी प्रकार, उक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, संस्थान के कोलकाता केंद्र के प्रांगण में भी 21 मई 2019 को ''आतंकवाद–विरोधी दिवस'' मनाया गया। वहां पर केंद्र प्रमुख द्वारा इस संबंध में केंद्र के प्रांगण में प्रातः 11 बजे एकत्रित सदस्यों को आतंकवाद के विरूद्ध शपथ दिलाई गई।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

विश्व में रहने वाले मानवों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और वातावरण को स्वच्छ रखने के उद्देश्य से प्रति वर्ष 31 मई को ''विश्व तम्बाकू निषेध दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में भी प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान के परिसर को स्वच्छ रखने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित में "स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत" अभियान की दिशा में योगदान करने के प्रयोजन से 31 मई 2019 को ''विश्व तम्बाकू निषेध दिवस'' मनाया गया।

''विश्व तम्बाकू निषेध दिवस'' के अवसर पर संस्थान के प्रांगण में संस्थान के सदस्यों को शपथ दिलाती डॉ. विजया कट्टी, डीन, प्रशा. (शैक्षिक)।

इस अवसर पर संस्थान की डीन, प्रशासन (शैक्षिक) डॉ. विजया कट्टी ने संस्थान के प्रांगण में प्रातः 11.00 बजे संस्थान के संकाय और अधिकरियों/कर्मचारियों को 'कभी भी धूम्रपान व अन्य किसी भी प्रकार के तम्बाकू उत्पादों का सेवन न करने एवं अपने परिजनों या परिचितों को भी धूम्रपान व अन्य तम्बाकू उत्पादों का सेवन न करने के लिए प्रेरित करने और अपने कार्यालय परिसर को तम्बाकू मुक्त रखने तथा अपने सहयोगियों को भी इसके लिए प्रेरित करने' की शपथ हिंदी में दिलाई।

संस्थान में ''योग दिवस''

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान में 21 जून 2019 को ''योग दिवस'' मनाया गया। संस्थान के सदस्य दोपहर 3.00 बजे संस्थान के सभागार में योग दिवस के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम के लिए एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, डॉ. (श्रीमती) विजया कट्टी और कुलसचिव श्री प्रमोद कुमार गुप्ता के अतिरिक्त संस्थान के योगाचार्य श्री अजय शास्त्री तथा विशेष आमंत्रित के रूप में ''योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंण्डिया'' की डॉ. गौरी ठकराल एवं उनके सहयोगी श्री हेमंत कौशिक और संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

संस्थान के योगाचार्य श्री अजय शास्त्री जी ने 5वें योग दिवस पर सभी का अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए संस्थान के पाठ्यक्रम में योग को एक विषय के रूप में शामिल करने के लिए तत्कालीन निदेशक और संस्थान का आभार व्यक्त किया। उन्होंने दैनिक जीवन में योग और ध्यान के महत्त्व और इसके व्यावहारिक पक्ष पर अपने अनुभवों को साझा करते हुए योग के महत्त्व को रेखांकित किया। इस संबंध में उन्होंने एम्स की शोध रिपोर्ट को साझा करते हुए बताया कि योग से हृदय की बीमारी आधी हो जाती है। यदि योग का नियमित अभ्यास किया जाए तो रक्तचाप, मधुमेह और हृदय संबंधी बीमारियों से रोगमुक्त हो सकते हैं।

संस्थान में ''योग दिवस'' के अवसर ''योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंण्डिया'' की डॉ. गौरी ठकराल व उनकी सहयोगी क्रियायोग का अभ्यास कराते हुए।

तत्पश्चात, डॉ. गौरी ठकराल ने ''योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंण्डिया'' का परिचय देते हुए क्रियायोग के बारे में जानकारी दी व इसकी उपयोगिता से अवगत कराया। उन्होंने योग की कुछ क्रियाओं के बारे में बताते हुए इसका अभ्यास कराया जिसमें उपस्थित सभी व्यक्तियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

संस्थान में ''योग दिवस'' के अवसर आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक, अधिकारीगण, आमंत्रित अतिथि एवं सम्मिलित सदस्यों का ग्रुप फोटो।

संस्थान में ''स्वतंत्रता दिवस समारोह''का आयोजन

देश के 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्थान के प्रांगण में प्रातः 9.30 बजे झंडारोहण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान संकाय, अधिकारी/कर्मचारी एवं संस्थान के छात्र उपस्थित थे। झंडारोहण के तुरंत बाद ही राष्ट्रगान जन–गण–मन का सभी ने गायन किया और उसके बाद ''भारत माता की जय'' और ''वंदे मातरम'' का उद्घोष किया गया।

तत्पश्चात, प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी ने उपस्थित समुदाय को संबोधित किया। अपने संबोधन में प्रोफेसर पंत ने देश की अर्थव्यवस्था की स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया। इसके साथ ही संस्थान की प्रगति के संबंध में नए पाठ्यक्रम के बारे में बताया और कहा कि इसमें उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। साथ ही उन्होंने कहा कि संस्थान के संबंध में विशेष रूप से संकाय के लिए संकाय के सदस्यों की एक समिति अपेक्षित निर्णय लेने के लिए गठित की गई है। वहीं प्रशासनिक स्टाफ के संबंध में कुलसचिव की देखरेख में समिति गठित कर कार्रवाई की जा रही है। अंत में उन्होंने सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

आईएमएफ के अध्यक्ष श्री अमित ने बैच 2019–21 द्वारा किए जा रहे शानदार प्रदर्शन, प्लेसमेंट और संस्थान की ओर से भाग लेने वाले छात्रों का विभिन्न प्रतियोगिताओं में बहुत ही बढ़िया प्रदर्शन आदि के संबंध में जानकारी और सराहना की। अंत में उन्होंने

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। तत्पश्चात समारोह समापन से पूर्व पुनः एक बार सभी ने राष्ट्रगान किया।

कोलकाता केंद्र पर ''स्वतंत्रता दिवस समारोह''

आईआईएफटी के कोलकाता केंद्र पर भी संस्थान के मुख्य कार्यक्रम एमबीए (आईबी) व एम.ए. इकॉनोमिक्स के छात्रों के साथ केंद्र के सभी सदस्यों ने मिलकर देश के 73वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. के. रंगराजन, प्रमुख, कोलकाता केंद्र ने झंडारोहण किया। तदोपरांत राष्ट्रगान जन–गण–मन का सभी ने गायन किया और उसके बाद ''भारत माता की जय'' और ''वंदे मातरम'' का उद्घोष किया गया। इस अवसर पर डॉ. रंगराजन जी ने उपस्थित संकाय, अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संस्थान के छात्रों को संबोधित करते हुए केंद्र द्वारा किए जा रहे कार्यकलापों पर चर्चा की और सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

दीपावली की पूर्व संध्या पर आयोजन

22 अक्टूबर 2019 को दीपों के पावन पर्व ''दीपावली'' की पूर्व संध्या पर संस्थान के प्रांगण में ''शुभ दिवाली मिलन'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पावन पर्व की पूर्व वेला पर संस्थान के सभी सदस्यों ने मिलकर दीप प्रज्ज्वलित किए एवं पूजा–अर्चना की। निदेशक महोदय ने सभी सदस्यों को दिवाली की बधाई एवं संस्थान सदस्यों तथा उनके परिवारों की सुख–समृद्धि व प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने संस्थान की प्रगति के लिए अपना श्रेष्ठ योगदान करने का आह्वान किया। तदोपरांत, सभी ने मिलकर जलपान किया और एक–दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

संस्थान में ''दीपावली की पूर्व संध्या'' के अवसर पर आयोजित समारोह में संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत एवं आईआईएफटी परिवार।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान में 28 अक्तूबर से 02 नवम्बर 2019 के दौरान ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' ''ईमानदारी – एक जीवन शैली'' विषय के साथ मनाया गया। इसका उद्देश्य भारत से भ्रष्टाचार उन्मूलन कर देश को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है। जिसके लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र को एक साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। इसके लिए देश के हर नागरिक को सतर्क होना पड़ेगा। इसके साथ–साथ उसे हमेशा ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्ध होकर भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष में जुड़कर आगे आना होगा। इस अवसर पर संस्थान की डीन प्रशा. (शैक्षिक) डॉ. विजया कट्टी एवं डॉ. विश्वाजीत नाग द्वारा 29 अक्तूबर 2018 को प्रातः 11 बजे संस्थान के प्रांगण (एट्रियम) में सभी सदस्यों को क्रमशः हिंदी एवं अंग्रेजी में शपथ दिलाई गई।

राष्ट्रीय एकता दिवस

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 31 अक्तूबर को **''राष्ट्रीय एकता दिवस''** के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन भारत के 'लौह पुरूष' कहे जाने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म हुआ था। सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा देश को एकजुट करने के लिए अनेक प्रयास किए गए थे। इसके साथ ही देश की स्वतंत्रता एवं देश के विभाजन के समय भारत को संगठित रखने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके देश हित में किए गए कार्यों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से इस दिन को ''राष्ट्रीय एकता दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।

इस अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान एवं कार्यों को याद करते हुए संस्थान के प्रांगण (एट्रियम) में संस्थान के कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता द्वारा 29 अक्तूबर 2019 को प्रातः 11 बजे संस्थान के एट्रियम में क्रमशः हिंदी एवं अंग्रेजी में 'राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ' सभी सदस्यों को दिलाई गई। राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करने और देशवासियों के बीच इसका संदेश फैलाने का प्रयत्न करने की शपथ ली गई। इसके साथ ही अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प लिया गया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान

भारत सरकार के निर्देशानुसार आईआईएफटी परिसर में 11 सितम्बर से 2 नवम्बर 2019 के दौरान ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य प्लास्टिक कचरा प्रबंधन था। इस अभियान के अंतर्गत संस्थान परिसर में विभिन्न स्थानों पर बैनर लगाए गए, परिसर व आस–पास के क्षेत्र में प्लास्टिक कचरा के साथ–साथ अन्य कूड़ा एकत्र करते हुए रिसाईक्लिन्ग कराने की प्रक्रिया का अनुकरण किया गया। संस्थान के छात्रों सहित सभी सदस्यों ने इस अभियान में अपनी भागीदारी दर्ज की। संस्थान के छात्रावास, मैस व कैंटीन आदि में सफाई अभियान चलाया गया। इसके साथ ही संस्थान के अनुभागों/विभागों द्वारा फाइलों/कार्यालय रिकार्ड के उचित रखरखाव तथा अलमारियों में रखे पुराने रिकार्ड को छांटकर नष्ट करने के लिए भी कार्रवाई की गई। इस अवधि में प्लास्टिक–कचरा प्रबंधन को लेकर विशेष सफाई अभियान चलाया गया।

''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के अंतर्गत श्रमदान करते हुए संस्थान के सदस्य।

स्वच्छता पखवाड़ा

आईआईएफटी परिसर में भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2019 के दौरान ''स्वच्छता पखवाड़ा'' मनाया गया। इसका उद्देश्य स्वच्छता का संदेश न केवल विधार्थियों में वरन् आस–पास के क्षेत्रों में फैलाकर उनमें सफाई के प्रति जागरूकता पैदा करना था। कार्यक्रम को सुनियोजित तरीके से सफल बनाने के लिए छात्रों व कर्मचारियों के बीच समितियों का गठन किया गया। इस सफाई अभियान के अंतर्गत आईआईएफटी निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत सहित संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों/संकाय सदस्यों ने न केवल संस्थान के अंदर, अपितु आस–पास के क्षेत्र में सफाई कार्य कर स्वैच्छिक श्रमदान किया। इसके साथ ही संस्थान के अनुभागों/विभागों द्वारा फाइलों/कार्यालय रिकार्ड के उचित रखरखाव तथा अलमारियों में रखे पुराने रिकार्ड को छांटकर नष्ट करने के लिए भी कार्रवाई की गई। इस बारे में की गई कार्रवाई की एक रिपोर्ट वाणिज्य मंत्रालय को भी भेजी गई।

आईआईएफटी छात्रों द्वारा भी इस दौरान सफाई कार्य करते हुए श्रमदान किया गया तथा कैंटीन/छात्रावास व भोजनालय को सुव्यवस्थित तथा साफ करने के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ भारत अभियान पर एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

छात्रों द्वारा आयोजित ''स्वच्छ भारत अभियान'' पर एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का दृश्य।

संविधान दिवस समारोह

26 नवम्बर 2019 को देश भर में ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाया गया। उल्लेखनीय है कि संविधान सभा ने 26 नवम्बर 1949 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) 2 वर्ष 11 महीने और 18 दिन में बड़े परिश्रम से तैयार भारतीय संविधान को अंगीकृत किया था। इसे 26 जनवरी 1949 को देश में लागू किया गया था। यह भारत के इतिहास में एक नए युग की शुरूआत थी। अतः भारत सरकार ने प्रति वर्ष 26 नवम्बर को ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाने का निर्णय लिया था।

''संविधान दिवस'' के अवसर पर संस्थान के सदस्यों को ''प्रस्तावना'' पढ़वाते हुए डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, आईआईएफटी।

तद्नुसार, संस्थान में भी, 26 नवम्बर को ''संविधान दिवस'' के रूप में मनाने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के एट्रियम में 26 नवम्बर मंगलवार को प्रातः 11 बजे कुलसचिव महोदय ने संविधान की ''प्रस्तावना'' को उपस्थित सदस्यों के समक्ष पहले हिंदी और तत्पश्चात अंग्रेजी में पढ़ा। उनके साथ–साथ उपस्थित सदस्यों ने भी संविधान की ''प्रस्तावना'' को हिंदी और अंग्रेजी में पढ़ा।

''सशस्त्र सेना झंडा दिवस'' का आयोजन

आजादी के बाद सरकार को यह अनुभव हुआ कि सैनिकों के परिवार वालों की जरूरतों का ध्यान रखने की आवश्यकता है। अतः 7 दिसम्बर 1949 को 'झंडा दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। शुरू में इसे झंडा दिवस के रूप में मनाया जाता था लेकिन वर्ष 1993 से इसे ''सशस्त्र सेना झंडा दिवस'' के रूप में मनाया जाने लगा। सशस्त्र सेना झंडा दिवस देश की सुरक्षा में शहीद हुए उन जांबाज सैनिकों के प्रति एकजुटता दिखाने एवं सम्मानित करने का दिन है जो न केवल सीमाओं की रक्षा करते हैं, वरन् आतंकवाद और उग्रवाद से लोहा लेकर शांति स्थापित करने में अपनी जान न्यौछावर करते हैं। इस अवसर पर एकत्रित हुई राशि युद्ध वीरांगनाओं, शहीदों के आश्रितों, दिव्यांग सैनिकों सहित पूर्व सैनिकों के कल्याण और पुनर्वास के लिए उपयोग की जाती है।

संस्थान में देश का मान और अखंडता की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों के सम्मान में ''सशस्त्र सेना झंडा दिवस'' मनाया गया। संस्थान के प्रत्येक सदस्य द्वारा ''सशस्त्र सेना झंडा दिवस'' निधि के लिए 200/– रूपए का योगदान किया गया। शहीदों के सम्मान में संस्थान के सदस्यों द्वारा 6 दिसंबर 2019 (7 और 8 दिसंबर को अवकाश होने के कारण) को प्रातः 11 बजे दो मिनट का मौन रखकर श्रृद्धांजलि अर्पित की गई।

नव वर्ष समारोह

नव वर्ष 2020 के आगमन पर एक–दूसरे को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करने के लिए संस्थान में 01 जनवरी 2020 को दोपहर 12.30 बजे नव वर्ष मंगल–मिलन कार्यक्रम का आयोजन एट्रियम में किया गया। इस शुभ अवसर पर संस्थान निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत, कुलसचिव डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, डीन (प्रशासन/शैक्षिक) डॉ. विजया कट्टी एवं डॉ. राकेश मोहन जोशी ने प्रांगण में एकत्रित आईआईएफटी परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर प्रोफेसर पंत ने संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें संस्थान में 2 वर्ष से अधिक का समय हो गया है जिसमें मुझे सभी का सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपने काम में तेजी लानी है ताकि संस्थान प्रगति के पथ पर आगे बढ़े। नव वर्ष पर सभी वक्ताओं ने संस्थान सदस्यों एवं उनके परिवारों की सुख–समृद्धि और संस्थान की प्रगति के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। तत्पश्चात सभी ने सामूहिक लंच का आनन्द लिया।

नव वर्ष मंगल–मिलन समारोह पर संबोधित करते हुए प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें मतदान को एक पावन एवं महान पर्व का रूप दिया गया है। देश में जन प्रतिनिधियों को चुनने के लिए चुनाव आयोग बनाया गया है। चुनाव आयोग, भारत सरकार द्वारा मतदान में मतदाताओं की भागीदारी को

बढ़ावा देने के लिए, प्रति वर्ष 25 जनवरी को ''राष्ट्रीय मतदाता दिवस'' के तौर पर मनाया जाता है। संस्थान में 24 जनवरी 2020 को प्रातः 11 बजे संस्थान के प्रांगण में, मतदान में सभी कर्मचारियों की नैतिक चुनावी भागीदारी एवं बिना किसी प्रभाव के मतदान करने के बारे में, सदस्यों को आईआईएफटी के निदेशक प्रोफेसर मनोज पंत द्वारा हिंदी एवं अंग्रेजी में शपथ दिलवाई गई।

''राष्ट्रीय मतदाता दिवस'' के अवसर पर शपथ लेते हुए संस्थान के सदस्य।

गणतंत्र दिवस समारोह

आईआईएफटी कोलकाता ने 71वें गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2020) को पूर्व की भांति बड़े उत्साह के साथ मनाया क्योंकि यह सस्थान ऐसे आयोजनों को मनाने में आगे रहता है।

इस समारोह का शुभारंभ आईआईएफटी कोलकाता के केंद्र प्रमुख डॉ. रंगराजन द्वारा एक ध्वजारोहण समारोह के साथ किया गया। समारोह में अधिकांश छात्रों ने इस अवसर के अनुकूल पारंपरिक परिधान पहनकर भाग लिया। इस समारोह के पश्चात, सभी उपस्थित लोगों में मिष्ठान वितरण किया गया।

71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आईआईएफटी कोलकाता केंद्र पर झंडारोहण समारोह।

इस के बाद सुबह, आईआईएफटी कोलकाता ने अपने द्वितीय स्पिक मैके की मेजबानी की जिसमें कुमार मर्दुर की संगीत प्रतिभाओं की मेजबानी करते हुए, तबले पर जयंत सरकार, हारमोनियम पर मृणाल रंजन और तानपुरा पर शुभोजीत मांझी ने साथ दिया। आत्मीय गायन ने प्रथम बार इस पारंपरिक प्रदर्शन के कई साक्षी रहे छात्रों के साथ सभी अवाक छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

गणतंत्र दिवस समारोह–2020 के अवसर पर आईआईएफटी कोलकाता केंद्र पर आयोजित संगीत कार्यक्रम का दृश्य।

बलिदान दिवस

भारत की आजादी के संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति देने वाले भारत माता के महान वीर सपूतों के बलिदान की याद में एवं उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए प्रति वर्ष 30 जनवरी को ''बलिदान दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। संस्थान के सदस्यों द्वारा 30 जनवरी 2020 को प्रातः 11 बजे अपने–अपने कार्यस्थल पर सायरन की आवाज पर दो मिनट का मौन धारण कर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया गया।

पूर्व छात्र (अल्युमनाई) गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

पूर्व छात्र विभाग के बारे में

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) द्वारा अपने पूर्व छात्रों की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2018 में प्लेसमेंट प्रकोष्ठ से अलग करते हुए एक समन्वयक के रूप में ''पूर्व छात्र कार्य विभाग'' की स्थापना की गई थी। संस्थान के डॉ. संजय रस्तोगी को विभाग के प्रमुख तथा डॉ. हिमानी गुप्ता व डॉ. प्रतीक माहेश्वरी को संकाय समन्वयक के रूप में दायित्व सौंपा गया है। आज आईआईएफटी के 50,000 से अधिक पूर्व छात्र विश्व के लगभग 30 देशों में विख्यात संस्थाओं/संगठनों के संचालन में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं, जो संस्थान के लिए गौरव व सम्मान का विषय है। आईआईएफटी के पूर्व छात्र, संस्थान का देश के अग्रणी बी–स्कूलों में स्थान बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। पूर्व छात्रों व संस्थान के बीच एक गहरा भावनात्मक संबंध है जिसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से समय–समय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

- पूर्व छात्रों और आईआईएफटी के बीच एक आजीवन बौद्धिक और भावनात्मक संबंध को बढ़ावा देना।
- न केवल पूर्व छात्रों और आईआईएफटी के बीच, अपितु पूर्व छात्रों के बीच भी पारस्परिक लाभकारी बातचीत व सहयोग को स्थापित करना।
- आईआईएफटी की सामाजिक उपयोगिता बढ़ाने के लिए संस्थान की गतिविधियों और विकास में समर्पित पूर्व छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
- संस्थागत विकास तथा इस संबंध में विचारों के आदान–प्रदान के लिए पूर्व छात्रों को एक मंच प्रदान करना।
- आईआईएफटी को और अधिक सफलता की ओर अग्रसर करने के लिए प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों से जानकारी प्राप्त करना।
- विश्व भर में कार्यरत सभी पूर्व छात्रों की अद्यतन और विस्तृत जानकारी रखना।

ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन (जीएआर) 2019

ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन 2019 की मेजबानी 17 नवंबर 2019 को आईआईएफटी, दिल्ली परिसर में की गई। इस वार्षिक आयोजन में विश्व भर के विभिन्न स्थानों से पूर्व छात्रों की भागीदारी देखी गई। सर्दियों की सर्द शाम के बीच, परिसर पूर्व छात्रों, संकाय और वर्तमान बैच के छात्रों की गर्मजोशी के साथ देखा गया। आधिकारिक समारोह के साथ शाम की शुरूआत की गई जिसमें पूर्व छात्र संबंध समिति की गतिविधियों पर एक वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके बाद संस्थान के निदेशक महोदय – प्रो. मनोज पंत ने उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित किया।

''ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन'' समारोह के अवसर पर उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी। (17 नवंबर 2019)

तदोपरांत, ''द पोस्टबॉक्स'' नामक बैंड द्वारा मनोहर संगीत प्रस्तुत किया गया। डिनर में पूर्व छात्रों ने आईआईएफटी में अपनी यादों को ताजा किया, जबकि मौजूदा छात्रों ने पूर्व छात्रों के साथ बातचीत की और उनके कॉर्पोरेट अनुभव से सीखने का अवसर प्राप्त किया।

''ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन'' समारोह के अवसर पर नृत्य कार्यक्रम का दृश्य। (17 नवंबर 2019)

अल्युमनस ऑफ द ईयर

प्रत्येक वर्ष संस्थान अपने उस पूर्व छात्र को संस्थान द्वारा दिए जाने वाले एक प्रतिष्ठित पुरस्कार ''अल्युमनस ऑफ द ईयर'' से सम्मानित करता है, जो अपने कॅरियर में बेहद सफल रहा/रही है। वर्ष 2005 में इस पुरस्कार की स्थापना के बाद से, यह उद्योग के दिग्गजों यथा श्री रशेष शाह, चेयरमैन, एडलवाइस, श्री के.वी. राव, निवासी निदेशक आसियान, टाटा पावर, श्री सिराज चौधरी, अध्यक्ष कारगिल इंडिया, श्री मोहित मल्होत्रा, सीईओ डॉबर इंटरनेशनल आदि को प्रदान किया गया है। गत वर्ष 2019 से यह पुरस्कार दो श्रेणियों अर्थात 'उद्यमिता' एवं 'कॉर्पोरेट' श्रेणी में दिया जाने लगा है।

कॉर्पोरेट श्रेणी – ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन के अवसर पर 17 नवम्बर 2019 को आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत द्वारा श्री शंकर गुप्ता, अध्यक्ष और सीओओ, एसीजी वर्ल्डवाइड को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर अवार्ड – कॉर्पोरेट श्रेणी'' प्रदान किया गया।

प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी की उपस्थिति में श्री शंकर गुप्ता, अध्यक्ष एवं सीओओ, एसीजी वर्ल्डवाइड को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर अवार्ड – कॉर्पोरेट श्रेणी'' प्रदान करते हुए प्रोफेसर संजय रस्तोगी, प्रमुख, पूर्व छात्र विभाग। (17 नवंबर 2019)

उद्यमिता श्रेणी – उपरोक्त मुख्य कार्यक्रम के अवसर पर एक नई पहल के अंतर्गत अपने स्वयं के उद्यमों के निर्माण में हमारे पूर्व–छात्रों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना और पहचान करने के लिए 'उद्यमिता' नामक एक विशेष श्रेणी का निर्धारण किया गया। कार्यक्रम के दौरान आईआईएफटी के निदेशक प्रो. मनोज पंत द्वारा श्री मनु चोपड़ा, निदेशक, पीडीएस इंटरनेशनल प्रा. लिमिटेड को इस वर्ष का ''अल्युमनस ऑफ द ईयर अवार्ड – उद्यमिता श्रेणी'' प्रदान किया गया।

श्री मनु चोपड़ा, निदेशक, पीडीएस इंटरनेशनल प्रा. लिमिटेड को ''अल्युमनस ऑफ द ईयर अवार्ड – उद्यमिता श्रेणी'' प्रदान करते हुए प्रो. मनोज पंत, निदेशक, व डॉ. संजय रस्तोगी, प्रमुख, पूर्व छात्र कार्य विभाग, आईआईएफटी। (17 नवंबर 2019)

छात्रवृत्ति – वर्ष 2018 से प्रख्यात पूर्व छात्र श्री जगदीश गोयल, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, ऑरनेट सोलर के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ छात्रा को राशि रू.5.00 लाख के कॉरपस फंड से ज्योतिबा फुले गोल्ड मैडल प्रदान किए जाने की परंपरा प्रारंभ की गई थी। पूर्व छात्रों की ओर से यह एक सराहनीय कदम है। वर्ष 2019 में एमबीए (आईबी) 2017–19 कार्यक्रम की छात्रा सुश्री नेहा वार्ष्नेय को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। इसी क्रम में पूर्व छात्र कार्य विभाग अपने अल्युमनाई से पीएच.डी. छात्रों, आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों तथा संस्थान के पुस्तकालय के आधुनिकीकरण हेतु इस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करता है।

ज्योतिबा फुले गोल्ड मैडल प्राप्त करती हुई एमबीए (आईबी) 2017–19 कार्यक्रम की छात्रा सुश्री नेहा वार्ष्नेय। (8 अगस्त 2019)

पूर्व छात्र सहयोग

पूर्व छात्र विभिन्न मंचों यथा सम्मेलनों, प्रतियोगिताओं, प्लेसमेंट और अन्य छात्र–संबंधी गतिविधियों के माध्यम से संस्थान के कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्थान के पूर्व छात्र जो विभिन्न उद्योगों में नेतृत्व कर रहे हैं, उन्हें संस्थान के साथ जुड़ने के लिए छह घरेलू चैप्टर मीट और चार अंतरराष्ट्रीय मीट के माध्यम से एक मंच प्रदान किया जाता है। चैप्टर मीट संस्थान और अल्युमनाई को एक–दूसरे के बारे में अद्यतन होने के लिए एक सेतु की भूमिका निभाते हैं।

आईआईएफटी के पूर्व छात्र कॉर्पोरेट, सार्वजनिक क्षेत्र, मीडिया, खेल और शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न व्यवसायों में शीर्ष पदों पर हैं। पूर्व छात्रों ने बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को नेतृत्व प्रदान कर और इकॉनोमिक टाइम्स यंग लीडर्स अवार्ड आदि जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार अर्जित कर संस्थान को गौरवान्वित किया है।

अल्युमनाई मौजूदा छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन और अंतिम प्लेसमेंट, अतिथि व्याख्यान श्रृंखला, कॉर्पोरेट प्रतियोगिताओं, लाइव प्रोजेक्ट्स, मैंटरशिप और अन्य संस्थान–उद्योग इंटरफेस गतिविधियों के आयोजन के लिए नियमित तौर पर सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

पूर्व छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक – दिल्ली परिसर

पूर्व छात्र कार्य विभाग ने हाल ही में 17 नवंबर 2019 को एक कार्यकारी परिषद की बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में सभी चैप्टर प्रमुखों, आईआईएफटी संकाय और छात्र प्रमुखों ने भाग लिया। पूर्व छात्र कार्य विभाग के प्रमुख डॉ. संजय रस्तोगी द्वारा एक विस्तृत जानकारी के बाद, पूर्व छात्र समन्वयक, आईएमएफ अध्यक्ष और प्लेसमेंट संयोजक सहित सभी छात्र प्रमुखों ने आईआईएफटी में पिछले 6 महीने में की गई गतिविधियों को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। तदोपरांत, संबंधित चैप्टर प्रमुखों द्वारा अपने क्षेत्रीय चैप्टरों की प्रगति पर एक प्रस्तुति दी गई। बैठक में विचारों का एक स्वस्थ प्रवाह देखा गया कि आईआईएफटी पूर्व छात्र का समृद्ध नेटवर्क वास्तव में ब्रांड आईआईएफटी का निर्माण करने में मदद करने के लिए एक परिसंपत्ति के रूप में कैसे काम कर सकता है।

आईआईएफटी दिल्ली परिसर में आयोजित पूर्व छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक। (17 नवंबर 2019)

पूर्व छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक – कोलकाता परिसर

आईआईएफटी कोलकाता को पहली बार पूर्व छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक की मेजबानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दिनांक 6 जुलाई 2019 को आयोजित इस बैठक में सभी चैप्टर प्रमुखों के साथ संस्थान के निदेशक प्रो. मनोज पंत, कोलकाता केंद्र के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन, पूर्व छात्र कार्य विभाग के प्रमुख डॉ. संजय रस्तोगी तथा अन्य संकाय सदस्यों ने भाग लिया। चैप्टर प्रमुखों ने पूर्व छात्रों के मामलों से संबंधित विभिन्न तथ्यों के घटनाक्रम पर अद्यतन विवरण प्रस्तुत किया। कार्यसूची के बिंदुओं पर चर्चा हुई और सम्मानित सदस्यों ने महत्वपूर्ण मामलों पर अपने विचार रखे। संस्थान के पूर्व छात्रों की व्यस्तता में सुधार के लिए नई पहल का प्रस्ताव किया गया। अंत में, पूर्व छात्र कार्य विभाग ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रत्येक व्यक्ति का आभार व्यक्त किया।

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र पर आयोजित पूर्व छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक। (6 जुलाई 2019)

आईआईएफटी पूर्व छात्र चैप्टर मीट

आईआईएफटी के पूर्व छात्रों द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों की श्रृंखला में देश के बड़े

शहरों तथा विदेशों में चैप्टर मीट का आयोजन किया जाता है, जिसका उद्देश्य पूर्व छात्रों का आपसी मिलन व सहयोग तथा आईआईएफटी के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करना है। इस दौरान पूर्व छात्रों का समूह एक–दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा करते हैं तथा आईआईएफटी की बेहतरी के संबंध में विचार–विमर्श करते हैं जिसके अंतर्गत आईआईएफटी के छात्रों की प्लेसमेंट, इंटर्नशिप आदि की अपेक्षा की जाती है। वर्ष 2019–20 के दौरान 6 राष्ट्रीय चैप्टर मीट तथा 2 अंतरराष्ट्रीय चैप्टर मीट का आयोजन किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है:

कोलकाता चैप्टर मीट

कोलकाता परिसर में 6 जुलाई 2019 को कोलकाता चैप्टर मीट का आयोजन किया गया। इस दौरान चैप्टर प्रमुख श्री महर्षि सिंघल ने वर्तमान बैच के छात्रों तथा सभी सदस्यों को संबोधित किया। इस अवसर पर छात्रों के वर्तमान बैच द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा सभी ने इसकी सराहना की और बाद में, पूर्व छात्र भी समारोह में शामिल हुए। आईआईएफटी में अपने दिनों की यादों को ताजा करने के लिए इस मंच को याद किया।

आईआईएफटी कोलकाता केंद्र पर चैप्टर मीट का आयोजन। (6 जुलाई 2019)

चेन्नै चैप्टर मीट

प्रति वर्ष आयोजित होने वाली चैप्टर मीट की कड़ी में 1 जून 2019 को चेन्नै चैप्टर मीट का आयोजन किया गया। चैप्टर प्रमुख – श्री मनोज पॉल ने सभी 14 पूर्व छात्रों से समन्वय करते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया। आईआईएफटी की डॉ. हिमानी गुप्ता कार्यक्रम में उपस्थित रही, जिन्होंने सभा की कार्यसूची को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

बेंगलुरू चैप्टर मीट

बेंगलुरू चैप्टर मीट का आयोजन 25 मई 2019 को 60 से अधिक प्रसिद्ध पूर्व छात्रों के साथ किया गया। शाम को चैप्टर प्रमुख – श्री आर. अजय के एक स्वागत नोट के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, जिसमें उन्होंने पूर्व छात्रों के साथ जुड़ाव और नियमित मुलाकातों के महत्व के बारे में बताया। डॉ. नितिन सेठ ने आईआईएफटी का प्रतिनिधित्व किया और एम.ए. (अर्थशास्त्र) कार्यक्रम सहित विभिन्न नए विकास कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की। श्री किंशुक हजारा ने अपनी उद्यमिता यात्रा के बारे में संक्षेप में अपने मन की बात कही।

हैदराबाद चैप्टर मीट

आईआईएफटी की यादों को ताजा करने के लिए एक व्याख्यान–मंच के रूप में, पूर्व छात्र संबंध समिति ने हैदराबाद में दिनांक 18 मई 2019 को चैप्टर मीट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में चैप्टर प्रमुख – श्री वी. मनुज सहित कुल 37 पूर्व छात्र हैं, जिनमें से अधिकांश ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस दौरान सभी सदस्यों ने अपनी–अपनी उपलब्धियाँ प्रस्तुत करते हुए मंच साझा किया। संस्थान के डॉ. वी. रविन्द्र सारधी ने हैदराबाद में आईआईएफटी का प्रतिनिधित्व किया।

मुंबई चैप्टर मीट

मुंबई चैप्टर मीट का आयोजन 11 मई 2019 को किया गया, जिसमें लगभग 60 सम्मानित पूर्व छात्रों ने अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। चैप्टर प्रमुख – श्री राजीव गटने ने सभा को संबोधित किया तथा उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए मुम्बई चैप्टर के सदस्यों द्वारा वर्षों से एक–दूसरे की मदद तथा सहयोग करने एवं भविष्य में इसे जारी रखने व आगे बढ़ाने के महत्व के बारे में बात की। सुश्री अंशिका खट्टर – पूर्व छात्र समन्वयक ने आईआईएफटी की प्लेसमेंट रिपोर्ट सहित हाल की उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

आईआईएफटी संकाय का प्रतिनिधित्व करते हुए, डॉ. प्रतीक माहेश्वरी ने भी सभा को संबोधित किया और इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले वरिष्ठतम पूर्व छात्रों को सम्मानित किया।

अंतरराष्ट्रीय चैप्टर मीट सिंगापुर

वर्ष 2019 के दौरान दो अंतरराष्ट्रीय चैप्टर मीट अर्थात 4 अक्तूबर को सिंगापुर में और 11 अक्तूबर को यूके में आयोजित की गई। सिंगापुर में आयोजित चैप्टर मीट को इंटरनेशनल बिजनेस कॉन्क्लेव 2019 के रूप में आयोजित किया गया। यह आईआईएफटी ब्रांड, नॉलेज शेयरिंग और प्रोफेशनल नेटवर्किंग बनाने के लिए आईआईएफटी अल्युमनाई और इंटरनेशनल बिजनेस को जोड़ने के लिए एक मंच रहा। इस आईबीसी–2019 के लिए थीम उभरता हुआ वैश्विक व्यापार–व्यवस्था या अव्यवस्था? – संरक्षणवाद, साइबर युद्ध और संघर्ष के बीच व्यापार के लिए अवसर और चुनौतियाँ था।

इंटरनेशनल बिजनेस कॉन्क्लेव 2019 के रूप में सिंगापुर में चैप्टर मीट का आयोजन। (4 अक्तूबर 2019)

आईबीसी का आयोजन आईआईएफटी द्वारा सिंगापुर स्थित 100 से अधिक आईआईएफटी अल्युमनाई की सदस्यता वाली पंजीकृत सोसाइटी आईआईएफटीएएएस के साथ सहयोग से किया जाता है। श्री गोपीनाथ पिल्लई, एम्बेसडर–एट–लार्ज, विदेश मंत्रालय, सिंगापुर सरकार आईबीसी–2019 में मुख्य अतिथि थे। पैनल चर्चा में भाग लेने वाले अन्य गणमान्य लोगों में शामिल थे:

1. श्री के.वी. राव, संस्थापक अध्यक्ष, आईआईएफटी एलुमनाई एसोसिएशन सिंगापुर।
2. प्रो. मनोज पंत, निदेशक, आईआईएफटी।
3. श्री स्टीवन ओकुन, वरिष्ठ सलाहकार, मैकलार्थी एसोसिएट्स।
4. श्री मनु भास्करन, मुख्य कार्यकारी, सेंटेनियल एशिया सलाहकार।
5. श्री फ्रेडरिक ग्रोथ, एमडी एपीएसी कोफको इंटरनेशनल।

पीजीडीआईटी बैच'94 की 25वीं वर्षगांठ

आईआईएफटी अल्युमनाई संबंध समिति द्वारा 18 जनवरी 2020 को अपने अल्मा मैटर में 1994 के पीजीडीआईटी बैच की 25वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक, प्रो. मनोज पंत के साथ आईआईएफटी के भविष्य के बारे में बात करने के लिए पूर्व छात्रों की बैठक के साथ हुई। इस अवसर पर पूर्व छात्र सत्र भी रखा गया जहां आईआईएफटी के वर्तमान छात्रों को पूर्व छात्रों के साथ जुड़ने और उनके करियर और व्यवसाय में बदलते रुझानों के बारे में सवाल पूछने का मौका मिला।

आईआईएफटी अल्युमनाई संबंध समिति द्वारा पीजीडीआईटी बैच'94 की 25वीं वर्षगांठ का आयोजन। (18 जनवरी 2020)

पूर्व छात्रों ने 'टॉप ऑफ द वर्ल्ड' और अपने हॉस्टल के कमरों सहित परिसर में अपने पसंदीदा स्थानों का दौरा किया, जहाँ उन्होंने अपने कॉलेज के दिनों की याद ताजा की और अपनी रोचक कहानियाँ साझा कीं। दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई जहां बैचमेट्स ने एक साथ भाग लिया। आईआईएफटी के छात्रों ने 94 के पीजीडीआईटी बैच की मेजबानी करने पर खुशी जाहिर की तथा सभी को जल्द ही उन्हें फिर से मिलने की उम्मीद जताई।

अल्युमनाई वेबसाइट का उन्नयन

वर्ष के दौरान आईआईएफटी की अल्युमनाई वेबसाइट भी एकीकृत भुगतान गेटवे जैसी सुविधाओं के साथ उन्नत की गई। इसके अतिरिक्त, अल्युमनाई परिचय, अल्युमनाई चर्चा–परिचर्चा, क्वोरा क्वेश्चनिंग के आधार पर – प्रश्न पूछना तथा उत्तर देने का विकल्प और लेख आदि साझा करने के माध्यम से मित्र

समूह से सीखने जैसी कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषताओं को भी अल्युमनाई वेबसाइट में जोड़ा गया है।

विभाग की नई पहल

पूर्व छात्र कार्य विभाग ने स्टूडेंट मेंटरशिप प्रोग्राम, अल्युमनाई मेंटरशिप प्रोग्राम, कॉर्पोरेट मेंटरशिप प्रोग्राम, एल्युमिनाती, आईआईएफटी मर्चेंडाइज की बिक्री जैसे कई कदम उठाए हैं। विभाग ने अपनी नई अल्युमनाई वेबसाइट पर मंडे मेमोरी वॉल अर्थात 'आईआईएफटी के पूर्व छात्रों की कैंपस में अपने समय की यादों पर प्रत्येक सोमवार को एक पोस्ट' और थर्स्डे ट्रिविया सेक्शन अर्थात 'प्रत्येक गुरुवार को आईआईएफटी की समृद्ध विरासत के बारे में तथ्य 'क्या–आप–जानते थे' पर एक पोस्ट' के माध्यम से सोशल मीडिया की व्यस्तता बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है। कोलकाता कैंपस में 'हॉल ऑफ फेम' नाम से 'पूर्व छात्र कक्ष' भी बनाया गया है।

एल्युमिनाती छमाही पत्रिका

पूर्व छात्र कार्य विभाग द्वारा इस वर्ष 'एल्युमिनाती' छमाही पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है, जिसमें आईआईएफटी संकाय, अल्युमनाई लेख तथा विभाग की वर्ष भर की गतिविधियों व अल्युमनाई उपलब्धियों का प्रकाशन किया जा रहा है। इस छमाही पत्रिका का उद्देश्य पूर्व–छात्रों से बेहतर संबंध स्थापित करना तथा परस्पर वार्तालाप का दौर जारी रखना है। दिनांक 17 नवम्बर 2019 को ग्रैंड अल्युमनाई रीयूनियन (जीएआर) समारोह के अवसर पर 'एल्युमिनाती' – छमाही पत्रिका के जीएआर विशेष संस्करण का अनावरण किया गया।

पूर्व छात्र उपलब्धियाँ

- 2011–13 बैच के पूर्व छात्र श्री कृष्ण मिश्रा को शिक्षा के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए दुबई में 16–18 दिसंबर 2019 के दौरान ग्लोबल फोरम फॉर एजुकेशन एंड लर्निंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'टॉप 100 ग्लोबल लीडर्स इन एजुकेशन' की सूची में स्थान प्रदान किया गया।

  श्री कृष्ण मिश्रा 'एसोसिएशन ऑफ चार्टर्ड सर्टिफाइड एकाउंटेंट्स' के लिए उत्तर और पूर्व भारत के प्रमुख हैं। उत्तर और पूर्व भारतीय बाजारों में एसीसीए के व्यवसाय विकास के लिए जिम्मेदार है। उन्हें व्यवसाय विकास एवं शिक्षा व्यवसाय, चैनल पार्टनर, कॉर्पोरेट और प्रत्यक्ष बिक्री टीम के प्रबंधन में 16 वर्षों का अनुभव है।

- आईआईएफटी के 2013 एमबीए (आईबी) बैच के श्री सुलभ विज को द इकोनॉमिक टाइम्स यंग लीडर्स 2019 के रूप में सम्मानित किया गया। श्री सुलभ विज को ग्रोफर्स, ब्रिटानिया और वोडाफोन जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड के साथ बिक्री, विपणन और उत्पाद प्रबंधन का 6 साल का अनुभव है। हम श्री सुलभ विज के अति उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

> **हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में आसीन हो सकती है।**
>
> **– मैथिलीशरण गुप्त**

छात्र गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

संस्थान में अध्ययन–अध्यापन के दौरान, छात्र विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व खेल–कूद संबंधी गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जिनका उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए अवसर पैदा करना है। इन कार्यक्रमों में संस्थान के अल्युमनाई भी अपनी भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2019–20 के दौरान छात्रों द्वारा आयोजित गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार है:

ट्रेड विंड्स:

ट्रेड विंड्स, आईआईएफटी का वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन है जो छात्रों को उद्योग के प्रसिद्ध पेशेवरों और विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। ट्रेड विंड्स के माध्यम से, छात्र और उद्योग विशेषज्ञ बाजार की प्रवृत्तियों से लेकर जटिल उद्योग समस्याओं के प्रबंधन तक की चर्चा की जाती है। ट्रेड विंड्स के सत्र छात्रों को अपनी योजना को व्यापक बनाने तथा अंतरराष्ट्रीय व्यवसायों के बहुआयामी क्षेत्र के संपर्क में आने का मौका प्रदान करते हैं। आईआईएफटी ने अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाया है और ट्रेड विंड्स के अंतर्गत निम्नानुसार कुल छह शिखर सम्मेलनों की मेजबानी की है। इस वर्ष, श्री वी.एस. कृष्णन, राष्ट्रीय नेता, कर और आर्थिक नीति समूह, ईवाई ने मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन सत्र की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम का विषय था: निजीकरण का युग – ग्राहक केंद्रित व्यवसायों का उदय। इस अवसर पर श्री वी.एस. कृष्णन ने उद्योगों के विभिन्न क्षेत्रों में अनुकूलन और निजीकरण के बढ़ते महत्व पर जोर दिया।

1. राष्ट्रीय डिजिटल शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय डिजिटल शिखर सम्मेलन का आयोजन 5 अगस्त 2019 को किया गया। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''पर्सनलाइजेशन इन द एज ऑफ मशीन लर्निंग एंड एआई''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता थे – श्री डेल वाज, इंजीनियरिंग प्रमुख और एआई, स्विगी, श्री अभिषेक गुप्ता, सहायक उपाध्यक्ष – एआई और एमएल, एक्सिस बैंक, श्री हिमांशु दत्त, उपाध्यक्ष और ग्राहक सफलता के प्रमुख – डिजिटल लेंडिंग, डीएमआई कंज्यूमर क्रेडिट प्रा. लिमिटेड और सुश्री अलका डागर, लीड डेटा साइंटिस्ट, एसएंडपी ग्लोबल।

2. राष्ट्रीय संचालन शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय संचालन शिखर सम्मेलन 5 अगस्त 2019 को आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''रीथिंकिंग सप्लाई चेन इन द पर्सनलाइज्ड एज''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता थे – श्री ध्रुव अग्रवाल, सह–संस्थापक, शिप्सी, श्री अभय चिदड़ी, निदेशक, डिस्कवर इंडिया पैकेजिंग और श्री शिवा शैलेंद्रन, प्रमुख–संचालन, उबर।

3. राष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन

ट्रेड विंड्स 2019 कार्यक्रम के तहत, 6 अगस्त 2019 को राष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''कस्टुमाइजेशन इन इंटरनेशनल ट्रेड: पेरिल्स एंड अपोर्चुनिटीस''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री अनुज अग्रवाल, कॉफी – हेड, भारत, लुई ड्रेफस कंपनी, श्री माहिम शर्मा, शिपिंग एंड लॉजिस्टिक्स हेड, ग्लेनकोर एग्रीकल्चर, श्री हितेश जैन, निदेशक, फर्स्ट मेटल कॉर्प और श्री जगज्योत सिंह, सीईओ, ग्रेट वॉल ग्रुप थे।

4. राष्ट्रीय वित्त शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय वित्त शिखर सम्मेलन 6 अगस्त 2019 को आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''इनोवेशन स्टीमुलेटिंग पर्सनलाइजेशन इन फाइनेनसियल सर्विसेस''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री संजय खन्ना, फॉर्च्यून 100 कंपनी के सीनियर लीडर, श्री राजीव पी पवार, समूह प्रमुख – बैलेंस शीट मैनेजमेंट और निवेश, एडलवाइस वित्तीय सेवाएं, श्री गोपाल मेनन, सीओओ और सीएफओ, एक्सिस एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड, श्री अमितेश सिन्हा, वित्त प्रमुख, लिंक्डइन और श्री समीर सेकसरिया, उपाध्यक्ष और भारत संचालन प्रमुख, फ्रैंकलिन टेम्पलटन निवेश थे।

5. राष्ट्रीय विपणन शिखर सम्मेलन

ट्रेड विंड्स 2019 कार्यक्रम के अंतर्गत 7 अगस्त 2019 को राष्ट्रीय विपणन शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''बिल्डिंग ब्रांड लॉयल्टी इन द एज ऑफ हाइपर पर्सनलाइजेशन – शिफ्ट फ्राम ई–कॉमर्स

टु मी–कॉमर्स''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता थे – सुश्री श्रेया दासगुप्ता, प्रबंधक, उपभोक्ता और विपणन अंतर्दृष्टि, यूनिलीवर, श्री समीर यादव, विपणन प्रबंधक, चॉकलेट्स डिविजन, मोंडेलेज, श्री रजत माथुर, प्रमुख – ग्रुप लॉयल्टी मार्केटिंग एंड कस्टमर एनालिटिक्स, फ्यूचर ग्रुप, श्री बिक्रमजीत सिंह, लीड, डिजिटल मार्केटिंग एंड ई–कॉमर्स, गुडरिक ग्रुप और सुश्री श्रुति सामंत, डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञ – ब्रांड मार्केटिंग एंड ई–कॉमर्स, पी एंड जी हेल्थ।

6. राष्ट्रीय नेतृत्व शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय नेतृत्व शिखर सम्मेलन 7 अगस्त 2019 को ट्रेड विंड्स 2019 कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन का विषय था – ''एलाइनिंग मॉस कस्टुमाइजेशन विद कॉर्पोरेट स्ट्रेटजी''। शिखर सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री करण बहल, वरिष्ठ सलाहकार, ईवाई, श्री कृष्ण कौशल, वरिष्ठ प्रबंधक, कोलाबेरा, श्री सायांतन चटर्जी, निदेशक, पीडब्ल्यूसी, श्री अरिंदम मुखोपाध्याय, उपाध्यक्ष, गार्टनर, सुश्री इरा गिलानी, निदेशक, गोल्डरेट और श्री दीपक भारद्वाज, उपाध्यक्ष, सैमसंग थे।

टेडएक्स – आईआईएफटी

आईआईएफटी दिल्ली में मीडिया समिति ने अपनी मार्की इवेंट यानी टेडएक्स आईआईएफटी दिल्ली–2019 को प्रस्तुत किया। टेडएक्स आईआईएफटी दिल्ली के पांचवें संस्करण का विषय था – 'ड्रीम डिजायर डिस्कवर' और यह 19 अक्टूबर 2019 को आयोजित किया गया था।

टेडएक्स आईआईएफटी दिल्ली का पांचवा संस्करण – ''ड्रीम डिजायर डिस्कवर'' (19 अक्टूबर 2019)

सम्मानित वक्ताओं की सूची इस प्रकार है:

1. श्री अश्विन सांघी – बेस्ट सेलिंग लेखक
2. श्री जनरल बिक्रम सिंह – पूर्व थल सेनाध्यक्ष
3. श्री पंकज भदौरिया – मास्टरशेफ इंडिया विजेता
4. श्री ओमेयर तारिक – सह–संस्थापक, द स्क्रिब्ल्ड स्टोरीज
5. सुश्री वाणी त्रिपाठी – बोर्ड सदस्य, सीबीएफसी और पूर्व सचिव, भाजपा
6. श्री दिव्यांश मुंद्रा, लेखक और लोकप्रिय क्वोरा लेखक
7. श्री हिमांशु बख्शी – कॉर्पोरेट लीडर, मोटिवेशनल स्पीकर
8. सुश्री राधिका बोस – प्रसिद्ध फिटनेस और लाइफस्टाइल इन्फ्लुएंसर
9. श्री रोहन राठौर – इक्विटी रिसर्च स्टार्टअप के संस्थापक
10. श्री दीपांशु पाराशर – 15 वर्षीय साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ

खेलकूद गतिविधियाँ

आईआईएफटी में स्पोर्ट्स कमेटी ने एड्रिनालाइन – वार्षिक इंटर–कॉलेज स्पोर्ट्स फेस्ट ऑफ आईआईएफटी और अल्टीमेट वारियर्स लीग (यूडब्ल्यूएल) – वार्षिक इंट्रा–कॉलेज स्पोर्ट्स एक्सट्रावागेंजा का आयोजन किया।

मेलंगे (सांस्कृतिक समिति) की मदद से खेल समिति ने ''बिग फाइट'' में खेल स्पर्धाओं का आयोजन किया, एक ऐसा आयोजन जिसमें बैचों के भीतर विभिन्न वर्गों की टीमों के बीच वर्चस्व की लड़ाई को तय किया गया था। इससे दोनों बैचों के बीच मित्रतापूर्ण माहौल बनाने में मदद मिली।

एस्पिरेंट सिटी मीट्स – ड्रीम आईआईएफटी (ड्रिफ्ट)

आईआईएफटी की संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाने और प्रवेश के बारे में किसी भी कठिनाई को दूर करने के लिए, विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर निरंतर सहायता प्रदान करने के अलावा, दिल्ली और कोलकाता की मीडिया समिति ने आगामी बैच के लिए सिटी चैप्टर मीट का आयोजन किया। इन सिटी चैप्टर मीट्स का आयोजन मई 2019 के महीने में मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, बैंगलोर, चेन्नै, पुणे और विशाखापत्तनम में किया गया और सभी उम्मीदवारों की शंकाओं का समाधान किया गया। ये बैठकें आईआईएफटी में वास्तविक जीवन का अनुभव कराने के तौर पर छात्रों के प्रथम संपर्क के रूप में कार्य करती हैं।

चौसर – नेशनल कंसल्टिंग कॉन्क्लेव 2019

पहली बार, आईआईएफटी ने परामर्श के क्षेत्र के आसपास केंद्रित एक नोवल कॉन्क्लेव की मेजबानी की। चौसर ने एक राष्ट्रीय केस स्टडी प्रतियोगिता के साथ शुरुआत की, जिसमें देश के 25 विभिन्न संस्थानों के छात्रों ने भाग लिया, इसके बाद निम्नलिखित क्षेत्रों में उद्योग के दिग्गजों द्वारा चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं:

- रणनीति परामर्श
- संचालन परामर्श
- वित्तीय सलाहकार परामर्श
- आईटी परामर्श

चौसर 12–13 अक्टूबर 2019 को आयोजित किया गया था और इसमें छात्रों की उत्साहजनक भागीदारी देखी गई थी। इसने आईआईएफटी को स्वयं को परामर्श के एक केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद की, जहां विभिन्न संगठन व्यवसाय की समस्याओं के समाधान के लिए देश में सबसे अच्छी समझ रखने वालों को खोज सकते हैं।

छठा वार्षिक आईआईएफटी मैराथन

मैराथन नवंबर 2019 में आयोजित किया गया प्रथम प्री–क्वो वादिस है। मैराथन मार्ग आईआईएफटी पर शुरू होकर यहीं समाप्त हुआ। इसमें विदेशी नागरिकों, कॉलेज के छात्रों और गैर–सरकारी संगठन के बच्चों सहित अनुभवी पेशेवर धावकों की भागीदारी थी। यह कार्यक्रम लायंस क्लब चाईबासा, रेव्स, स्टीपल आदि द्वारा प्रायोजित मधुमेह के बारे में जागरूकता फैलाने के विषय के आसपास केंद्रित था। भारतीय ओलंपियन और स्प्रिंटर श्री ललित माथुर ने अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

संस्थान के छात्रों द्वारा आयोजित छठी वार्षिक मैराथन (नवम्बर 2019)

रक्तदान शिविर

रक्तदान शिविर 20 नवंबर 2019 को आयोजित किया गया था और आईआईएफटी के 100 से अधिक छात्रों ने एक पुण्य कार्य के लिए रक्तदान किया। यह आयोजन एचडीएफसी बैंक द्वारा प्रायोजित किया गया था।

संस्थान के छात्रों द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर (20 नवम्बर 2019)

क्वो वादिस 2019

क्वो वादिस 2019 का आयोजन जनवरी 2019 में किया गया था। तीन दिन के दौरान बड़ी संख्या में प्रबंधन और सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे रैम्प बर्न, कॉमेडी कैफे आदि आयोजित किए गए थे। इसके अतिरिक्त, अलग–अलग क्षेत्रों यथा मार्कियन, इटरनिटीज कॉल, कॉग्नोसेंटिया, समहवा आदि से प्रबंधन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए थे।

एक रॉक नाइट, एक कॉमेडी नाइट और स्टार नाइट का आयोजन क्रमशः 25 जनवरी, 26 जनवरी और 27 जनवरी 2019 को किया गया था।

वर्ष 2019 के कार्यक्रम में पूरे भारत के बी–स्कूलों के छात्रों और 6000 से अधिक लोगों की भागीदारी देखी गई।

आईआईएफटी कोलकाता में गतिविधियाँ

मॉडल संयुक्त राष्ट्र (एमयूएन)

आईआईएफटी ने आईडीसी के साथ दो दिन अर्थात 17 और 18 अगस्त 2019 तक चलने वाले मॉडल संयुक्त राष्ट्र का सफलतापूर्वक संचालन किया। आईआईएफटी के पब्लिक पॉलिसी क्लब द्वारा आईआईएफटी आईडीसी एमयूएन का आयोजन किया गया था और इस कार्यक्रम में कुछ तीखी बहसें, सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध संकल्प और वर्तमान में दुनिया के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों के लिए कुछ नवीन समाधान देखे गए। एमयूएन में पाँच संयुक्त राष्ट्र परिषद और एक लोकसभा शामिल थी, जिसमें समुद्री नीति से संबंधित विभिन्न एजेंडे, शांति व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका, हथियार, युद्ध, जलवायु परिवर्तन और सतत् विकास शामिल थे। उद्घाटन समारोह में, मुख्य अतिथि, सीआरवाई में पूर्वी क्षेत्र की निदेशक सुश्री त्रिना चक्रवर्ती ने प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए उनसे समर्पण के साथ नए अनुभवों और सीखों के प्रति जागरूक रहने का आग्रह किया।

समापन समारोह के दौरान, अनुसंधान और आचरण के मामले में अपने साथी प्रतिनिधियों की तुलना में बेहतर कार्य करने वाले विजेताओं को सम्मानित कर सत्तर हजार के पुरस्कार बांटे गए।

विवान 5.0

विवान 5.0, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), कोलकाता का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन 11 अगस्त 2019 को संपन्न हुआ। 9 सितंबर को आरंभ हुए त्रिदिवसीय शिखर सम्मेलन में वित्त, विपणन, व्यापार एवं संचालन, रणनीति तथा विश्लेषिकी, सार्वजनिक नीति और उद्यमिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हस्तियों की मेजबानी की गई। श्री इंद्रियाजीत सेठी विवान 5.0 में मुख्य वक्ता थे।

आईआईएफटी का अंतरराष्ट्रीय व्यापार शिखर सम्मेलन **विपणन शिखर सम्मेलन** के साथ आरंभ हुआ। शिखर सम्मेलन के लिए चार पैनलिस्ट थे। ब्रांड प्रासंगिकता, सांस्कृतिक नवाचार और ग्राहक के संबंध में ''मार्केटिंग नेक्सस'' विषय पर चर्चा की गई। शिखर सम्मेलन का समापन आईआईएफटी कोलकाता की विपणन पत्रिका, 'मार्कमन्त्रा' के विमोचन के साथ हुआ।

व्यापार एवं संचालन शिखर सम्मेलन में प्रमुख संस्थानों के उच्च अधिकारी पैनलिस्ट थे। विषय था: ''ग्लोबल मैक्रोइकॉनॉमिक शिफ्ट्स द्वारा संचालित व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला में अवसरों का लाभ उठाना।''

वित्त शिखर सम्मेलन के पांच पैनलिस्ट थे। शिखर सम्मेलन के लिए मध्यस्थ श्री सिद्धार्थ रस्तोगी (एंबेट एसेट मैनेजमेंट के प्रबंध निदेशक) थे। शिखर सम्मेलन का विषय था, ''बदलते परिदृश्य में वित्त–पोषण में व्यवधान और परिवर्तन''। शिखर सम्मेलन का समापन आईआईएफटी की वित्त पत्रिका 'इनफीनीटी' के विमोचन के साथ हुआ।

रणनीति और विश्लेषण शिखर सम्मेलन में चार पैनलिस्ट थे और इसका संचालन श्री नवीन एथ्रेश (सीनियर प्रोडक्ट लीडर, राकुटेन) ने किया था। पैनल ने डेटा सुरक्षा नियमों की आवश्यकता को रेखांकित किया और डेटा गुणवत्ता तथा भंडारण के मुद्दे की जानकारी दी।

श्री एन शिवसैलम, आईएएस – विशेष सचिव (लॉजिस्टिक्स), वाणिज्य मंत्रालय द्वारा शाम को एक वार्ता प्रस्तुत की गई, जिसमें उन्होंने ई–कॉमर्स से उदाहरणों का हवाला देते हुए लॉजिस्टिक्स के उपयोग और सामर्थ्य प्रदान करने के बारे में विस्तार से बात की। यह सत्र ''ट्रेडइन पत्रिका'' के प्रथम संस्करण के अनावरण के साथ सम्पन्न हुआ।

पीपल ट्री वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ श्री संतोष परुलेकर की संध्याकालीन वार्ता के साथ त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन संपन्न हुआ। संध्याकालीन वार्ता का आयोजन कोशिश, आईआईएफटी के सामाजिक–जागरूकता सेल द्वारा किया गया था। सभी शिखर सम्मेलनों में छात्रों के साथ ऊर्जावान बातचीत सत्र आयोजित किए गए और उन्होंने इस आयोजन से बहुमूल्य अंतर्दृष्टि के साथ प्रस्थान किया।

टेडेक्स

आईआईएफटी कोलकाता में प्रथम टेडेक्स आयोजन का विषय था, ''रिपल्स एंड वेव्स''। विभिन्न उद्योगों के आठ प्रख्यात व्यक्तियों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। भारत के 17वें मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. शहाबुद्दीन याकूब कुरैशी ने भारत के चुनावों को हमेशा के लिए बदल देने वाले कुछ नवाचारों पर एक शानदार सत्र प्रस्तुत किया। टाटा एआईए लाइफ इंश्योरेंस के डिजिटल प्रमुख श्री सत्यार्थ प्रियदर्शी ने बोलने की स्वतंत्रता के प्रावधानों का दुरुपयोग करने वाले व्यक्तियों और निगमों के कारण नैतिक मानकों के पतन पर खेद व्यक्त किया। इस आयोजन में वक्ताओं से उत्साहजनक और बहुमूल्य बातचीत सत्र सामने आए।

नेतृत्व कॉन्क्लेव

नेतृत्व कॉन्क्लेव का उद्घाटन संस्करण 9 मार्च 2019 को आईआईएफटी, कोलकाता में आयोजित किया गया था। इसमें वरिष्ठ उद्योग विशेषज्ञों तथा नेताओं को इस वर्ष का ''विषय #10ईयरचैलेंज और प्रतिभा, रणनीति, लक्ष्य तथा प्रौद्योगिकी पर इसके प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, बाहरी वातावरण और व्यापार परिदृश्यों में परिवर्तन को कैसे अपनाया जाए'', पर अपनी अंतर्दृष्टि और धारणाओं को साझा करने के लिए बुलाया गया था।

पॉलीकैब इंडिया लिमिटेड में रणनीति और मानव संसाधन के अध्यक्ष श्री सुरेश कुमार द्वारा प्रातःकालीन सत्र का संचालन किया गया। उन्होंने इस प्रकार के परिवर्तनों की हानि पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि उन्हें ठीक से प्रबंधित नहीं किया जा रहा है, लेकिन आशा प्रकट की कि भावी पीढ़ी उन चुनौतियों का सामना करेगी।

समापन सत्र शाम को श्री सलिल गर्ग, निदेशक और सह–प्रमुख, लार्ज कॉर्पोरेट रेटिंग्स, इंडिया रेटिंग्स और रिसर्च इंक द्वारा आयोजित किया गया था, उन्होंने भारतीय बिजली क्षेत्र में परिवर्तनों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

अनलीस टॉक सीरीज

ई–सेल ने आईआईएफटी कोलकाता – अनलीस की अपनी इन–हाउस टॉक सीरीज जारी रखी। मुंबई विश्वविद्यालय में नेतृत्व विज्ञान में परास्नातक के उप निदेशक श्री राधाकृष्णन पिल्लई ने 20 फरवरी 2019 को परिसर का दौरा किया और विकासशील नेतृत्व एवं उद्यमिता कौशलः द चाणक्य वे, पर अपनी बात केंद्रित की। उन्होंने छात्रों को मजबूत एवं लक्ष्य–प्रेरित रहने और शुरू से ही नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

रक्तदान शिविर

समय–समय पर, आईआईएफटी के छात्र समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद करने के लिए अपनी हरसंभव कोशिश करते हैं। ऐसी ही एक पहल के तहत, 26 जनवरी 2019 को संस्थान के कोलकाता परिसर में सामाजिक जागरूकता प्रकोष्ठ – **कोशिश** द्वारा एक रक्तदान शिविर लगाया गया। इस अभियान का आयोजन **ब्लडकनेक्ट** नामक एनजीओ के साथ मिलकर किया गया जो भारत में रक्त की कमी की समस्या के समाधान के लिए तत्परतापूर्वक कार्य कर रहा है। आईआईएफटी कोलकाता के छात्रों ने मिलकर बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। संस्थान को लगभग 60 रक्तदाताओं पर गर्व है। इस अभियान ने इस कार्य के बारे में छात्रों में सामाजिक जागरूकता पैदा करने में मदद की और उन्हें अपने प्रबंधन कौशलों को निखारने में मदद की।

बजट प्लस

बजट प्लस–2019, आईआईएफटी कोलकाता की वार्षिक बजट चर्चा और विश्लेषण कार्यक्रम, फरवरी 2019 में आयोजित किया गया था। इसमें उल्लेखनीय वक्ता थे–

1. श्री विवेक जालान, सह–अध्यक्ष, अप्रत्यक्ष कर समिति – बंगाल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री;
2. श्री अरिजीत चक्रवर्ती, बीएसआर एंड कंपनी एलएलपी में अंतरराष्ट्रीय कर और नियामक सेवा निदेशक;
3. डॉ. अजीतवा रे चौधरी, जादवपुर विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग में प्रोफेसर;
4. डॉ. बिबेक राय चौधरी, आईआईएफटी कोलकाता में एसोसिएट प्रोफेसर।

पैनलिस्ट की चर्चा के बाद, मंच दर्शकों के लिए कुछ बेहतर प्रश्नों के लिए खुला था, जो उनको अंतर्दृष्टि प्रदान करने में वक्ताओं की बुद्धि और विशेषज्ञता से मेल खाता था। अंत में, वक्ताओं को सम्मानित किया गया, जिसने एक अद्भुत चर्चा के समापन का संकेत दिया जिसने पूर्व राय को चुनौती दी और 2019 के बजट पर एक ताजा और समृद्ध विश्लेषण स्वागत प्रस्तुत किया।

बैटल बाई द लेक्स (बीबीटीएल)

बैटल बाई द लेक्स, आईआईएफटी कोलकाता में आयोजित खेल प्रतियोगिताओं की एक श्रृंखला है जहां कनिष्ठ और वरिष्ठ बैच दोनों के छह डिवीजन एक–दूसरे के विरूद्ध प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह आयोजन एक सप्ताह तक चला, जिसमें इनडोर और आउटडोर दोनों तरह के खेलों का आयोजन किया गया। यह आयोजन टीम वर्क के महत्व के साथ–साथ बैचमेट्स के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है। यह खंड प्रतियोगिता जो आईआईएफटी कोलकाता की परंपरा रही है, निस्संदेह सबसे प्रत्याशित घटनाओं में से एक है और अगले वर्ष के विजेताओं को देखने के लिए प्रतीक्षा करने तक इसकी चमक निरंतर बनी रहेगी।

13वां कैंपस दिवस समारोह

आईआईएफटी कोलकाता कैंपस ने अपना ''13वां कैंपस डे'' बड़े उत्साह और जोश के साथ 16 जुलाई 2019 को मनाया। इस कार्यक्रम को छात्रों ने सांस्कृतिक प्रदर्शन द्वारा यादगार बनाया।

पूर्व–छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक

आईआईएफटी कोलकाता को पहली बार पूर्व–छात्र कार्यकारी परिषद की बैठक की मेजबानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बैठक के बाद बहुप्रतीक्षित कोलकाता एलुमनी चैप्टर मीट हुई। नए छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक प्रदर्शन की सभी ने सराहना की और बाद में, पूर्व–छात्र भी समारोह में शामिल हुए। नए छात्र प्रतिनिधियों ने इस अवसर का उपयोग पूर्व–छात्रों के साथ बातचीत करने और एक सफल पेशेवर कॅरियर बनाने के विभिन्न पहलुओं पर अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया।

गणतंत्र दिवस समारोह, स्पिक–मैके कार्यक्रम

इसका शुभारंभ डॉ. के. रंगराजन, प्रमुख, कोलकता केन्द्र द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ, तत्पश्चात मिष्ठान वितरण किया गया। इसके कुछ समय बाद ही, डॉ. मालाबिका मित्रा ने एक प्रस्तुति दी। उनके साथी कलाकार थे – तबले पर पंडित दीनानाथ मिश्रा, सरोद पर श्री अभिजीत रे और स्वर दिया श्री प्रताप बनर्जी ने।

कुल मिलाकर, आईआईएफटी में 70वां गणतंत्र दिवस समारोह एक सांझी संस्कृति से संबंधित सामूहिक भावना से मनाया गया। मनोरंजन और जिम्मेदारी से मिलकर, पारंपरिक वेशभूषा में सुसज्जित परिधान के साथ छात्रों का दृश्य अत्यंत मनोहारी था।

अद्वैत 2.0

वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव, अद्वैत के अंतर्गत परिसर में ट्रेजर हंट का आयोजन किया गया। इसके बाद पेंटबॉल और जोरब फाइट का आयोजन किया गया। शाम को आदियोस (बैच 2017–2019 के लिए विदाई समारोह) का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ और कनिष्ठ दोनों बैचों ने प्रदर्शन किया और अंत में रात को 'रुद्राक्ष' द्वारा बैंड प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

थैंक्सगिविंग 2019

आईआईएफटी ने थैंक्सगिविंग के अपने 2019 संस्करण की मेजबानी की। छात्रों ने अकादमिक ब्लॉक और छात्रावास के सुचारू संचालन के लिए जिम्मेदार स्टाफ द्वारा सहयोग प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया।

दिलकश संस्कृति को हमेशा आईआईएफटी में सम्मान दिया जाता है। एक प्रकार का भावनात्मक लगाव है जो हम सुरक्षा गार्ड, सहयोगी कर्मचारियों और अन्य सभी सदस्यों के प्रति रखते हैं।

गैराज सेल 2019

गैराज सेल आयोजन में छात्रों ने अपनी रचनात्मकता और बेचने के कौशल को मजेदार ढंग से प्रदर्शित किया। प्रत्येक स्टाल पर पोस्टर, अभिनव उत्पाद किस्मों के माध्यम से ग्राहकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धा की गई, जिनका नाम मूवी थीम और व्यापक सोशल मीडिया प्रचार को ध्यान में रखते हुए रखा गया। रात विक्रेताओं की जोशीली तेज आवाज और ''लोकप्रिय पसंद'' एवं ''समीक्षक पुरस्कार'' के लिए घमासान लड़ाई के बीच संगीत एवं रोशनी के साथ जीवंत हो गई।

गेम स्टाल अपनी किस्मत आजमाने वाले खिलाड़ियों से भरे थे, मोहक व्यंजनों वाले फूड स्टाल की ओर भीड़ उमड़ रही थी और लोग फोटो–बूथ के लिए लाइन लगा रहे थे।

(ए) छात्र उपलब्धियाँ

पुरस्कारों के संदर्भ में, जिन्हें तुलनात्मक प्रदर्शन के साथ–साथ अन्य संस्थानों के लिए एक बेंचमार्क के रूप में माना जाता है, उनमें आईआईएफटी के छात्रों ने भाग लिया और प्रमुख संगठनों तथा प्रमुख बी–स्कूलों द्वारा आयोजित मुख्य प्रतियोगिताओं में जीत हासिल की। कुछ उल्लेखनीय पुरस्कारों जिनमें आईआईएफटी के छात्रों ने अच्छा प्रदर्शन किया, वे हैं – महिंद्रा एंड महिंद्रा द्वारा वॉर रूम, रेकिट बेन्किजर द्वारा आयोजित आरबी ग्लोबल चैलेंज, हिंदुस्तान यूनिलीवर द्वारा आयोजित लाइम और कार्पे डायम, गोदरेज द्वारा आयोजित लाउड, आईसीआईसीआई द्वारा बीट द कर्व आदि।

संस्थान के छात्र श्री प्रथमेश ढहाके, सुश्री वर्षा टी.वी. और वाई. वेंकट चंद्रशेखर की टीम ने डफएंडफेल्प्स द्वारा आयोजित योयूनिवर्सिटी डील चैलेंज 2020, इंडिया में नेशनल सेकेंड रनर्स अप के रूप में स्थान प्राप्त किया।

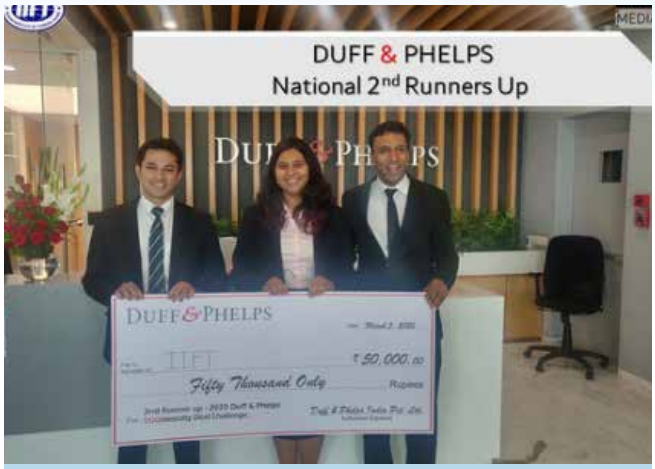

योयूनिवर्सिटी डील चैलेंज 2020 प्रतिस्पर्धा के विजेता छात्र।

लगातार 5वीं बार संस्थान के छात्रों ने प्रतिष्ठित और कड़ी प्रतिस्पर्धा सीएफए रिसर्च चैलेंज का जोनल राउंड जीता। नेशनल्स के लिए श्री मिलन, सुश्री आरुषि अरोड़ा, श्री शगुन गुप्ता, श्री शिवम नागपाल और श्री मीत पंचाल का चयन अपेक्षित रहा।

सीएफए रिसर्च चैलेंज प्रतिस्पर्धा के विजेता छात्र।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, दिल्ली परिसर के छात्रों की टीम 'विगोरस वाइकिंग्स' ने ''महिंद्रा वार रूम सीजन–12'' जीता। यह प्रतियोगिता सबसे पुरानी है और इसे डेयर2कंपीट द्वारा शीर्ष 3 प्रतिष्ठित बी–स्कूल कॉर्पोरेट प्रतियोगिताओं में स्थान दिया गया। आईआईएफटी ने भारत के शीर्ष 24 बिजनेस स्कूलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और इस प्रतियोगिता में 4 अंतरराष्ट्रीय बिजनेस स्कूलों ने भाग लिया।

''महिंद्रा वार रूम सीजन–12'' प्रतिस्पर्धा के विजेता छात्रों की टीम 'विगोरस वाइकिंग्स'।

'विगोरस वाइकिंग्स'

श्री/सुश्री अक्षय भुटाडा, आयुषी गुप्ता, हर्षिता सलूजा और निधि शाह की टीम विगोरस वाइकिंग्स ने महिंद्रा एंड महिंद्रा से एक क्लब महिंद्रा हॉलिडे एक्सपीरियंस, पीपीआई और फॉर्मूला ई इंटरनेशनल रेस के लिए सभी खर्चों का भुगतान व ट्रिप के साथ 5 लाख रूपए की राशि जीती।

संस्थान में राजभाषा हिंदी

संस्थान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को शत–प्रतिशत पूरा करने के लिए पूर्ण रूप से जागरूक व वचनबद्ध है। संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार दिन–प्रति–दिन उन्नयनता की ओर अग्रसर है। राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए संस्थान को समय–समय पर माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** तथा वाणिज्य मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा **"शील्ड/ट्राफी"** प्रदान की गई हैं, जो इसकी प्रमाणिकता को दर्शाता है। संस्थान में कार्यालयीन कामकाज के साथ–साथ शिक्षण एवं प्रशिक्षण में भी हिंदी की उपयोगिता को बढ़ावा दिया गया है। वर्ष 2019–20 के दौरान हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:–

1. **राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन** – राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत दर्शाए गए सभी कागजात अर्थात कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचनाएं, संविदाएं, करार, टेंडर के फार्म और नोटिस, नियम, दोनों सदनों में प्रस्तुत किए जाने वाले सभी सरकारी कागज व प्रशासनिक रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप में जारी की गईं।

2. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 का अनुपालन** – संस्थान के कोड, भर्ती नियम, संविधान, पुस्तकालय नियम व विनियम, अंशदायी भविष्य निधि नियम, सेवाओं की हस्तपुस्तिका, नागरिक प्राधिकार, परामर्श नियम, पुस्तकालय नियम व विनियम, आदि को समय–समय पर संशोधित करते हुए द्विभाषी रूप से संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया।

   (क) सभी साइनेज, रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, लोगो, सीलें, पत्र शीर्ष, विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी रूप में उपयोग किए गए।

   (ख) संस्थान में कर्मचारियों द्वारा सभी प्रपत्र जैसे अवकाश आवेदन, चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल, यात्रा रियायत बिल, वाहन व्यय, ट्यूशन फीस प्रतिपूर्ति इत्यादि पूरी तरह द्विभाषी रूप में उपयोग में लाए गए।

   (ग) संस्थान में आयोजित होने वाले सभी शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रवेश–पत्रों तथा बैनर आदि को द्विभाषी रूप में तैयार किया गया।

3. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम–5 का अनुपालन** – संस्थान के सभी अनुभागों/विभागों में प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर पूर्ण रूप से हिंदी में ही दिया गया।

4. **पत्राचार की स्थिति** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है, अतः **"क"** और **"ख"** क्षेत्र में अधिक से अधिक पत्राचार हिंदी/द्विभाषी रूप में किया गया। वर्ष के दौरान हिंदी पत्राचार की स्थिति लगभग वार्षिक कार्यक्रम 2019–20 के अनुरूप रही।

5. **संस्थान की द्विभाषी वेबसाइट** – संस्थान की वेबसाइट हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है तथा अंग्रेजी वेबसाइट के साथ–साथ हिंदी वेबसाइट को समय–समय पर अद्यतन किया गया।

6. **शिक्षण कार्यक्रम** – संस्थान में शिक्षण–प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रबंधन विकास कार्यक्रमों में विभिन्न सरकारी, सार्वजनिक, निजी संस्थाओं से आए अधिकारियों को हिंदी व अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा के माध्यम से प्रबंधन व अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय पर सघन शिक्षण/प्रशिक्षण दिया गया।

7. **छमाही प्रोत्साहन योजना** – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रोत्साहन योजनाओं का प्रावधान किया गया है। वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में छमाही प्रोत्साहन योजना लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के रूप में प्रति कर्मचारी राशि ₹1000/– प्रदान की जाती है।

8. **नराकास की बैठक** – संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास दक्षिण दिल्ली–3) का सदस्य कार्यालय है। संस्थान ने वर्ष के दौरान नराकास द्वारा समय–समय पर आयोजित सभी बैठकों में अपनी भागीदारी दर्ज की।

संस्थान की ओर से नराकास की छमाही बैठक में भाग लेते श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव व श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी। (22.05.2019)

9. **तिमाही बैठक** – वर्ष 2019–20 के दौरान राजभाषा नियमों के अनुपालनार्थ प्रत्येक तिमाही में निदेशक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों के दौरान संस्थान में राजभाषा कार्यों की समीक्षा व प्रगामी प्रयोग संबंधी निर्णय लिए गए। बैठकों की तिथियां निम्न प्रकार हैं :–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जुलाई–सितम्बर 2019	31 अक्तूबर 2019
अप्रैल–जून 2019	10 जुलाई 2019

तिमाही विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक। (31.10.2019)

10. **हिंदी कार्यशाला** – संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की गईं। वर्ष 2019–20 में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की तिथियां इस प्रकार हैं:–

तिमाही	आयोजन की तिथि
जनवरी–मार्च 2020	12 मार्च 2020
अक्तूबर–दिसम्बर 2019	14 नवम्बर 2019
अप्रैल–जून 2019	27 जून 2019

तिमाही हिंदी कार्यशाला। (12.03.2020)

11. **हिंदी में प्रकाशन** – संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2018–19 का हिंदी में प्रकाशन किया गया। हर वर्ष की भांति, हिंदी कक्ष द्वारा गृह–पत्रिका **'यज्ञ' अंक–12, वर्ष 2019** का प्रकाशन किया गया। पत्रिका में संस्थान की मुख्य गतिविधियाँ तथा राजभाषा नियमों के अतिरिक्त, आईआईएफटी परिवार अपने मन की बात कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आदि के माध्यम से व्यक्त करता रहा है। इससे सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है एवं विचारों का आदान–प्रदान होता है।

12. **'वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' पुरस्कार** – वर्ष के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के अंतर्गत नराकास (दक्षिण दिल्ली–2) के सदस्य कार्यालय के.वी. रंगपुरी द्वारा 31 जनवरी 2019 को नराकास के 71 सदस्य कार्यालयों के बीच हिंदी में 'वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में संस्थान की ओर से श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लिपिक ने भाग लिया तथा पुरस्कार विजेता रहे। दिनांक 22 मई 2019 को आयोजित छमाही नराकास की बैठक में अध्यक्ष, नराकास द्वारा श्री संजीव कुमार को प्रशस्ति–पत्र व नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास (दक्षिण दिल्ली–2) के सदस्य कार्यालयों के बीच आयोजित 'वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' में संस्थान के पुरस्कार विजेता श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लिपिक। (22.05.2019)

13. **हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' अंक–12 का पुनः विमोचन – दिनांक** 22.05.2019 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक के दौरान संस्थान की ओर से उप–कुलसचिव, श्री गौरव गुलाटी की उपस्थिति में अध्यक्ष, नराकास ने संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' अंक–12, वर्ष 2019 को प्रदर्शित किया जिसमें सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा करतल ध्वनि के साथ पत्रिका की साज–सज्जा व सामग्री की भूरी–भूरी प्रशंसा की गई।

नराकास (दक्षिण दिल्ली–2) की छमाही बैठक के दौरान नराकास सदस्यों के समक्ष संस्थान की हिंदी गृह–पत्रिका ''यज्ञ'' अंक–12, वर्ष 2019 को प्रदर्शित करते हुए नराकास, अध्यक्ष व संस्थान के उप–कुलसचिव, श्री गौरव गुलाटी। (22.05.2019)

> **हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।**
>
> **– देवव्रत शास्त्री**

"सतत् विपणन" की आवश्यकता

डॉ. प्रतीक माहेश्वरी

एक पुरानी कहावत है कि "बोलने वाले की छाछ भी बिक जाती है और ना बोलने वाले का घी भी पड़ा रह जाता है"। यह बात मार्केटिंग और उसके महत्व को बेहद आसान तरीके से समझाती है। किसी भी व्यापार या व्यवसाय की सफलता काफी हद तक प्रभावी मार्केटिंग पर निर्भर करती है। बेहद गतिशील व जटिल चुनौतियों से भरे हुए मौजूदा व्यावसायिक परिवेश एवं संसाधनों की सीमित उपलब्धता ने मार्केटिंग को हर व्यवसाय का अपरिहार्य अंग बना दिया है।

जहाँ तक मार्केटिंग की बात है तो इसकी शुरूआत किसी न किसी रूप में व्यवसाय के विकास के साथ ही रही है। परन्तु समय बीतने के साथ–साथ इसका स्वरूप भी परिवर्तित होता रहा है। अध्ययन और शोध की दृष्टि से एक विषय के रूप में मार्केटिंग का इतिहास भी बहुत पुराना नहीं है। प्रारंभिक दिनों में इसे उत्पादन से जोड़कर देखा गया जिसका मुख्य उद्देश्य उत्पादों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करना था। वर्ष 1950 के दशक तक मार्केटिंग को लेकर यही धारणा बनी रही कि आपूर्ति (सप्लाई) अपनी मांग खुद बनाती है। बाद में, इसको उत्पाद की गुणवत्ता, उसकी विशेषताओं, डिजाइन और विश्वसनीयता से जोड़कर देखा जाने लगा, जिसे "उत्पाद अवधारणा" (प्रोडक्ट कॉन्सेप्ट) कहा गया। फिर एक दौर ऐसा आया जब मार्केटिंग विशेषज्ञों का पूरा ध्यान सिर्फ उत्पाद बेचने और उसके प्रचार–प्रसार पर रहा। इसे "विक्रय अवधारणा" (सेलिंग कॉन्सेप्ट) के रूप में जाना गया। इस दौरान, कंपनियों के लिए ग्राहकों की जरूरतों, इच्छाओं और सार्थक ग्राहक जुड़ाव से अधिक महत्वपूर्ण, उत्पाद की अधिकाधिक बिक्री था।

वर्ष 1970 के दशक के बाद विपणन पेशेवरों (मार्केटिंग प्रोफेशनल्स) का ध्यान ग्राहक की जरूरतों और इच्छाओं की ओर केंद्रित होने लगा एवं व्यवसाय के केंद्र में ग्राहक को सर्वोपरि माना जाने लगा। इस दौर में मार्केटिंग का प्रमुख उद्देश्य मूल्य वितरण (वैल्यू डिलीवरी) रहा। 21वीं सदी की शुरूआत के बाद, मार्केटिंग का स्वरूप उपभोक्ता तथा सामाजिक कल्याण की ओर उन्मुख हुआ जिसे 'सामाजिक या समग्र विपणन' (सोसाइटल और होलिस्टिक मार्केटिंग) का नाम दिया गया। इस विचार ने मार्केटिंग की अवधारणा (कॉन्सेप्ट) में सामाजिक चिंता को शामिल करने पर जोर डाला। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता की जरूरतों और चाहतों को पूरा करते समय कंपनियों को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उनकी व्यावसायिक गतिविधियाँ उपभोक्ता व समाज के लिए हानिकारक न हों।

यह बात गौरतलब है कि औद्योगिक क्रांति के दौरान स्थापित मार्केटिंग की सोच और मान्यताएं आज के समय में पूर्ण रूप से तर्कसंगत नहीं हैं। उस दौर में प्राकृतिक संसाधन इतने अधिक मात्रा में थे कि वे असीमित प्रतीत होते थे। औद्योगिक कचरे को सोखने की पर्यावरण की क्षमता भी समान रूप से अटूट थी। अतः व्यापार का काम स्पष्ट रूप से प्राकृतिक संसाधनों को यथासंभव तेजी और कुशलता से उत्पादों में परिवर्तित करना था।

लेकिन, समय बीतने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण का तीव्र गति से क्षय हुआ है। पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन भी असीम नहीं हैं और कई मामलों में उनकी आपूर्ति बेहद कम है। औद्योगिक अपशिष्ट (वेस्ट) पदार्थों का पुनर्चक्रण (रीसाइकिलिंग), जलवायु परिवर्तन, जनसांख्यिकी पर प्रतिकूल प्रभाव आदि प्रमुख वैश्विक चुनौतियाँ बन रहे हैं। इन सबके चलते व्यापार और विपणन का पारंपरिक प्रतिमान (मॉडल) मौजूदा परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है। इसके फलस्वरूप, मार्केटिंग के जानकारों का रुझान एक नए स्वरूप, एक नई अवधारणा की ओर होने लगा है जो स्थायित्व की बात करता है। इसी अवधारणा को 'सस्टेनेबल मार्केटिंग' (स्थायी या सतत् विपणन) कहा जाता है।

सस्टेनेबल मार्केटिंग को सामाजिक या समग्र विपणन के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है, जिसका उद्देश्य ग्राहक मूल्य को इस तरह वितरित करना है जिससे प्राकृतिक और मानव पूँजी दोनों को संरक्षित और संवर्धित किया जा सके। आज मार्केटिंग पर्यावरणीय और सामाजिक स्थिरता की दिशा में एक

बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहा है। सस्टेनेबल मार्केटिंग निश्चय ही एक जटिल प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत ग्राहक मूल्य के निरंतर वितरण के साथ–साथ नई सोच और नए व्यापारिक संबंध भी आवश्यक हैं। इस उद्देश्य से जहाँ कुछ संगठन आंतरिक स्थिरता टीमों को गठित करते हैं, वहीं कुछ कंपनियाँ पर्यावरणीय गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओज) के साथ मिलकर सस्टेनेबिलिटी के लिए कार्यरत हैं। उदाहरण के तौर पर कोका–कोला, वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड के साथ; वाल–मार्ट, कंजरवेशन इंटरनेशनल के साथ और जनरल मोटर्स, नेचर कन्ज़र्वेंसी के साथ साझेदारी में इस दिशा में प्रयासरत है। भारत में भी कई कॉर्पोरेट समूह, सस्टेनेबल बिजनेस और मार्केटिंग हेतु अग्रसर हुए हैं जिनमें विप्रो, टाटा केमिकल्स, इनफोसिस, महिंद्रा एंड महिंद्रा, टाटा मोटर्स, आईटीसी आदि प्रमुख हैं। सतत् विकास को साकार करने के लिए सहयोग (कोलेबोरेशन्स) एक प्रभावी और परिवर्तनात्मक साधन है। यदि मौजूदा व्यवसायों को नई पीढ़ियों के लिए प्रासंगिक बने रहना है तो आज नहीं तो कल उन्हें 'सस्टेनेबल मार्केटिंग' को अपनाना ही होगा। इसके लिए कंपनियों को सभी हितधारकों को साथ लेते हुए न केवल जरूरी संसाधन जुटाने होंगे बल्कि दीर्घकालिक साझेदारी भी विकसित करने की आवश्यकता है।

> **हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।**
>
> **– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

लॉजिस्टिक्स 4.0 - स्वायत्त निर्णयों और अनुप्रयोगों का महत्वपूर्ण स्वरूप

—यामिनी नायर चांदवानी

लॉजिस्टिक्स मूल बिंदु से उपभोग के बिंदु तक कुशल परिवहन और माल के भंडारण की योजना तथा क्रियान्वयन की प्रक्रिया है। लॉजिस्टिक्स का लक्ष्य ग्राहकों की आवश्यकताओं को समय पर, लागत प्रभावी तरीके से पूरा करना है। हाल के वर्षों में, तकनीकी नवाचारों की उच्च मात्रा के कारण लॉजिस्टिक्स का क्षेत्र काफी बदल गया है।

अनिवार्य तकनीकी परिवर्तन ने उद्योगों के कार्य करने के तरीके को प्रभावित किया है। बाजार के कामकाज के प्रत्येक खंड को डिजिटलीकरण ने प्रभावित किया है। उद्योगों ने पहले से ही सहयोग, परिचालन कार्यगति बनाने के लिए आधुनिक कारखानों, स्मार्ट प्रौद्योगिकियों को जोड़ना शुरू कर दिया है। पारंपरिक दृष्टिकोण से डिजिटल आपूर्ति श्रृंखला में बदलाव किया गया है जो इसे व्यापक रूप से नेटवर्क और तकनीकी रूप से उन्नत बना रहा है। डिजिटल रूप से स्वचालित आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए लॉजिस्टिक्स 4.0 भविष्य की कुंजी है। चौथी औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के बाद लॉजिस्टिक्स में बाधाएं आई हैं। अंततः लॉजिस्टिक्स की जटिल दुनिया विकसित हुई है। इसने उत्पादों को उत्पादन से अंत–उपयोगकर्ता और ग्राहकों तक पहुंचाने के तरीके को स्वचालित रूप से बदल दिया है। डिजिटलीकरण कंपनियों को नेटवर्किंग के नए तरीके प्रदान कर रहा है और उनकी आपूर्ति श्रृंखलाओं को स्वचालित करने में सहयोग प्रदान कर रहा है। जब परिवहन की बात आती है तो स्मार्ट ट्रक, पैलेट और कंटेनर, गोदाम प्रबंधन प्रणाली एवं ड्राइवर–रहित परिवहन प्रणाली के नए दृष्टिकोण खुल रहे हैं। सेंसर और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) माल को ट्रैक व ट्रेस करने में सक्षम हैं। लॉजिस्टिक्स 4.0 (जिसे ''डिजिटल लॉजिस्टिक्स'' के रूप में भी जाना जाता है) ने आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए उतना ही महत्व दिया है जितना उद्योग 4.0 ने कारखानों के लिए। यह कंपनियों को अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को स्वचालित बनाने तथा अंतर रहित निगरानी और समग्र दक्षता बढ़ाने सहित मूल्य जोड़ने में मदद करता है।

लॉजिस्टिक्स 4.0 के पीछे प्रौद्योगिकी : लॉजिस्टिक्स 4.0 एक रंगीन मिक्स पूरक तकनीक पर टिका है, जिसमें जीपीएस, बारकोड, डेटामैट्रिक्स कोड, रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) और सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज (ईडीआई), इंटरनेट और टेलीमैटिक्स, साथ ही साथ क्लाउड आर्किटेक्चर और सॉफ्टवेयर शामिल हैं।

उद्योग 4.0 के पीछे मांगों तथा विकेंद्रीकरण को पूरा करने के लिए, मूल बिंदु एवं उपभोग के बिंदु और बीच में विभिन्न बिंदुओं के बीच संपत्ति, माल, सामग्री तथा सूचनाओं का एक स्वचालित, बुद्धिमान और तेजी से स्वायत्त प्रवाह कुंजी है। इसलिए, विभिन्न लॉजिस्टिक्स घटकों जैसे आपूर्ति श्रृंखला लॉजिस्टिक्स, इनबाउंड लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउस मैनेजमेंट, इंट्रालाजिस्टिक्स या लाइन फीडिंग, आउटबाउंड लॉजिस्टिक्स और लॉजिस्टिक्स रूटिंग में अधिक आत्मनिर्भरता महत्वपूर्ण है।

भारत अब विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन सूचकांक के नवीनतम संस्करण में 44वें स्थान पर है, जो समान आय स्तरों पर अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च स्कोर है। यह संख्या केवल लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। वास्तव में, लॉजिस्टिक्स सीधे पूरे बाजार की प्रतिस्पर्धा को प्रभावित कर सकती है क्योंकि इसकी मांग की सेवा की क्षमता आपूर्ति श्रृंखलाओं की दक्षता, विश्वसनीयता और पूर्वानुमेयता से अटूट है। देश ने अपनी लॉजिस्टिक्स सेवा को बढ़ाने के लिए कई सक्रिय कदम उठाए हैं।

सीमा शुल्क और व्यापार सुगमता में सुधार के लिए सरकार ने काफी प्रयास किए हैं। देश रेलवे, रोडवेज, अंतरदेशीय जलमार्ग

और तटीय परिवहन पर भी अधिक खर्च कर रहा है। देश के भीतर कार्गो के कुशल आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में शुरू किए गए गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) निर्धारित है क्योंकि यह आंदोलन अब विशुद्ध रूप से आर्थिक विचारों का जवाब दे सकता है। लॉजिस्टिक्स विभाग का निर्माण इस दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। आगे बढ़ते हुए, नए विभाग के लिए सेवाओं को विनियमित करने, सेवा स्तर के आश्वासनों तथा विश्वसनीयता मानकों को निर्धारित करने और किसी भी अन्य उपाय को अपनाने के लिए आवश्यक होगा जो पूरी लॉजिस्टिक्स श्रृंखला में परिवहन के बुनियादी ढाँचे और सेवाओं के बेहतर एकीकरण को बढ़ावा दे सके। ऐसा करने के लिए, विभाग को एक स्पष्ट जनादेश, एक सुसंगत कार्य कार्यक्रम, मंत्रालयों के बीच सहज समन्वय और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के बीच रचनात्मक संवाद के साथ एक उच्च–स्तरीय टास्क फोर्स की आवश्यकता होगी।

> **राष्ट्र भाषा के बिना आजादी बेकार है।**
>
> **– अवनींद्रकुमार विद्यालंकार**

नौकरी पेशे में हुनर

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा

कोई भी व्यक्ति जब अपने पेशे की शुरुआत करता है तो यह संभावना ज्यादा होती है कि उसे मुख्य रूप से उसके कठिन कौशल यानि ''हार्ड स्किल्स'' के लिए काम पर रखा जाता है जो हमें पता है कि नौकरी–पेशे के लिए प्रासंगिक है। जब कोई कॉलेज से बाहर निकल कर अपने पेशे में नया कदम रखता है तब कुछ वर्ष तक उसके द्वारा स्कूल या कहीं इंटर्नशिप के दौरान अर्जित ज्ञान और उसके तकनीकी प्रमाणपत्र ही महत्त्व रखते हैं।

जब हमारे एमबीए के छात्रों को उनकी पहली नौकरी मिलती है तो उन्हें उनके कठिन कौशल के लिए काम पर रखा जाता है लेकिन जैसे–जैसे वे अपने करियर में आगे बढ़ते जाते हैं, कौशल की आवश्यकताओं में भारी बदलाव आता रहता है। नियोक्ता अपने संगठनों के लिए सही कौशल और दक्षताओं वाले उम्मीदवारों को खोजने पर बहुत जोर देते हैं। जिस करियर क्षेत्र और पेशे के आधार पर आप काम करना चाहते हैं, उसके आधार पर नौकरी करने के लिए बहुत विशिष्ट कौशल, योग्यता और ज्ञान की आवश्यकता हो सकती है।

लेकिन हम सब को यह जानना जरूरी है कि जिन कौशलों के आधार पर लोग काम पर रखे जाते हैं, उनका महत्त्व धीरे–धीरे कम होता जाता है। हम अपने पेशे में जितना आगे बढ़ते जाते हैं, उतना ही पाते हैं कि जिस कौशल ने हमें शुरुआत में सफलता दिलाई, वह हमारे मध्य–करियर के मुकाम तक पहुँचने के बाद इतना विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है। क्यों? क्योंकि हमने जो कठिन कौशल प्राप्त किया है, वह ऐसा नहीं है कि वह हमें अपने लक्ष्य तक ले जा सके।

अब यह कहना उचित नहीं है कि हमें अपने तकनीकी कौशल में सुधार नहीं करना चाहिए। बल्कि हमें अपने पेशे के दौरान अपने तकनीकी कौशल को अधिक बेहतर एवं और तेज करना चाहिए – चाहे वह कोडिंग, डिजाइनिंग, अध्यापन या कुछ और हो। लेकिन अगर वह एकमात्र क्षेत्र है जिसमें आप सुधार करते हैं, तो आप बहुत आगे नहीं बढ़ सकते हैं। अपने तकनीकी कौशल में सुधार करने से आप स्तर एक से स्तर दो में पदोन्नत होने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं या सहयोगी से प्रबंधक या अधिकारी हो सकते हैं, लेकिन उच्चतर प्रगति करने के लिए आपको अन्य क्षेत्रों में भी सुधार दिखाना होगा।

सॉफ्ट स्किल्स क्यों जरूरी हैं?

सॉफ्ट स्किल्स या नरम कौशल वे व्यक्तिगत विशेषताएं हैं जो यह प्रभावित करती हैं कि हम दूसरों के साथ कितनी अच्छी तरह से काम कर सकते हैं या बातचीत कर सकते हैं। ये कौशल लोगों के साथ संबंध बनाने, विश्वास एवं निर्भरता बनाने और लोक समूहों का नेतृत्व करने में मदद करते हैं। संक्षेप में, वे कार्यस्थल में हमारी सफलता, संगठन की सफलता और व्यक्तिगत जीवन के लिए आवश्यक हैं।

अन्य लोगों के साथ अधिकांशतः बातचीत के लिए कुछ हद तक सॉफ्ट स्किल्स की आवश्यकता होती है। एक नए विचार को सहयोगियों के सामने पेश कर सकते हैं, एक नई शुरुआत के लिए नेटवर्किंग कर सकते हैं और इसी तरह हम काम पर हर रोज सॉफ्ट स्किल्स का इस्तेमाल करते हैं एवं इन सॉफ्ट स्किल्स को विकसित करने से हमें अपने करियर में तेजी लाने में मदद मिलेगी। दूसरी ओर, सॉफ्ट स्किल्स की कमी हमारी क्षमता को सीमित कर सकती है या व्यवसाय में गिरावट भी ला सकती है।

भविष्य का कार्यस्थल भी सॉफ्ट स्किल्स पर ही निर्भर करेगा। ऑटोमेशन (स्वचालन) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के परिणामस्वरूप सॉफ्ट स्किल पर निर्भर होने वाली नौकरियों का अधिक अनुपात होगा। ऑटोमेशन उतना डरावना नहीं है जितना लगता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोट को व्यापक रूप से अपनाने का मतलब हर काम को बदलना नहीं होगा। इसके बजाय, विशेषज्ञों और इतिहासकारों का मानना है कि अधिकांश नौकरियां बदल जाएंगी, पेशेवरों को उन पर विशेषज्ञता हासिल करने के लिए नए–नए कौशल सीखने की आवश्यकता होगी।

तो यह कैसे करें?

यह हमारे पेशे के प्रत्येक चरण में उन्नति की बात के सामने आने पर वास्तव में उसके महत्त्व का पता चलने के साथ ही शुरू हो जाता है। जब हर पद का दायित्व अलग होता है, तो हमें अपने ''सॉफ्ट स्किल्स'' में अधिक निवेश करना चाहिए जो चीजों को प्राप्त करने की हमारी क्षमता, नेतृत्व क्षमता और दूसरों द्वारा कार्यालय में हमारी पसंद आदि से जानी जाती है। जितना हम करियर में आगे बढ़ेंगे उतने ही निर्णायक ये विशेषताएं बनेंगीं। अतः सॉफ्ट स्किल्स को बढ़ाने के लिए हमें कुछ और करना चाहिए क्योंकि जो हुनर हमें यहाँ तक लाया है वह हमें और आगे शायद न ले जा पाए।

अतः यह आवश्यक है कि हम अपना आत्म–मूल्यांकन करें तथा अपने हाल के काम और कार्यस्थल की आदतों का जायजा लेते हुए यह पता लगाएं कि हम किन क्षेत्रों में सबसे मजबूत अथवा सबसे कमजोर महसूस करते हैं। अपने प्रबंधक/अधिकारी के साथ चर्चा करें कि अब कौन सी विशेषताएं और हुनर काम में आएंगे अर्थात यह तय करें कि अब भविष्य में क्या सीखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। जब हम इन क्षेत्रों में प्रगति दिखाते हैं तो हम कुछ नई भूमिका निभाने की उम्मीद कर सकते हैं।

हमारी जिम्मेदारी विभिन्न करियर चरणों में भिन्न–भिन्न हो सकती है। अतः सुनिश्चित करें कि हम अपने लिए उपलब्ध किसी भी आंतरिक करियर सीढ़ी को समझें और इन सॉफ्ट स्किल्स अर्थात अपने वर्तमान पेशे में सॉफ्ट स्किल्स में वृद्धि के तरीकों की तलाश करें।

> **आज ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में तेजी से विकास हो रहा है। इस प्रगति और विकास से जन–साधारण भी लाभान्वित हो, हमें इसे सहज और सरल हिंदी के माध्यम से उन तक पहुँचाना होगा।**
>
> **– अटल बिहारी वाजपेयी**

भासो और बालो

संजीव कुमार

प्रसंगः भासो महतो और बालो कलसी बचपन के दो घनिष्ठ मित्र हैं। इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति लगभग एक जैसी है। कुछेक मामलों में भासो की स्थिति बालो से श्रेष्ठ है। यह कहानी एक ऐसे दोस्त की दास्तान है जिसने वास्तविक रूप से घोर अभाव को प्रत्यक्ष रूप से झेला है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया है।

भासो और बालो की दसवीं का परिणाम आज आने वाले हैं। सुबह से ही दोनों दोस्तों के घर में एक असमंजस का माहौल है कि क्या वे दोनों दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर पायेंगे। समाचार–पत्रों के आगमन की आस में भासो और बालो के घरवाले सुबह चार बजे से ही घर के आगे बैठे हुए हैं। एक दिन पहले ही अखबार वाले बेंडर को इत्तिला कर दी गयी है कि दसवीं के परिणाम वाले दिन "प्रभात खबर", दैनिक समाचार–पत्र की प्रति दे दें। उस समय 10वीं, 12वीं के परिणाम ज्यादातर प्रभात खबर समाचार–पत्र में ही ससमय प्रकाशित किये जाते थे। सुबह होने को थी, दोनों दोस्तों से ज्यादा उनके परिवार के सदस्य परिणाम के प्रति सजग थे। सहसा समाचार–पत्र बांटने वाला बेंडर पौ फटने से पहले की लालिमा को चीरता हुआ, साईकिल की घंटी बजाता हुआ, घर के सामने आता है और प्रभात खबर की एक प्रति दे जाता है।

अब शुरू होती है उस पूरे समाचार–पत्र में क्रमांक संख्या का मिलाया जाना। पूरे प्रदेश के परिणाम में से एक परिणाम का पता लगाना तुरंत संभव न था। आज की तरह पलक झपकते एक क्लिक से परिणाम का पता लग जाना उस समय एक कल्पना–मात्र ही थी। अंततः भासो और बालो ने अपना–अपना परिणाम ढूंढ लिया। भासो प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ है और बालो द्वितीय श्रेणी से। दोनों दोस्तों के घर एक उत्सव जैसा माहौल है, लोग दोनों के अभिभावकों से परिणाम के बारे में पूछ रहे हैं और खुशखबरी सुनकर मुँह मीठा कराने की बात कह रहे हैं। वह समय था जब 10वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करना सम्मान की बात थी तथा इलाके में गिने–चुने लोग ही प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो पाते थे। परिणाम प्राप्ति के बाद दोनों दोस्तों के खुशनुमा एक महीने बीते, अब बात आई इण्टरमीडिएट में दाखिला लेने की। उस समय जिला मुख्यालय के सबसे बेहतरीन महाविद्यालयों में दाखिला लेने के लिए दोनों दोस्तों ने मन बनाया। महाविद्यालय निजी होने के साथ–साथ कई तरह की सुविधाओं से सुसज्जित था। तब ज्यादातर छात्र सरकारी महाविद्यालयों में अपना नामांकन करा कर निजी संस्थानों में कोचिंग किया करते थे। अंततः उनका नामांकन हुआ और वे महाविद्यालय जाना शुरू कर दिये।

भासोः बालो, यार यहाँ की भाषा तो ब्रितानी रूप ले चुकी है, चारों ओर अंग्रेजी का माहौल है, एक दिन हम भी ऐसे माहौल में अपने आप को ढाल लेंगे, चल क्लास का पता लगाते हैं कहां हमें बैठना है, जा पूछ कर आ उस महिला से, शायद शिक्षिका है, इस महाविद्यालय की।

बालोः महिला से, मैडम ये इण्टर – कला प्रथम वर्ष की कक्षाएँ कहाँ चलती हैं?

मैडमः व्हाट डू यू मीन? जस्ट गो टू द रिसेप्सन एण्ड आस्क देयर।

बालो को यह तीव्र रफ्तार–भरा वाक्यांश सिर के ऊपर से निकल गया, पर उस महिला के हाथ के इशारे से यह पता चल रहा था कि रिसेप्सन संस्थान के दक्षिणी छोर पर स्थित है। अतः दोनों दोस्त रिसेप्सन से अपनी कक्षाओं का पता लगाकर कक्षा में बैठ गये। शुरूआती दिनों में दोनों की पढ़ाई मध्यम रूप से चलती गयी तथा अंत तक दोनों ने पूरी तरह से लय पकड़ लिया। इन दो सालों के समयांतराल के बाद विभिन्न शिक्षकों के व्याख्यान तथा मार्गदर्शन से दोनों को काफी फायदा मिला तथा भाषा के साथ–साथ विभिन्न पठित विषयों पर भी अपेक्षित ज्ञान प्राप्त हुआ। महाविद्यालय के अंतर्गत होने वाले अंतः महाविद्यालयी परीक्षाओं में दोनों दोस्तों का प्रदर्शन उत्तरोत्तर सुधरता जा रहा था। शिक्षकों व शिक्षिकाओं की नजरों में दोनों मित्रों के प्रति निरंतर सकारात्मक और सहयोगात्मक धारणा बनती जा रही थी।

समय गुजरता गया अब वक्त आ गया था 12वीं की वार्षिक परीक्षा का। सत्र समाप्त होने को थे, इस समय ही सभी छात्रों के लिए फार्म भरना, पुस्तकालय, कैंटिन व अन्य जगहों से नो ड्यूज प्रमाण–पत्र प्राप्त करना इत्यादि प्रशासनिक क्रियाकलाप भी समाप्ति की तरफ थे। इन दिनों मानों सभी छात्र एक सागीर्द भरे अंदाज में एक दूसरे से मिल रहे थे, हमेशा टच में रहेंगे इस बात पर छात्रों का प्रायः सार्वजनिक मुहर हुआ करता था। फाइनल एग्जाम की तिथियां आ गयी। छात्रों का ध्यान अब अपने फाइनल एग्जाम के प्रति आकृष्ठ हुआ। सभी अपने–अपने ढंग से अपनी तैयारी को अंतिम मुकाम तक पहुँचाने में लग गये। एग्जाम शुरू होता है तथा दोनों मित्रों का पहले दिन का पेपर "शानदान, जबरदस्त" रहा। कोई भी प्रश्न छूट न पाया और अतिरिक्त पृष्ठों से मूल कॉपी जुड़ कर मोटी हो चली। देखते ही देखते एग्जाम के सभी पेपर्स समाप्त हो गये और दोनों दोस्त फिर से एकबार कुछ दिनों के लिए खाली हो गये। जहाँ तक बालो का सवाल था, उसने इन दिनों कम्प्यूटर व टाईपिंग के कोर्स कर लिया। मन में कहीं न कहीं कुछ प्रोफेसनल कोर्स करने की बात उठी, अतएव, बालो ने कर डाला।

12वीं परीक्षा के परिणाम आने को थे रोज समाचार–पत्रों पर दोनों का ध्यान था। अंततः एक दिन परिणाम आया और दोनों मित्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। यह समाचार दोनों मित्रों के लिए सुखद था तथा उनके परिवार के सदस्य इस परिणाम से संतुष्ट थे।

भासो और बालो का यह परिणाम यूं ही आ गया या इसके पीछे उनके दो वर्षों का अभाव में किया हुआ घोर परिश्रम था। बिजली कम ही रह पाती थी, अतएव, दोनों की पढ़ाई "लालटेन" अथवा "लैंप" में सम्पन्न होती थी। उन दिनों जन वितरण प्रणाली की ओर से सरकारी दर पर केवल 4 लीटर मिट्टी तेल ही मिलता था जिसमें घर के दिये के साथ उनके लालटेन व लैंप में भी तेल की खपत पूरा नहीं पड़ पाता था। मिट्टी तेल के बाजार भाव उन दिनों 20–25 रुपये प्रति लीटर हुआ करता था जो सरकारी भाव से 7–8 गुना महंगा था। कभी–कभी ऐसी घोर अभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी जिसमें दोनों का विचार पढ़ाई–लिखाई छोड़कर काम–धाम करने और पैसे कमाने की तरफ जाने लगता। बहुधा ऐसी स्थिति में पढ़ाई के प्रति मनोबल की कमी देखी जाती थी। इन परिस्थितियों के अलावा कई परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती थीं जिसमें सब कुछ छोड़ कर धन कमाने के प्रति दोनों मित्र मन बना लिया करते थे। इस दौरान दोनों मित्रों के कई शुभचिंतकों के द्वारा उनका विश्वास जगाने वाली बात की जाती थी और वे पुनः पढ़ाई के प्रति अग्रसर हो जाया करते थे।

स्नातक में दाखिले के लिए पूरे राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों से नामांकन–आवेदन आ चुका था और दोनों मित्रों ने स्नातक में अपना नामांकन कराने के लिए राज्य की राजधानी स्थित सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय को चुना। यहां पर नामांकन आसान नहीं था। अंक के आधार पर मेधा–सूची जारी की जाती थी तथा राज्य के उच्च अंक–धारी छात्रों का ही यहां नामांकन संभव हो पाता था। विभिन्न सूचियां जारी हुईं तथा दोनों का नामांकन उस सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय में संभव हो पाया। यहां राज्य के विभिन्न हिस्सों से आये हुए छात्रों से मुलाकात व दोस्ती, राज्य के विभिन्न संस्कृतियों तथा बोलियों से दोनों मित्रों का परिचय करवाया। स्नातक की पढ़ाई भी अच्छे से चलती गयी, राज्य की राजधानी में रहकर दोनों मित्रों का समाजीकरण भी अब बदलने लगा था। इन तीन सालों के कोर्स में भासो तो ज्यादातर राजधानी में रहा पर बालो हफ्ते की छुट्टियों में अपने घर चला जाया करता था। वही लोकल ट्रेन से जो लगभग 80 किलोमीटर की दूरी तीन घण्टे में तय करती थी। बालो को इन तीन सालों में रास्ते में मिलने वाले स्टेशनों व हॉल्टों के नाम याद हो गये थे तथा अगर वह रास्ते में सो भी जाये तो उसे जागने पर अंदाजा हो जाता था कि अब कौन सा स्टेशन या हॉल्ट आने वाला है। रास्ते में मिलने वाले हर गांव, खेत, भवन, पगडंडियां, इत्यादि को बालो अपने यात्रा के दौरान उनकी खूबसूरती व महत्व को अनुभव करता था। साथ–ही–साथ ट्रेन के सामान्य डिब्बों में बेचने वाले हॉकरों को भी वह अब पहचानने लगा था। कौन सा हॉकर किस स्टेशन पर चढ़ता है और किस स्टेशन पर उतरता है, अब बालो यह बखूबी जानने लगा था। दोनों मित्र जिस स्टेशन से ट्रेन पकड़ते थे, वहाँ एक निश्चित स्थान था – पेड़ के पास, गोदाम के आगे। यह स्थान दोनों के लिए निर्धारित था, जो पहले स्टेशन पहुँचता, वह उसी स्थान पर एक–दूसरे का इंतेजार करता था।

समय गुजरता गया, स्नातक पार्ट वन, पार्ट टू व पार्ट थ्री की उपाधि वे दोनों हासिल कर लिए। अब वे दोनों स्नातक हैं। अब उनके परिवार के सदस्यों का उन पर और अधिक भरोसा होने लगा था। इस बीच परा–स्नातक की पढ़ाई के लिए भासो दिल्ली आ गया जबकि बालो सामान्य प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए अपने गृह–स्थान में ही रहा। समय गुजरने के साथ–साथ भासो उच्च शिक्षा प्राप्त करता गया और बालो को धीरे–धीरे सफलता मिलती जा रही थी, परन्तु वह कहीं

अंतिम रूप से चयनित नहीं हो पा रहा था। साल गुजरता गया, एक समय ऐसा आया कि भासो राष्ट्रीय राजधानी के एक महाविद्यालय में शिक्षक के पद पर अंतिम रूप से चुन लिया गया। इसके एक वर्ष बाद बालो भी राष्ट्रीय राजधानी के एक केन्द्रीय संस्थान में लघु प्रशासनिक पद पर चुन लिया गया। दोनों मित्रों का एक बार फिर से साथ–साथ रहना शुरू हो गया था। समय और भी गुजरता गया, दोनों को नित्य नये दिन कार्यानुभव के साथ–साथ अन्य बुद्धिमत्ता हासिल होती गयी।

अब दोनों मित्र अपने गृह–आवास से हजारों किलामीटर दूर उत्पादन कार्य में व्यस्त हो गये थे। त्योहारों तथा अन्य मौकों पर उनका गृह–प्रस्थान होता था। रास्ते में उन्हें वही रेलवे स्टेशन, हॉल्ट मिला करते थे, पर बालो अब उनमें वह खूबसूरती का अनुभव नहीं करता है। अब उन खेतों की हरियाली बालो के लिए उन खुशनुमा अनुभव को ताजा नहीं करता था जो वह स्नातक की पढ़ाई के समय किया करता था। रास्ते भी अजीब लगते थे, शायद मुसाफिर अब बेगाने हो चले थे। अब उन हॉकरों को भी वह नहीं पाता था जो कभी उसे एक स्थान की पहचान कराती थी। समय बदल चुका था, उन पर जिम्मेदारियाँ भी अब काफी अधिक हो गयी थी, उनकी मनः स्थिति भी बचपन भरा नहीं रहा था। फलतः चीजों को समझने व अनुभव करने का नजरीया भी उनका बदल गया था।

कहते हैं समय बहुत बड़ा मरहम होता है, वो किसी भी प्रकार के कष्टों व आघात को निष्क्रिय करने में सक्षम होता है। समय परिवर्तन के साथ–साथ व्यक्ति के मानव मस्तिष्क में विद्यमान कष्टों, पीड़ाओं का अनुभव अपेक्षाकृत अल्प होता जाता है तथा एक समय विशेष के आने के बाद वह कटु अनुभव जाता रहता है।

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।
भीलां लूटी गोपियाँ, वही अर्जुन वही वाण।।

“राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।”

– अनंत गोपाल शेवडे

रोज नयी सी तुम लगती हो

अतुल कुमार

साथ हुए कुछ समय भी बीता, दोनों ने दोनों को जीता,
मेरी जीवन साथी फिर क्यूँ, रोज नयी सी तुम लगती हो?

जब आई थीं नयी–नयी तुम, रहती थीं बस यहीं–कहीं तुम,
दिन का वक्त कहीं खो जाता, रात में कोई भी सो जाता,
आज भी कुछ अलग नहीं है, मैं भी तुम भी वक्त वही है,
पर मुझको ऐसा है लगता, मेरी नींदों में तुम जगती हो,
मेरी जीवन साथी फिर क्यूँ, रोज नयी सी तुम लगती हो?

धरती से वो बात गगन की, मीठी सी वो रात मिलन की,
अक्सर मुझको याद आती है, रात वहीं पर थम जाती है,
सुबह–सुबह जब किरणें आतीं, मैं सोता हूँ तुम जग जातीं,
गहरी नीद में मुझको सोये, चुपके–चुपके तुम तकती हो,
मेरी जीवन साथी फिर क्यूँ, रोज नयी सी तुम लगती हो?

काम सभी किस्से में रहता, दोनों के हिस्से में रहता,
थक जाते हैं दोनों जब भी, कहता है न कोई फिर भी,
पता तुम्हारा कुछ न चलता, पर मुझको तो आराम मिलता,
दिन भर जब थकने पर भी, तुम मेरी बाहों में थकती हो,
मेरी जीवन साथी फिर क्यूँ, रोज नयी सी तुम लगती हो?

उत्तम स्वास्थ्य के अचूक नुस्खे

मोनिका सैनी

चाय, तम्बाकू व डालडा, जो नहीं करे प्रयोग,
फिर उस व्यक्ति से डरे भांति–भांति के रोग।

गाजर, बथुआ व आंवला, जो प्रेम से खाए,
करे कब्ज को नाश, खून साफ हो जाए।

ठंडा/ताजा जल सेवन करो, उठकर प्रातः काल,
उदर रोग भी मिट जाए, कब्ज खत्म हो जाए।

अगर कमजोर दिमाग है तो करो इतना काम,
साथ शहद के खाइये भीगे हुए बादाम।

जो चाहे निरोग तन, रखिये इतना ध्यान,
सैर प्रातः काल की, नित करिये इत्मिनान ।

मांड चावलों का पिये, नमक मिला प्रभात,
मोटापा कम होयेगा, हल्का रहेगा पेट।

गाजर का पियो रस, नींबू अदरक मिलाये,
भूख बढ़े, आलस्य भागे, बदहजमी मिट जाए।

नींबू रस में घोलकर, गंधक सुहागा डाल,
मलते रहिये दाद पर, जड़ से खत्म बवाल।

प्रातः काल जो नियम से करे भ्रमण,
बल बुद्धि दोनों बढ़े, दिमाग रहे शाँत।

ईश्वर धर्म समाज पर, करो आप विश्वास,
यश पाओगे जगत में, व्यसन/लत न फटके पास।

सत्य पथ पर रहो अड़े, ईर्ष्या अभिमान का करो त्याग,
रखो सत्य का मान, मन रखोगे सच्चा तो पाओगे निरोगी काया का साथ।

चोरी और गलत मार्ग से रहो सदा दूर,
प्रभु चिंतन करो, सुख पाओगे भरपूर।

मेरी बैंकॉक यात्रा

आर.एस. पटवाल

प्रतीक्षा करते–करते आखिर विदेश यात्रा पर भ्रमण के लिए प्रस्थान करने का दिन आ ही गया। हमारी टिकटें थाई एयरवेज की 14.12.2019 की प्रातः 03:00 बजे की थी। यद्यपि भ्रमण के लिए सारा सामान एक स्थान पर एकत्रित कर लिया गया था फिर भी उसे व्यवस्थित कर पैकिंग करनी थी। सभी ने अपने–अपने सामान की जांच कर पैंकिंग की और अटैचियां और पिट्ठू बैग बाहर के कमरे में एक जगह पर रखे ताकि जल्दबाजी में कोई सामान छूट न जाए। रात का भोजन कर लगभग दस बजे निबटे। चूंकि एयरपोर्ट 3 घंटे पहले पहुंचना था तो हमें लगभग 11 बजे के आसपास प्रस्थान करना था। अतः सभी आगे की सुखद यात्रा की कल्पना कर बातचीत में व्यस्त हो गए। टैक्सी से 11:15 बजे इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपार्ट के लिए प्रस्थान किया। पिछली यात्रा के अनुभव से इस बार हम सही समय पर एयरपोर्ट पहुंचे। फरीदाबाद से हमारे साथ एक और परिवार ने जाना था। इस प्रकार, मैं और मेरी पत्नी प्रभा, बेटी प्रिया, दामाद लोकेश एवं उनकी बेटी अदविका और फरीदाबाद से प्रिया की सहेली पूजा, पति विशाल और उनकी बेटी आरो कुल 8 सदस्य थे। उन्हें फोन पर संपर्क किया तो पता चला कि वे भी हमारे साथ–साथ ही एयरपोर्ट पर पहुंचने वाले हैं। थोड़ी ही देर में सभी एयरपोर्ट पर पहुंच गए। अपना–अपना सामान ट्रालियों पर रखा। हमारे साथ दो छोटे–छोटे बच्चे भी थे उन्हें सामान के ऊपर बिठा दिया। वे मस्ती में मुस्कराते हुए आश्चर्य से इधर–उधर देख रहे थे। सभी ने प्रवेश द्वार पर टिकट और फोटो आईडी दिखाने के पश्चात एयरपोर्ट में प्रवेश किया। थाई एयरवेज के काउंटर पर सामान का वजन करवाकर बोर्डिंग पास लेकर आव्रजन काउंटर की तरफ बढ़े और पंक्ति में खड़े हो गए। आव्रजन फॉर्म भरकर हम सभी एक पंक्ति में खड़े हो गए। आवश्यक औपचारिकताओं एवं सुरक्षा जांच के पश्चात सभी प्रस्थान लाउंज की ओर बढे। हमारे पास लगभग आधा घंटा का समय प्रवेश गेट खुलने से पूर्व शेष था। अतः हमने ड्यूटी फ्री शॉप से सामान खरीदकर बुक करवा लिया। यह सामान हमें वापसी पर कैशमीमो दिखाकर लेना था।

प्रवेश गेट खुलने पर हमने पासपोर्ट और बोर्डिंग पास दिखाकर वायुयान में प्रवेश किया। थाई एयरवेज की परिचारिकाओं ने सभी का 'नमस्ते' कहकर स्वागत किया और हमारी सीटों के बारे में निर्देशित किया। अपनी सीट पर बैठकर मैंने ईश्वर का समय पर सकुशल विमान में सवार होने के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया और आगे की सुखद यात्रा के लिए प्रार्थना की। यह एक बहुत बड़ा वायुयान था। लगभग 300 यात्री इसमें सवार हो सकते थे। हमने अपने हैंडबैग लगेज केबिन में रखे और अपनी–अपनी सीटों पर बैठ गए। सौभाग्य से हमारी सीट खिड़की के साथ लगी थी। यहां से बाहर का दृश्य साफ–साफ दिखाई दे रहा था। वायुयान की रोशनी में उसके बड़े–बड़े डैने बहुत लंबे लग रहे थे। सभी यात्रियों के बैठने और परिचारिकाओं द्वारा लगेज केबिन अच्छी तरह से बंद करने के कुछ ही समय बाद वायुयान से सीट बेल्ट, इलैक्ट्रानिक गैजेट और सुरक्षा आदि संबंधी उद्घोषणा पहले अंग्रेजी में और फिर हिंदी में हुई। साथ ही वायुयान के पायलट का परिचय भी कराया गया। कुछ ही समय बाद वायुयान का इंजन स्टार्ट हुआ, विमान रनवे पर दौड़ने लगा और फिर एकदम से हवा में उड़ान भरने लगा। तत्पश्चात परिचारिकाएं यात्रियों को पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, चाय/काफी और भोजन परोसने लगीं। हमने भी पानी और भोजन का पैकेट लेकर भोजन किया और वायुयान से बाहर का दृश्य निहारते हुए नींद के आगोश में समा गए।

पता नहीं कितने समय तक सोते रहे, परंतु एक उद्घोषणा से नींद टूट गई। बाहर देखा तो वायुयान बादलों से अठखेलियां कर रहा था। नीचे रोशनी झिलमिला रही थी। उद्घोषणा में बताया गया कि विमान कुछ ही समय बाद बैंकाक पहुंचने वाला है। वहां का तापमान इस समय 25 डिग्री सेल्सियस है। इसके साथ ही सीट के सामने लगी स्क्रीन पर तापमान, ऊंचाई आदि के बारे में सूचना प्रदर्शित की जा रही थी। सभी से सीट बेल्ट बांधने, खिड़की से कवर हटाने, सीट सीधी करने आदि के बारे में भी अनुरोध किया गया।

हमारा वायुयान थाई एयरवेज के निजी एयरपोर्ट पर उतरा। आसपास थाई एयरवेज के ही विमान दिखाई दे रहे थे। तत्पश्चात हमने विमान से उतरकर बस ली और एयरपोर्ट के अंदर प्रवेश किया। थाईलैंड में वीजा 'ऑन अराइवल' है, अतः वीजा फार्म भरकर फीस एवं पासपोर्ट सहित आव्रजन काउंटर पर प्रस्तुत किया और आवश्यक जांच एवं सत्यापन के पश्चात वीजा प्राप्त किया। फिर हम लोग सामान एकत्रित करने के लिए गए और कुछ ही देर बाद सामान लेकर पटाया जाने के लिए प्रि–पेड मिनी बस के लिए किराए का भुगतान कर रसीद ली। एयरपोर्ट पर सभी कुछ व्यवस्थित था और निर्देश के लिए साइन बोर्ड लगे हुए थे। स्टाफ भी यात्रियों की हरसंभव सहायता कर रहा था। थोड़ी ही देर में मूसलाधार वृष्टि होने लगी और स्टाफ यात्रियों को कार/बस आदि में बिठाने के लिए बड़ी छतरी लेकर उपस्थित हुआ। बहुत तेज वर्षा होने के बावजूद सड़क पर पानी जमा नहीं हुआ। तभी हमारी बस आ गई। स्टाफ ने सामान गाड़ी के पीछे की ओर बने केबिन में व्यवस्थित तरीके से लगाया एवं हमें बिठाया और साथ ही ड्राइवर को हमारे होटल के बारे में जानकारी दी। काफी देर तक तेज वर्षा होने के बावजूद, मैंने यह देखा कि सड़क पर कहीं पानी जमा नहीं हुआ था। ट्रैफिक नियमों का तत्परता से पालन किया जा रहा था। कहीं पर भी जाम आदि की समस्या से हमें दो–चार नहीं होना पड़ा। लगभग आधा घंटा बरसने के बाद वर्षा बंद हो चुकी थी। लगभग 45 मिनट में हम होटल बेवरली हिल्स पहुंच गए। वहां पर मीठे पेय से हमारा स्वागत हुआ और तत्पश्चात हमें आवंटित कमरों में पहुंचा दिया गया। सभी ने अपने–अपने कमरों में पहुंचकर कपड़े बदले और सभी ने साथ बैठकर जलपान किया। चूंकि हम रात में नींद पूरी नहीं ले सके अतः अपने–अपने कमरों में आराम किया।

शाम को हमने सी–बीच और बाजार घूमने का कार्यक्रम बनाया। होटल के नजदीक सी–बीच पर कुछ समय बिताने के पश्चात हम बाजार में पैदल ही घूमने निकल पड़े। वहां पर काफी भारतीय दिखाई दिए। 24x7 में हमने जरूरी सामान के साथ कुछ फल खरीदे और फिर बाजार से ही भोजन कर रात लगभग नौ बजे होटल वापिस आ गए। यहां पर मैंने कुछ महिलाओं को पुरूषों विशेषकर विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित करते देखा। शायद वे कुछ गलत गतिविधियों में लिप्त थे। खैर हमने उनकी अनदेखी कर अपनी राह ली। एक दिन और पटाया में भ्रमण कर बिताया और अगले दिन बैंकाक के लिए प्रस्थान हेतु रात को सामान समेटकर सो गए।

अगले दिन नाश्ता कर हमने बस स्टैंड के लिए टुकटुक (रिक्शा जैसा वाहन) लिया। बाजार से गुजरते हुए बस स्टैंड पर पहुंचे। टिकट लेकर बस स्टैंड पर सामान चढ़ाते हुए कंडक्टर ने 20 किलो से अधिक वजनी सामान के लिए अलग से शुल्क लिया। हमारे अनुरोध को भी उसने नकार दिया। बैंकाक पहुंचकर मैट्रो स्टेशन के पास ही बस ने हमें उतार दिया। यहां से हमने होटल जाने के लिए मैट्रो ली। थोड़ी ही देर में होटल 'रॉयल प्रेजीडेंट' के पास मैट्रो स्टेशन पर हम लोग उतर कर होटल पहुंचे। रिसेप्शन पर मीठे रंगीन पेय से हमारा स्वागत हुआ, हमने चेक–इन किया। हमें होटल के नए बने भवन में तीन अलग–अलग कमरे दे दिए गए और पीछे–पीछे हमारा सामान भी आ गया। शाम को हमने आस–पास के बाजार और रेस्ट्रां का जायजा लिया और पाया कि यहां पर काफी भारतीय रेस्ट्रां हैं जो सही कीमत पर शाकाहारी भोजन होटल तक भिजवा देते हैं।

अगले दिन हमने ग्रांड पैलेस घूमने की योजना बनाई। यह ना फ्रा लैन रोड ओल्ड सिटी (रतनकोसिन), फ्रा नखोन बैंकॉक में स्थित है। ग्रांड पैलेस के लिए टैक्सी ली और लगभग आधे घंटे के सफर के बाद टैक्सी चालक ने हमें ग्रांड पैलेस के पास उतार दिया। धूप तेज हो रही थी। ग्रांड पैलेस में प्रवेश के लिए लगभग चार सौ मीटर लंबी लाइन थी। एमराल्ड बुद्ध थाईलैंड का सबसे पवित्र स्थल है। मंदिर में प्रवेश के लिए एक सख्त ड्रेस कोड लागू होता है। आगंतुक पुरुषों को लंबी पैंट और आस्तीन वाली कमीज पहनी होनी चाहिए। यदि आप सैंडल या फ्लिप–फ्लॉप पहन रहे हैं तो आपको जुराबें (नंगे पैर नहीं) पहनी होनी चाहिए। महिलाओं को पारदर्शी कपड़े या नंगे कंधे वाले कपड़े पहने नहीं होने चाहिएं। यदि आप अनुचित तरीके से सामने वाले गेट पर दिखते हैं, तो प्रवेश द्वार के पास एक बूथ है जो आपको ठीक से शरीर ढकने के लिए कपड़े प्रदान करता है जिसके लिए एक धनराशि जमा करनी होती है। ग्रैंड पैलेस के टिकट 8.30 बजे से 3.30 बजे तक बेचे जाते हैं और टिकट ''विमनमेक पैलेस'' और ''अभिसक दुसित थ्रोन हॉल'' में प्रवेश के लिए वैद्ध होता है। अलग–अलग देशों से आए पर्यटकों के अलग–अलग समूह बने हुए थे। उनके साथ गाइड पहचान के लिए झंडे/पहचान चिह्न लेकर आगे–आगे चल रहे थे ताकि कोई समूह से अलग–थलग होकर भटक न जाए।

निःसंदेह बैंकॉक में चमकदार, शानदार ग्रांड पैलेस सबसे प्रसिद्ध पवित्र स्मारक स्थल है। इसे देखे बिना शहर का कोई भी भ्रमण पूरा नहीं माना जाता है। यह 1782 में बनाया गया था और 150 वर्षों तक थाई राजा, शाही दरबार और सरकार का प्रशासनिक

कार्यालय था। बैंकॉक का ग्रैंड पैलेस वास्तव में एक भव्य प्राचीन भवन है। यह आगंतुकों को अपनी खूबसूरत वास्तुकला और पेचीदे विवरण के साथ विस्मय में रखता है। वास्तव में, थाई लोगों की रचनात्मकता और शिल्प कौशल के लिए मस्तक गौरव से नतमस्तक हो जाता है। इसकी दीवारों के भीतर थाई युद्ध मंत्रालय, राज्य विभाग और यहां तक कि टकसाल भी थे। वर्तमान में, यह परिसर थाई साम्राज्य का आध्यात्मिक दिल बना हुआ है।

महल परिसर के भीतर ''वाट फ्रा केव'' (एमराल्ड बुद्ध मंदिर) सहित कई प्रभावशाली भवन हैं, जिनमें छोटे लेकिन प्रसिद्ध और बहुत प्रतिष्ठित श्रद्धेय ''एमराल्ड बुद्ध'' हैं जो 14वीं शताब्दी से पहले के हैं। बौद्ध कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है – मौसम के साथ बुद्ध के परिधानों को बदलना, जिसे महामहिम थाई सम्राट द्वारा बदला जाता है। थाई सम्राट ने 20वीं शताब्दी के अंत के आसपास महल में रहना बंद कर दिया था, लेकिन महल परिसर को अभी भी सभी प्रकार के अनुष्ठानों और शुभ आयोजनों को मनाने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

महल परिसर, रतनकोसिन द्वीप के बाकी हिस्सों की तरह, अयुथया के महलों की समानता के बहुत करीब है, जो सियाम की शानदार पूर्व राजधानी थी। प्रवेश द्वार के पास, बाह्य दरबार में वे सरकारी विभाग होते थे जिनका सीधा संबंध सम्राट से था इनमें नागरिक प्रशासन, सेना और खजाना शामिल था। एमराल्ड बुद्ध का मंदिर इस बाह्य दरबार के एक कोने में स्थित है। केंद्रीय दरबार वह जगह है जहां सम्राट का निवास और हॉल स्थित था जो राज–काज चलाने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। केवल 2 सिंहासन हॉल जनता के लिए खुले होते हैं, परंतु आप इन प्रभावशाली संरचनाओं के अग्रभाग पर अति सुंदर विवरण से अचंभित हो जाएंगे।

आंतरिक दरबार वह जगह है जहां सम्राट की शाही महिलाएं और पुत्रियां रहती थीं। आंतरिक दरबार एक छोटे शहर की तरह था जो पूरी तरह से किशोर लड़कियों और लड़कों द्वारा आबाद था। यद्यपि वर्तमान में कोई भी शाही परिवार आंतरिक दरबार में नहीं रहता है, इसके बावजूद यह जनता के लिए पूरी तरह से बंद है।

ग्रैंड पैलेस और वाट फ्रा केव निकट होने के बावजूद, एमराल्ड बुद्ध के थाई मंदिर और द ग्रैंड पैलेस के यूरोपीय प्रेरित डिजाइन (छत मुख्य अपवाद है) के बीच शैलियों में एक विशेष विषमता है। अन्य मुख्य आकर्षण हैं बोरोमाबिमन हॉल और अमरिन्दा हॉल, राजा राम प्रथम का मूल निवास और न्याय हॉल।

रॉयल रिसेप्शन हॉल के प्रभावशाली आंतरिक भाग का उपयोग राज्याभिषेक जैसे महत्वपूर्ण समारोहों के लिए किया जाता है। आगंतुकों को विशाल यूरोपीय शैली के स्वागत कक्ष या ग्रैंड पैलेस हॉल (चक्री महा प्रसाद) के अंदर जाने की अनुमति है। यहां प्रभावशाली ड्यूसेट हॉल है, इस शैली में शायद इसे सबसे बेहतरीन वास्तुशिल्प भवन के रूप में दर्जा दिया गया है और एक संग्रहालय है जिसमें ग्रैंड पैलेस, पैमाने के मॉडल और कई बुद्ध प्रतिमाओं के जीर्णोधार के बारे में जानकारी दी गई है।

वाट फ्रा केव या एमराल्ड बुद्ध का मंदिर (आधिकारिक रूप से वाट फ्रा श्री रत्ना सत्सादरम के रूप में जाना जाता है) थाईलैंड में सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध मंदिर माना जाता है। बैंकॉक के ऐतिहासिक केंद्र में स्थित, ग्रैंड पैलेस के मैदान के भीतर, यह फ्रा केव मोराकोट (एमराल्ड बुद्ध) को दर्शाता है। अत्यधिक श्रद्धेय बुद्ध की प्रतिमा सावधानीपूर्वक जेड के एक ब्लॉक से उकेरी गई है।

ग्रैंड पैलेस में ही वाट अरुण है, इसकी परिकल्पना 1768 में राजा तकसिन द्वारा की गई थी। यह माना जाता है कि अयुथया जिसे उस समय बर्मी सेना ने अपने कब्जे में ले लिया था, से बाहर निकलने के लिए लड़ते हुए, वह भोर के समय इस मंदिर में पहुंचा। बाद में उन्होंने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और इसका नाम बदलकर वाट चेंग, भोर का मंदिर रख दिया। यह राजधानी से पहले एमराल्ड बुद्ध का घर हुआ करता था और पैलेस को नदी के दूसरी ओर ले जाया जाता था। यह अब ग्रैंड पैलेस में देखा जा सकता है। हालाँकि, इसे भोर के मंदिर के रूप में जाना जाता है, परंतु यह सूर्यास्त के समय बिल्कुल आश्चर्यजनक है, विशेषकर जब रात में रोशनी की जाती है। फिर भी, भीड़ से पहले भ्रमण का सबसे शांत समय सुबह है।

वास्तुकला की सुंदरता और बेहतरीन शिल्प कौशल को देखते हुए, थाईलैंड में वाट अरुण को सबसे सुंदर मंदिरों में से एक माना जाता है। भव्य शिखर 70 मीटर से अधिक ऊंचा है, जो रंगीन कांच के छोटे–छोटे टुकड़ों से खूबसूरती से सजाया गया है और चीनी मिट्टी के बरतन को जटिल पैटर्न में नाजुकता से रखा गया है। हालांकि पर्यटकों के लिए वाट अरुण बहुत लोकप्रिय है, लेकिन यह बौद्धों के लिए पूजा का एक महत्वपूर्ण स्थान भी है। शाम के समय प्रांगण में सैकड़ों बौध भिक्षुओं का 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि' मंत्रोचार इसकी भव्यता और अध्यात्मिकता को चार चांद लगा रहा था। इस दौरान पर्यटकों का अंदर प्रवेश वर्जित होता है।

यहां से भ्रमण कर हम नाइट मार्केट गए। यह लगभग दिल्ली के साप्ताहिक बाजार की तरह है जिसमें सभी के लिए कपड़ों से लेकर इलैक्ट्रोनिक्स का सामान, जूते, चप्पलें और अन्य छोटा–बड़ा सामान बिक रहा था। मार्केट में कई भारतीयों की दुकानें भी लगी थीं जो भारतीय ग्राहकों को पहचानकर उनसे हिंदी में ही बातचीत कर रहे थे।

नाइट मार्केट से खरीददारी के पश्चात हम स्थानीय बस से कुछ ही किलोमीटर दूर इन्द्र मार्केट गए। वहां जाकर तो ऐसा लगा कि हम दिल्ली के किसी बाजार में आ गए हैं। यहां पर हमें पंजाबी, गुजराती, महिला एवं पुरूष कई भारतीय दुकानदार मिले। काफी पूछताछ और सौदेबाजी के बाद हमने पहिए वाली अटैची, छतरियां और कुछ उपहार योग्य वस्तुएं खरीदीं। तत्पश्चात, हमने बाजार में एक भारतीय रेस्टोरेंट से रात के शाकाहारी भोजन का आर्डर दिया और फिर टुकटुक लेकर होटल की ओर प्रस्थान किया। चूंकि कल हमें कोसामुई के लिए प्रस्थान करना था, अतः होटल के पास उतरकर, कोसामुई के लिए वाहन बुक कर होटल में अपने कमरों की ओर चले। इतनी देर में भोजन भी पहुंच गया और हमने भोजन कर अपने सामान की पैकिंग की और जल्दी बिस्तर पर सोने चले गए।

सुबह समय पर उठकर दैनिक कार्यों से निबटकर स्नान कर नाश्ते के लिए डाइनिंग हॉल में पहुंचे। सभी ने आराम से नाश्ता किया और तत्श्चात टैक्सी लेकर एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए।

> **संस्कृत माँ, गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।**
>
> **– डॉ. फादर कामिल बुल्के**

ऐ जिन्दगी

– मोनिका वर्मा

हर वक्त खुल के जीना ऐ जिन्दगी ।
वक्त दोबारा न आना ऐ जिन्दगी ।।

कष्टों का आना ही नाम है ऐ जिन्दगी ।
इससे निपटना हर का काम है ऐ जिन्दगी ।।

जीत आसानी से मिले तो क्या ऐ जिन्दगी ।
कभी दुःख को भी सहना ऐ जिन्दगी ।।

काँटों के बीच रहना ऐ जिन्दगी ।
आखिर में है हंसना ऐ जिन्दगी ।।

गुलाबों की तरह महकना है ऐ जिन्दगी ।
चतुरंगी विकास का नाम है ऐ जिन्दगी ।।

खुशियों की महक से बनती ये जिन्दगी।
सपनों की कलम से लिखती ये जिन्दगी।।

कहना है तुझसे बस इतना ऐ जिन्दगी।
हर मोड़ पर तू संभलना ऐ जिन्दगी।।

संस्थान में हिंदी सप्ताह

राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुरूप गत वर्षों की भांति संस्थान में हिंदी सप्ताह एक पर्व के रूप में मनाया गया। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से संस्थान में 13 से 20 सितम्बर 2019 के दौरान **''हिंदी सप्ताह''** का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का निर्धारण संस्थान के अंतिम सदस्य की सहभागिता को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस दौरान ''हिंदी निबंध लेखन'', ''हिंदी श्रुतलेखन'', ''वाद–विवाद'' तथा ''कथा–कहानीः कहो अपनी जुबानी'' प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। संस्थान के अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में अपनी सहभागिता दर्ज की।

25 सितम्बर 2019 को **हिंदी सप्ताह के समापन समारोह** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर मनोज पंत ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में भाषा के सरलीकरण पर बल देते हुए सभी स्तर के कर्मचारियों एवं अधिकारियों से हिंदी के काम–काज को बढ़ावा देने के लिए आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में निदेशक महोदय ने प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण–पत्र, शील्ड व पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए सम्मानित किया।

''हिंदी सप्ताह'' के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता सदस्य निम्न प्रकार हैं:–

क) हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता

सुश्री सीमा शर्मा	–	प्रथम पुरस्कार
सुश्री दीपा पी.जी.	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)
सुश्री ऋचा दुआ	–	द्वितीय पुरस्कार
सुश्री नीलम दहिया	–	द्वितीय पुरस्कार

ख) हिंदी निबंध प्रतियोगिता के प्रथम चार पुरस्कार विजेता

श्री कमल सिंह	–	प्रथम पुरस्कार
श्री विशाल तेवतिया	–	प्रथम पुरस्कार
श्री संजीव कुमार	–	द्वितीय पुरस्कार
श्री जितेंद्र सक्सेना	–	द्वितीय पुरस्कार

ग) कथा–कहानीः कहो अपनी जुबानी प्रतियोगिता के प्रथम चार विजेता

सुश्री अंकिता कालिया	–	प्रथम पुरस्कार
श्री एस. बालासुब्रामणियन	–	प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)

श्री आशिष त्रिपाठी – द्वितीय पुरस्कार

सुश्री तनुश्री अरोड़ा – तृतीय पुरस्कार

घ) वाद–विवाद प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

सुश्री तनुश्री अरोड़ा – प्रथम पुरस्कार

श्री पीताम्बर बहेरा – प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)

श्री रंजन कुमार – प्रथम पुरस्कार

श्री एस. बालासुब्रामणियन–द्वितीय पुरस्कार (हिंदीतर भाषी)

सुश्री अंजली – द्वितीय पुरस्कार

कोलकाता परिसर

दिल्ली परिसर की तर्ज पर कोलकाता केंद्र पर भी 13 से 20 सितम्बर 2019 के दौरान बड़े हर्षोल्लास के साथ **''हिंदी सप्ताह''** मनाया गया। कोलकाता केंद्र **''ग'' क्षेत्र** में स्थित होने के कारण अधिकांश कर्मचारी एवं अधिकारी हिंदीतर भाषी हैं, परंतु संविधान के नियम व विनियमों के अनुपालन के अंतर्गत संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए वचनबद्ध हैं। हर वर्ष की भांति ''हिंदी सप्ताह'' के दौरान केंद्र के सभी सदस्यों की अभिरूचि को ध्यान में रखते हुए अनेक हिंदी प्रतियोगिाओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विषय के रूप में ''हिंदी तात्क्षणिक भाषण'', ''हिंदी निबंध लेखन'', ''प्रश्नोत्तरी और ''हिंदी कविता पाठ'' का चयन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में संकाय सदस्यों सहित कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और हिंदी सप्ताह के कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे वातावरण को हिंदीमय बनाने का प्रयास किया गया।

दिनांक 20 सितम्बर 2019 को कोलकाता परिसर के प्रमुख डॉ. के. रंगराजन, प्रोफेसर की उपस्थिति में विधिवत ''हिंदी सप्ताह'' के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. रंगराजन जी ने कोलकाता केंद्र की गतिविधियों का उल्लेख किया। राजभाषा हिंदी के प्रति सभी सदस्यों की निष्ठा की सराहना की तथा प्रशासनिक कार्यों में हिंदी की अधिकाधिक उपयोगिता पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता सदस्यों को प्रमाण–पत्र व पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए प्रोत्साहित किया गया।

कोलकाता केंद्र पर हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं व पुरस्कार विजेता निम्न प्रकार हैं:–

1) हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

श्री अतुल कुमार – प्रथम पुरस्कार
सुश्री उमामा नसरीन हक – द्वितीय पुरस्कार
सुश्री श्राबनी मंडल – तृतीय पुरस्कार

2) कविता पाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

श्री रामकृष्ण दास – प्रथम पुरस्कार
सुश्री उपासना आचार्य – द्वितीय पुरस्कार
सुश्री जैनब ईमाम – तृतीय पुरस्कार

3) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

श्री अतुल कुमार – प्रथम पुरस्कार
श्री तन्मय रॉय – प्रथम पुरस्कार
सुश्री जैनब ईमाम – तृतीय पुरस्कार

4) हिंदी तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

श्री अतुल कुमार – प्रथम पुरस्कार
सुश्री जैनब ईमाम – द्वितीय पुरस्कार
सुश्री ओमश्री मजूमदार – तृतीय पुरस्कार

"हिन्दी पखवाड़ा"

"हिन्दी पखवाड़ा"

"हिन्दी पखवाड़ा"

"हिन्दी पखवाड़ा"

"हिन्दी पखवाड़ा"

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र
एनआईसी - राजभाषा विभाग

हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग

1. यूनिकोड क्या है?

सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि यूनिकोड क्या है? क्या यूनिकोड कोई फोंट है? क्या यूनिकोड कोई टंकण का टूल है? या यूनिकोड कोई हिंदी अथवा भारतीय भाषाओं में टंकण करने का तरीका है?

यूनिकोड एक टेक्नोलॉजी मानक है। यूनिकोड मानक में विश्व स्तर पर एवं प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए यूनिक कोड प्रदान किया गया है।

यूनिकोड (Unicode) प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड मानक को एप्पल, एच. पी., आई.बी.एम., माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड आई.एस.ओ./आई.ई.सी.10646(ISO/IEC 10646) एक अंतरराष्ट्रीय मानक है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में उपलब्ध है।

यूनिकोड 10.0 वर्जन में कुल 136,690 वर्णों को जोड़ा गया है, कुल 139 स्क्रिप्ट।

भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड एनकोडिंग के लिए UTF–8 का प्रयोग होता है।

2. यूनिकोड क्यों?

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग हेतु टेक्स्ट के निरूपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग हेतु यूनिकोड है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100 प्रतिशत कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे – वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वेबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान तथा हिंदी की–वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

राजभाषा विभाग ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालय को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निदेश दिया है। परंतु, कंप्यूटर परिचालन से संबंधित छोटी–छोटी जानकारी के अभाव में कई केंद्रीय कार्यालय इस निःशुल्क सुविधा की जगह विभिन्न प्रकार के फोंट और बहुभाषी सॉफ्टवेयरों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे सूचना हस्तांतरण में तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस कारण हिंदी की फाइलों को, अंग्रेजी की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर, आदान–प्रदान (transfer) नहीं कर पाते हैं। हिंदी पाठ को दूसरे सॉफ्टवेयर में जोड़ने (paste) में भी समस्या आती है। अतः सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय/उपक्रम/सरकारी बैंक केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें। यूनिकोड एनकोडिंग को install/use करना बहुत आसान है। इसकी जानकारी राजभाषा विभाग की साइट (http://hindietools.nic.in) पर भी उपलब्ध है।

यूनिकोड मानक के नवीनतम इलेक्ट्रॉनिक वर्जन यूनिकोड साइट www.unicode.org, पर मिल सकते हैं। यूनिकोड कंसोर्शियम के प्रकाशनों में यूनिकोड मानक के साथ इसके अनुलग्नक और वर्ण शामिल हैं http://www.unicode.org/ucd/

3. यूनिकोड का महत्व तथा लाभ

- एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के टैक्सट लिखे जा सकते हैं।
- किसी सॉफ्टवेयर–उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती।

4. देवनागरी यूनिकोड

- देवनागरी यूनिकोड की (रेंज) 0900 से 097F तक है। (दोनों संख्याएं षोडषाधारी हैं)
- क्ष, त्र एवं ज्ञ के लिए अलग से कोड नहीं है। इन्हें संयुक्त वर्ण मानकर अन्य संयुक्त वर्णों की भांति इनका अलग से कोड नहीं दिया गया है।
- इस रेंज में बहुत से ऐसे वर्णों के लिए भी कोड दिए गए हैं जो सामान्यतः हिन्दी में व्यवहृत नहीं होते। किन्तु मराठी, सिन्धी, मलयालम आदि को देवनागरी में सम्यक ढंग से लिखने के लिए आवश्यक हैं।
- नुक्ता के लिए भी अलग से एक कोड दे दिया गया है। अतः नुक्तायुक्त अक्षर यूनिकोड की दृष्टि से दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं – एक बाइट यूनिकोड के रूप में या दो बाइट यूनिकोड के रूप में। उदाहरण के लिए ज को 'ज' के बाद नुक्ता (.) टाइप करके भी लिखा जा सकता है।

UTF–8, UTF–16, UTF–32 क्या है?

- यूनिकोड का मतलब है सभी लिपि चिह्नों की आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम 'एक समान मानकीकृत कोड'।
- पहले सोचा गया था कि केवल 16 बिट के माध्यम से ही दुनिया के सभी लिपि चिह्नों के लिए अलग–अलग कोड प्रदान किए जा सकेंगे। बाद में पता चला कि यह कम है। फिर इसे 32 बिट कर दिया गया। अर्थात इस समय दुनिया का कोई संकेत नहीं है जिसे 32 बिट के कोड में कहीं न कहीं जगह न मिल गई हो।
- यूनिकोड के तीन रूप प्रचलित हैं – UTF–8, UTF–16 और UTF–32
- इनमें अन्तर क्या है? मान लीजिए आपके पास दस पेज का कोई टेक्स्ट है जिसमें रोमन, देवनागरी, अरबी, गणित के चिह्न आदि बहुत कुछ हैं। इन चिह्नों के यूनिकोड कोड अलग–अलग होंगे। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि कुछ संकेतों के 32 बिट के यूनिकोड में शुरू में शून्य ही शून्य हैं (जैसे अंग्रेजी के संकेतों के लिए)। यदि शुरुआती शून्यों को हटा दिया जाए तो इन्हें केवल 8 बिट के द्वारा भी निरूपित किया जा सकता है और कहीं कोई भ्रम या टकराव नहीं होगा। इसी तरह रूसी, अरबी, हिब्रू आदि के यूनिकोड ऐसे हैं कि शून्य को छोड़ देने पर उन्हें प्रायः 16 बिट = 2 बाइट से निरूपित किया जा सकता है। देवनागरी, जापानी, चीनी आदि को आरम्भिक शून्य हटाने के बाद प्रायः 24 बिट = तीन बाइट से निरूपित किया जा सकता है। किन्तु बहुत से संकेत होंगे जिनमें आरम्भिक शून्य नहीं होंगे और उन्हें निरूपित करने के लिए चार बाइट ही लगेंगे।
- लगभग स्पष्ट है कि प्रायः UTF–8 में इनकोडिंग करने से UTF–16 की अपेक्षा कम बिट्स लगेंगे।
- इसके अलावा बहुत से पुराने सिस्टम 16 बिट को हैंडिल करने में अक्षम थे। वे एक बार में केवल 8–बिट के साथ ही काम कर सकते थे। इस कारण भी UTF–8 को अधिक अपनाया गया। यह अधिक प्रयोग में आता है।
- UTF–16 और UTF–32 के पक्ष में अच्छाई यह है कि अब कम्प्यूटरों का हार्डवेयर 32 बिट या 64 बिट का हो गया है। इस कारण UTF–8 की फाइलों को 'प्रोसेस' करने में UTF–16, UTF–32 वाली फाइलों की अपेक्षा अधिक समय लगेगा।

कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए 3 कीबोर्ड विकल्प हैं:–

- इंस्क्रिप्ट
- रेमिंग्टन
- फोनेटिक

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास www.ildc.in

भाषा तकनीकी में विकसित उपकरणों को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रावधान के अंतर्गत www.ildc.gov.in तथा www.ildc.in वेबसाइटों के द्वारा व्यवस्था की गई है।

इन उपकरणों एवं सेवाओं में मुख्य हैं –

फॉन्ट, कोड परिवर्तक, वर्तनी संशोधक, ओपन ऑफिस, मैसेंजर, ई–मेल क्लायंट, ओ सी आर, शब्दकोश, ब्राउजर, ट्रांसलिटरेशन, कॉर्पोरा, शब्द–संसाधक

कीबोर्ड विकल्प/सक्रिय कैसे करें?

1. इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड ले–आउट

इंस्क्रिप्ट में टंकण सीखना बहुत आसान है। इंस्क्रिप्ट ले–आउट भारत सरकार का मानक होने की वजह से सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में डिफाल्ट में, यानि पहले से मौजूद रहता है। साथ ही किसी भी एक भाषा में इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड सीखने पर, सभी भारतीय भाषाओं में आसानी से टंकण कर सकते हैं।

विंडोज आधारित कंप्यूटरों में सक्रिय करने के लिए

Go to Start-> Control Panel > Regional & Language Options > Click on Keyboard and Languages Tab > Click on Change Keyboards > Add Devnagari – INSCRIPT keyboard layout for Hindi

Inscript Typing Tutor डाउनलोड करने के लिए http://ildc.in/htm/ck&kbd.htm इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Inscript Typing Tool डाउनलोड करने के लिए http://ildc.in इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

विंडोज 8.1 के लिए सेटिंग

विंडोज 8.1 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

विंडोज 10 के लिए सेटिंग

विंडोज 10 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Search >> Region and Language Setting >> Advanced Keyboard Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

2. फोनेटिक/रोमन कीबोर्ड

फोनेटिक कीबोर्ड में, हिंदी टंकण से अनभिज्ञ अधिकारी, रोमन स्क्रिप्ट का उपयोग करते हुए, हिंदी में आसानी से टंकण कर सकते हैं।

यह स्वाराधारित कीबोर्ड है। इस कीबोर्ड में रोमन स्क्रिप्ट में टाइप करना है। **टाइप करते समय विशेष** – सभी पूरे व्यंजन के बाद ' टाइप करें, जिस व्यंजन को आधा बनाना है या मात्रा का प्रयोग करना है, व्यंजन के बाद ' टाइप नहीं करना है।

विंडोज आधारित कंप्यूटरों के लिए डाउनलोड लिंक

माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल (ILIT)

https://www.microsoft.com/en-in/bhashaindia/downloads.aspx - **Microsoft Tool**

यदि विंडोज 10 ऑपरेटिंग सिस्टम में .Net Framework 3.5 की समस्या आए तो पहले -Net Framework 3.5 को डाउनलोड करके इंस्टाल करें। यह सॉफ्टवेयर आप निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। इस पैकेज को ऑफलाइन एवं ऑनलाइन दोनों वर्जन में डाउनलोड कर सकते हैं।

https://www.microsoft.com/en.in/download/details.aspx?id=25150 - Download Link

विंडोज 8.1 के लिए सेटिंग

विंडोज 8.1 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

विंडोज 10 के लिए सेटिंग

विंडोज 10 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Search >> Region and Language Setting >> Advanced Keyboard Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

3. रेमिंग्टन कीबोर्ड ले–आउट

रेमिंग्टन कीबोर्ड पूर्व से प्रचलित मैनुअल टाइपराइटर की तरह है।

विंडोज आधारित कंप्यूटरों के लिए डाउनलोड लिंक

https://www.microsoft.com/en-in/bhashaindia/downloads.aspx साइट से Indic Input 3 (32 bit तथा 64 bit OS) के लिए डाउनलोड किया जा सकता है

विंडोज 8.1 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

Setting for Windows 10

विंडोज 10 में अपनी आवश्यकतानुसार फोनेटिक या रेमिंग्टन या इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट इंस्टाल करें

इंस्टाल करने के पश्चात

Search >> Region and Language Setting >> Advanced Keyboard Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

> **राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।**
>
> **– अनंत गोपाल शेवड़े**

सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई

संस्थान को जब समग्र रूप से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि उसके समस्त सदस्य जो उसकी गतिविधियों को मूर्त रूप देने में अपना योगदान देते हैं, उसके साझीदार, उसकी इमारत, स्थान आदि सब मिलाकर इसकी पहचान है। एक इकाई के रूप में परिवार की उन्नति की परिधि में उस परिवार के सदस्यों की मुख्य भूमिका रहती है। आज आईआईएफटी अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक है जिसका श्रेय इसके परिवार के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों अर्थात छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। वर्ष 2019–20 के दौरान इस परिवार के कुछ सदस्य अपना सेवाकाल पूरा करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में अपना योगदान दिया है। हम सभी इन सदस्यों के समृद्ध व मंगलमय जीवन की कामना करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

सेवानिवृत्त संस्थान सदस्य

श्री प्रदीप कुमार खन्ना
अनुभाग अधिकारी
01.08.1983 – 30.06.2019

श्री अशोक कुमार चोपड़ा
वरिष्ठ निजी सहायक
29.09.1982 – 30.09.2019

श्री भोपाल सिंह
सहायक
06.12.1983 – 30.09.2019

श्री चिरंजी लाल
अनुभाग अधिकारी
10.08.1987 – 30.11.2019

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

सरल हिंदी वाक्य एवं टिप्पणियाँ

Sl. No.	English Sentence	हिंदी वाक्य
1.	A brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे प्रस्तुत है।
2.	Adequate safety measures should be taken while doing online transactions.	ऑनलाइन लेन–देन करते समय पर्याप्त सावधानी बरतनी चाहिए।
3.	Advance can be granted.	अग्रिम दिया जा सकता है।
4.	All concerned to note	सभी संबंधित व्यक्ति नोट कर लें।
5.	Appendix to this note may be seen.	इस नोट का परिशिष्ट देख लिया जाए।
6.	Apprise me the position	मुझे स्थिति से अवगत कराएं/बताएं।
7.	Appropriate action may be taken as per rule.	नियमानुसार उपयुक्त कार्रवाई की जाए।
8.	Approved as proposed	प्रस्ताव के अनुसार अनुमोदित।
9.	As amended	यथा संशोधित।
10.	A superannuation pension shall be granted to a Government servant who is retired on his attaining the age of superannuation.	अधिवर्षिता पेंशन किसी ऐसे सरकारी सेवक को दी जाएगी जो अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करने पर सेवानिवृत्त होता है।
11.	Bilateral cooperation between India and Russia has been strengthened.	भारत और रुस के बीच द्विपक्षीय सहयोग सुदृढ़ हुआ है।
12.	Clarification sought from concerned section has been received and placed in the file.	संबंधित विभाग से मांगा गया स्पष्टीरकरण प्राप्त हो गया है और फाईल में लगा दिया गया है।
13.	Concurrence of.....may be obtained	.....की सहमति प्राप्त की जाए।
14.	Death gratuity and retirement gratuity and commuted value of the pension are fully exempted from Income tax.	मृत्यु उपदान और सेवानिवृत्ति उपदान और पेंशन की संराशीकृत राशि आय कर से पूरी तरह से मुक्त हैं ।
15.	Delay may be explained.	विलम्ब का कारण बताया जाए।
16.	Delay regretted	विलम्ब के लिए खेद है।

17.	Department has developed data bank in its institute.	विभाग ने अपने संस्थान में डाटा बैंक स्थापित किया है।
18.	Developed economies have moved non-tariff barrier	विकसित देशों ने गैर–शुल्क अवरोध लगा रखे हैं।
19.	Discrepancies and shortcomings are communicated to the concerned authorities for taking remedial measures.	विसंगतियों और कमियों की सूचना सुधारात्मक उपाय करने के लिए संबंधित अधिकारियों को दी जाती है।
20.	Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें।
21.	Draft for approval please.	मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत।
22.	Draft reply is put up	उत्तर का मसौदा प्रस्तुत है।
23.	Encashment of leave is not a pensionary benefit	छुट्टी के नकदीकरण का लाभ पेंशन संबंधी लाभ नहीं है।
24.	Ethical clearance may be called before the sanction of the project.	परियोजना की मंजूरी से पहले सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त की जाए।
25.	Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें।
26.	Expedite action in this matter is solicitated.	इस मामले में शीघ्र कार्रवाई की अपेक्षा है।
27.	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
28.	Files in this Department are submitted through e-office.	इस विभाग में फाइलें ई–ऑफिस के माध्यम से प्रस्तुत की जाती हैं।
29.	Finance division has raised query regarding compliance.	वित्तीय प्रभाग ने अनुपालन के संबंध में प्रश्न उठाया है।
30.	Financial concurrence for the workshop may be obtained.	कार्यशाला के लिए वित्तीय सहमति प्राप्त की जाए।
31.	Fix a date for meeting.	बैठक के लिए कोई तारीख निश्चित करें।
32.	For kind perusal	अवलोकन हेतु प्रस्तुत।
33.	For reconsideration please	कृपया फिर से विचार के लिए।
34.	For signature please.	हस्ताक्षर के लिए।
35.	For sympathetic consideration.	सहानुभुतिपूर्ण विचार के लिए।
36.	From pre-page	पिछले पृष्ठ से।
37.	Fund has been released by the department.	विभाग द्वारा निधि जारी की गई है।
38.	Further action not necessary	आगे कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं है ।
39.	Give top priority to this	इसे सबसे पहले करें।
40.	I agree	मैं सहमत हूँ।
41.	I agree with the above proposal.	मैं उपर्युक्त प्रस्ताव से सहमत हूँ।
42.	Imposition of Countervailing Duties	प्रतिकारी शुल्क लगाना।
43.	Information is being collected and will be furnished soon.	सूचना एकत्र की जा रही है और आपको शीघ्र ही भेज दी जाएगी।

44.	Initiate action	कार्रवाई शुरू करें।
45.	Intellectual Property Rights	बौद्धिक सम्पदा अधिकार।
46.	Interest has been accrued on loan.	ऋण पर ब्याज उपचयित हो गया है।
47.	Keep pending	इसे रोके रखें/लंबित रखें।
48.	Kindly confirm	कृपया पुष्टि करें।
49.	Let me know	मुझे बताएं।
50.	Look into the matter	मामले को देखें।
51.	Madam/Sir	महोदया/महोदय।
52.	Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है।
53.	May treated as urgent.	इसे अत्यावश्यक समझा जाए।
54.	May be filed	फाईल कर दिया जाए।
55.	Memorandum of Agreement (MoA) has been terminated till further orders.	समझौता ज्ञापन को अगले आदेशों तक समाप्त कर दिया गया है।
56.	Memorandum of Understanding (MoU) between Department of Commerce and IIFT has been signed.	वाणिज्य विभाग व आईआईएफटी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
57.	Minutes of the meeting	बैठक का कार्यवृत्त।
58.	Needful be done	आवश्यक कार्रवाही की जाए।
59.	Noted, thanks	नोट कर लिया, धन्यवाद।
60.	Nothing better than planting a tree, to make environment pollution-free.	प्रदूषण मुक्ति का उपाय, अधिक से अधिक पेड़ लगाएं।
61.	Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें।
62.	Order may be issued	आदेश जारी करें।
63.	Pending cases be disposed off early.	लंबित मामले शीघ्र निपटाए जाएं।
64.	Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें।
65.	Please confirm (position)	कृपया (स्थिति की) पुष्टि करें।
66.	Please discuss	चर्चा कीजिए।
67.	Please examine	कृपया जांच करें।
68.	Please expedite	कृपया जल्दी करें।
69.	Please expedite compliance	शीघ्र अनुपालन किया जाए।
70.	Please find attached herewith a revised proposal incorporating the needful changes.	अपेक्षित संशोधनों को समाहित करते हुए संशोधित प्रस्ताव संलग्न है।
71.	Please open a Current Account.	कृपया चालू खाता खोलें।
72.	Please put up draft reply	कृपया उत्तर का मसौदा पेश करें।
73.	Please put up the file as modified.	कृपया यथासंशोधित फाईल प्रस्तुत करें।

74.	Please see me	कृपया मुझसे मिलें।
75.	Please speak	बात कीजिए।
76.	Program of Cooperation has been signed.	सहयोग कार्यक्रम पर हस्ताक्षर कर दिए गए हैं।
77.	Proposal is in order	प्रस्ताव नियम संगत है।
78.	Put up reference	संदर्भ प्रस्तुत करें।
79.	Put up a summary	सारांश प्रस्तुत करें।
80.	Reduce, Reuse and Recycle. Follow these three Rs.	तीन महामंत्रों का अनुपालन करें – कमतर उपयोग, पुनः उपयोग तथा पुनर्चक्रण।
81.	Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए।
82.	Say no to plastic Bags. Carry a cloth bag.	प्लास्टिक थैलियों की जगह कपड़े की थैली का उपयोग करें।
83.	Seen, thanks	देखा/देख लिया, धन्यवाद।
84.	Submitted for consideration	विचार के लिए प्रस्तुत।
85.	Submitted for information	सूचना के लिए प्रस्तुत है।
86.	Summary of the case may be put up.	इस मामले का सार प्रस्तुत किया जाए।
87.	Switch off lights, fans, and other appliances when leaving a room.	कमरा छोड़ें तब, लाइट–पंखे बंद हों जब।
88.	The date of voluntary retirement is treated as duty.	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति वाला दिन कार्यदिवस माना जाता है।
89.	The desired document has been received and file is under process.	अपेक्षित दस्तावेज प्राप्त हो गया है और मिसिल प्रक्रियाधीन है।
90.	The gradation list of the staff is enclosed for ready reference	स्टाफ की पदक्रम सूची तत्काल संदर्भ के लिए संलग्न है।
91.	The proposal is submitted for perusal.	प्रस्ताव अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।
92.	The re-appropriation was done to meet the urgent requirement of funds.	निधियों की तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पुनर्समायोजन किया गया।
93.	The relevant file is placed below	संबंधित फाईल नीचे रखी है ।
94.	The scheme has been approved by competent authority.	सक्षम प्राधिकारी ने इस योजना का अनुमोदन कर दिया है।
95.	There is a grievance redressal mechanism in each and every office.	प्रत्येक कार्यालय में शिकायत निवारण तंत्र बनाया गया है।
96.	There was no firm evidence to support the case.	मामले के पक्ष में कोई ठोस सबूत नहीं था।
97.	These figures are provisional.	ये आंकड़े अनन्तिम हैं।
98.	This contract will be terminated soon.	यह संविदा शीघ्र समाप्त हो जाएगी।
99.	This information is authentic.	यह सूचना प्रामाणित है।
100.	This matter has been referred to the concerned department.	यह मामला संबंधित विभाग को भेज दिया गया है।

101.	This matter needs the approval of Competent authority	इस मामले में सक्षम प्राधिकारी का अनुमोदन अपेक्षित है।
102.	Through proper channel	उचित माध्यम द्वारा।
103.	Total Sanctioned Amount has been released.	कुल संस्वीकृत राशि जारी कर दी गई है।
104.	Total Release amount has been sanctioned.	जारी की जाने वाली कुल राशि की स्वीकृति दे दी गई है।
105.	Under process	कार्रवाई की जा रही है।
106.	Unnecessary requirements have been done away with.	अनावश्यक अपेक्षाएं समाप्त कर दी गई हैं।
107.	Verified and found correct	जांच की और सही पाया।
108.	We agree with 'A' above	ऊपर 'क' से हम सहमत हैं।
109.	We have no further comments	हमें और कुछ नहीं कहना है।
110.	What is the position	क्या स्थिति है।
111.	Without further delay	बिना और किसी देरी के।
112.	With regards	सादर।
113.	Yours faithfully	भवदीय।
114.	Yours sincerely	आपका।

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है।

– छविनाथ पांडेय

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्य

1.	प्रोफेसर मनोज पंत, निदेशक एवं अध्यक्ष, वि.रा.भा.का. समिति	अध्यक्ष
2.	डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
3.	श्री गौरव गुलाटी, उप–कुलसचिव (स्थानापन्न)	सदस्य
4.	श्री बिमल पंडा, प्रणाली प्रबंधक	सदस्य
5.	डॉ. आर.पी. शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर – कोलकाता सेंटर	सदस्य
6.	डॉ. रोहित मेहतानी, प्रोफेसर एवं प्रमुख, निगमित संबंध एवं नियोजन विभाग	सदस्य
7.	श्री पीताम्बर बेहेरा, उप–वित्त अधिकारी	सदस्य
8.	श्री भुवन चन्द्र, उप–कुलसचिव (स्थानापन्न)	सदस्य
9.	श्रीमती नलिनी मेशराम, सहायक कुलसचिव	सदस्य
10.	प्रतिनिधि, वाणिज्य मंत्रालय	सदस्य
11.	प्रतिनिधि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय	सदस्य
12.	श्रीमती अमीता आनंद, सहायक पुस्तकालयाध्यक्षा	सदस्य
13.	श्रीमती कविता शर्मा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
14.	श्रीमती सुमीता मारवाह, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
15.	श्रीमती ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
16.	श्रीमती मोहनी मदान, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
17.	श्री द्वैपायन आश, अनुभाग अधिकारी – कोलकाता सेंटर	सदस्य
18.	श्री गौरव गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
19.	श्री करूण दुग्गल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
20.	श्री राकेश कुमार ओझा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
21.	श्री जितेंद्र सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
22.	सुश्री गगन अरोड़ा, अनुभाग प्रभारी	सदस्य
23.	श्री राजेन्द्र प्रसाद, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

दिल्ली परिसर
आईआईएफटी भवन, बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110016
फोनः 011–39147200 – 205 (पीबीएक्स), फैक्सः 91–011–39147301

कोलकाता परिसर
1583, मदुरदाहा, चौबाघा मार्ग, वार्ड नं. 108, बरो XII, कोलकाता–700107
फोनः 033–24195700 / 5900 (पीबीएक्स), फैक्सः 91–033–24432454

Website: www.iift.edu